रचना-तत्त्व

(प्रथम भाग)

लेखक—
त्रिवेणी प्रसाद, बी.ए.,
भूतपूर्व सम्पादक 'चाँद' तथा 'भविष्य'

भारत मन्दिर, आरा।

[मूल्य दस आना

व्यवस्थापिका
श्रीमती रामदुलारी देवी

प्रथम संस्करण १०००

मुद्रक
बाबू देवेन्द्र किशोर जैन,
श्रीसरस्वती प्रिंटिङ्ग वर्क्स लि०, आगरा

विज्ञप्ति

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य है, हिन्दी का अध्ययन करनेवालों के आगे हिन्दी रचना संबंधी मुख्य मुख्य बातों को रखना। यह आशा की जाती है कि पुस्तक मिडिल से लेकर बी०ए० तक के विद्यार्थियों के काम की चीज़ होगी। और यह भी आशा है कि इसकी उपयोगिता स्कूल-कालेजों के विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि हिन्दी का अध्ययन करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति इससे लाभ उठा सकेगा। पुस्तक का निबंध भाग अलग प्रकाशित होगा।

सहायक पुस्तकों की सूची देने के पहले यह बतलाना आवश्यक है कि पं० कामता प्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' से काफी सहायता ली गई है। जहाँ आवश्यक समझा गया है, वहाँ उनके शब्द ज्यों के त्यों रख दिये गये हैं। ऐसा करने में लेखक ने संकोच नहीं किया हैं, क्योंकि उसके आगे पाठकों के लाभ का सवाल सबसे पहला है। हाँ, यथास्थान इस बात का उल्लेख न कर सकने के लिए लेखक क्षमाप्रार्थी है।

अन्य सहायक पुस्तकें

(१) हिन्दी शब्दसागर ··· बाबू श्यामसुन्दर दास बी०ए०
(२) संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर ··· बाबू रामचन्द्र वर्म्मा
(३) रचना नवनीत ··· श्रीरामलोचन शरण
(४) एलेमेंटरी संस्कृत ग्रामर ··· जी० थिबाउट, सी०आई०ई०
तथा
पंडित महुवल्लभ शास्त्री

लेखक उपर्युक्त ग्रंथों के रचयिताओं का आभारी है। —लेखक

विषय-सूची

शब्द-प्रकरण

प्रथम परिच्छेद

द्वितीय परिच्छेद

तृतीय परिच्छेद

कुछ विशेष नियम

वाक्य प्रकरण

चतुर्थ परिच्छेद

पंचम परिच्छेद

वाक्य सम्बन्धी नियम

षष्ठ परिच्छेद

रचना-तत्त्व

प्रथम परिच्छेद

शब्द प्रकरण

१—ह्रस्व और दीर्घ*

ह्रस्व का उच्चारण हल्का होता है; जैसे, कपिल। यहाँ 'पि' में अधिक ज़ोर नहीं लगता। किन्तु यदि 'कपील' लिखा जाय तो 'पी' का उच्चारण ठीक वैसा ही होगा जैसा कि 'महावीर' में 'वी' का होता है।

इसी प्रकार 'पुल' में 'पु' का उच्चारण हल्का होता है। यदि 'पूल' लिखें तो 'पू' का उच्चारण ठीक वैसा ही होगा जैसा कि 'कसूर' में 'सू' का है। अतः शुद्ध उच्चारण पर ध्यान रख कर लिखने से ह्रस्व दीर्घ संबंधी भूल होने की संभावना नहीं रहती। यहाँ ह्रस्व-

---

* यहाँ ह्रस्व से इ, उ के चिह्न 'ि' 'ु' तथा दीर्घ से ई, ऊ के चिह्न 'ी' 'ू' का तात्पर्य है।

† ये सभी नियम समान रूप से व्यापक नहीं हैं। ह्रस्व और दीर्घ का यथार्थ ज्ञान अभ्यास से ही होता है।

दीर्घ संबंधी कुछ नियम दिये जाते हैं :—

(१) संयुक्तवर्ण के पहले के वर्ण में ह्रस्व इ, उ, लगाया जाता है; जैसे, सिक्त, खिन्न, विभक्त, प्रतिपन्न, कुन्तल, सुप्त, शुद्ध, इत्यादि। अपवाद—सूक्त, शून्य, आदि।

(२) यदि अन्तिम वर्ण हलन्त हो या हलन्त के समान उच्चारणवाला हो तो, उसके पहले के वर्ण में साधारणत: ह्रस्व लगता है; जैसे, स्वामिन्, मालिन, पतित, पालित, इत्यादि।

(३) संस्कृत के स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में 'का' हो तो 'का' के पहले का वर्ण ह्रस्व होता है; जैसे, मालिका, पालिका, बालुका, इत्यादि।

(४) हिन्दी शब्दों में 'यों' और 'याँ' प्रत्यय लगा कर किसी शब्द का बहुवचन बनाने पर, प्रत्यय के पहले का दीर्घवर्ण ह्रस्व हो जाता है,—जैसे, माली—मालियों, स्त्री—स्त्रियाँ, बीबी—बीबियाँ, इत्यादि।

(५) किसी हिन्दी शब्द का अन्तिम वर्ण 'या' हो तो, 'या' के पहले का वर्ण ह्रस्व होगा; जैसे, बहेलिया, पलटनिया, मलिया, संखिया, इत्यादि। अपवाद—दीया, आदि।

(६) कुछ अकर्मक धातुओं को सकर्मक बनाने के लिये ह्रस्व को दीर्घ कर देते हैं; जैसे—पिटना-पीटना, पिसना-पीसना, दिखना-दीखना, लुटना-लूटना, इत्यादि।

नीचे कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं जिनमें ह्रस्व इ और दीर्घ ईकार के फेर से अर्थ में भी अन्तर हो जाता है :—

अभि = (उपसर्ग) अभी (क्रिया विशेषण) इसी क्षण

अरि = शत्रु	अरी=संबोधनार्थक अव्यय
अलि = भौंरा	अली*=सखी
अलिक = ललाट	अलीक=झूठा
अवधि = सीमा	अवधी=अवध संबंधी, अवध की बोली।
आदि = प्रथम, आरम्भ।	आदी=अभ्यस्त
आधि = मानसिक व्यथा	आधी=(आधा का स्त्री०)
इति = (समाप्ति सूचक अव्यय)	ईति=खेती को हानि पहुंचानेवाले उपद्रव।
कपि = बन्दर	कपी=घिरनी
कपिश = पीला रंग	कपीश=वानरों का राजा
कलि = चौथा युग	कली=बिना खिला फूल
कलिल = मिश्रित	कलील=थोड़ा
किलक = हर्षध्वनि	कीलक=मंत्र का मध्य भाग; वह मंत्र जिससे अन्य मंत्र का प्रभाव नष्ट किया जाय।
किला=गढ़	कीला=काँटा, खूँटा।
कृति=कार्य्य, रचना।	कृती=निपुण, पुण्यात्मा।
कैरवि=चन्द्रमा	कैरवी=चाँदनी रात
खादि=भक्ष्य, कवच।	खादी=मोटा देशी कपड़ा, विशेषतः चर्खे के सूते का।
गिरि=पहाड़	गिरी=बीज के भीतर का गूदा

* इसका शुद्ध रूप 'आली' है।

गिला=उलाहना, शिकायत।	गीला=भीगा हुआ
गुप्ति=छिपाने की क्रिया	गुप्ती=वह छड़ी जिसके भीतर किरच हो।
चरि=पशु	चरी=वह ज़मीन जो पशुओं के चरने के लिए छोड़ दी जाती है।
चिता=शवदाह के लिये लगाया हुआ लकड़ियों का ढेर।	चीता=बाघ के समान एक छोटा हिंसक जन्तु।
चिर=बहुत दिन, सदा।	चीर=वस्त्र
जिन=जैनों के तीर्थंकर; प्रेत।	जीन=घोड़े की काठी
तरणि=सूर्य्य	तरणी=नौका
तरि=नौका	तरी=नौका, गीलापन, शीतलता।
दिन=सूर्य्योदय से सूर्य्यास्त तक का समय।	दीन=ग़रीब, आत्मगौरव शून्य।
द्विप=हाथी	द्वीप=टापू
द्रोणि=द्रोण का पुत्र	द्रोणी=डोंगी; दो पर्वतों के बीच की भूमि।
नित=प्रतिदिन	नीत=लाया हुआ, प्राप्त।
नियत=परिमित, संयत, स्थिर।	नीयत=भावना, उद्देश्य।
नियति=अवश्य होनेवाली बात	नियती=दुर्गा
निवार=जमवट, पलंग की पट्टी।	नीवार=एक प्रकार का चावल
नेति=(न+इति) इति नहीं है, अंत नहीं है।	नेती=मथानी की रस्सी

परिक्षा—कीचड़	परीक्षा = जाँच, इम्तहान।
परिवार=कुनबा, कुटुम्ब, म्यान।	परीवार=म्यान
पालि=कान के पुट के नीचे का मुलायम चमड़ा।	पाली=प्राकृत भाषा का एक रूप
पिक=कोयल	पीक=पान के रंग से रँगा हुआ थूक।
बलि=उपहार, भेंट, देवता का भाग।	बली = बलवान
भंगि=टेढ़ाई, लहर।	भंगी=नष्ट होने वाला, भंग करने वाला, मेहतर।
भिड़=बर्रें	भीड़ = जनसमूह
मणि=बहुमूल्य रत्न	मणी=सर्प
मरीचि=किरण	मरीची = सूर्य, चन्द्रमा।
यति=सन्यासी, विराम।	यती=रुकावट, छंदों में विराम का स्थान।
रक्षि=बचानेवाला, पहरेदार।	रक्षी=राक्षसों का उपासक, पहरे-दार, रक्षक।
रोहि-वृक्ष, बीज।	रोही—चढ़नेवाला
वादि=विद्वान्	वादी=बोलनेवाला, फरियादी।
वारिश = विष्णु	वारीश-समुद्र
विकाश=वृद्धि	वीकाश=निर्जन, प्रकाश।
शित=दुर्बल, पतला।	शीत=ठंढा, सर्द।
शिरा=रक्त की छोटी नाड़ी	शीरा=चाशनी
सिड़=पागलपन	सीड़=नमी, सील।

सिता=चीनी — सीता=वह रेखा जो हल की फाल धँसने से ज़मीन पर बनती है; रामचन्द्र की स्त्री।

सर=मस्तक — सीर=हल; वह ज़मीन जिसे ज़मींदार स्वयं जोतता हो; वह ज़मीन जिसकी उपज कई हिस्सेदारों में बँटती हो।

सुधि=स्मरण — सुधा=विधान

सूति=जन्म, प्रसव। — सूती—सूत का बना हुआ

नीचे के अपवाद स्वरूप शब्दों के अर्थ ह्रस्व और दीर्घ दोनों रूपों में समान होते हैं :—

अंचलि, अंचली=अञ्चल

अंजलि, अंजली=दोनों हथेलियों को मिला कर बनाया हुआ संपुट।

अवनि, अवनी=पृथ्वी

आगामि, आगामी—आनेवाला

आवलि, आवली=पंक्ति, श्रेणी।

ओषधि, ओषधी=दवा

ऊर्मि, ऊर्मी=लहर, तरंग।

काञ्चि, काञ्ची=मेखला, करधनी।

क्षोणि, क्षोणी=पृथ्वी

धरणि, धरणी=पृथ्वी

निरस, नीरस=सूखा, रसहीन ।

निहार, नीहार=बर्फ, पाला ।

प्रतिकार, प्रतीकार=बदला; किसी बात का उचित उपाय ।

पाटलि, पाटली,=पाडर का वृक्ष; पांडुफली ।

महि, मही=पृथ्वी

यष्टि, यष्टी=माला

राजि, राजी=पंक्ति

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय=राष्ट्र सम्बन्धी

वसति, वसती=वासस्थान

व्यतिपात, व्यतीपात=बहुत बड़ा उत्पात; अपमान ।

व्यतिहार, व्यतीहार=परिवर्त्तन, मारपीट, बदला ।

* विचि, विची, वीचि वीची=तरंग, लहर ।

वेदि, वेदी=धार्म्मिक कार्य्य के लिए तैयार की हुई ऊँची भूमि ।

शचि, शची=इन्द्र की स्त्री

शिखि, शिखी=मयूर

श्रेणि, श्रेणी=पंक्ति

श्रोणि, श्रोणी=कमर, नितंब ।

सुरभि, सुरभी=सुगंधि, गौ, पृथ्वी ।

नीचे के शब्दों में ह्रस्व उ और दीर्घ ऊ के फेर से अर्थ में अन्तर हो जाता है :—

अमुक=फलाँ   अमूक=जो गूँगा न हो

---

* प्रयोग में वीचि वा वीची का ही व्यवहार देखा जाता है ।

उरु=विस्तीर्ण	ऊरु=जंघा
कुच=स्तन	कूच=रवानगी, प्रस्थान ।
कुरता=कमीज की तरह का एक पहनावा ।	क्रूरता=निर्दयता
कुल=वंश, सब ।	कूल=किनारा
च्युत=गिरा हुआ	च्यूत=आम के वृक्ष का फल(आम)
तुला=तराजू	तूला=कपास
दारु=लकड़ी	दारू=शराब
दुर=(उपसर्ग)	दूर=(पास का उल्टा)
पुर=नगर	पूर=बाढ़
फुट=अकेला; जिसका जोड़ न हो।	फूट=अनबन, वैर ।
बुरा=खराब	बूरा=शक्कर
रुख=मुँह, चेहरा ।	रूख=पेड़
लुक=वार्निश, रौगन ।	लूक=अग्नि की ज्वाला
सुकर=सहज में होनेवाला	सूकर=सूअर
सुरमा=एक खनिज पदार्थ जो आँखों मे लगाया जाता है ।	सूरमा=वीर, योद्धा ।

नीचे लिखे शब्दों के ह्रस्व या दीर्घ ऊकार दोनों रूपों में समान अर्थ होते है :—

उषा, ऊषा=अरुणोदय

जंबु, जंबू=जामुन का फल

तालु, तालू=मुख के भीतर का एक स्थान

प्रत्युष, प्रत्यूष=प्रभात

भल्लुक, भल्लूक=भालू

मसुर, मसूर=एक प्रकार का अन्न

२—न और ण

(१) ऋ, र और ष के बाद न का ण हो जाता है; जैसे—रण, ऋण, भूषण, दूषण, इत्यादि।

ऋ, र, ष और न के बीच में कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग* अनुस्वार, य, व, ह आवे तो भी न का ण हो जाता है; जैसे, कृपण, प्रवण, प्रमाण, इत्यादि।

अपवाद—दुर उपसर्ग के बाद न आवे तो परिवर्तन नहीं होता; जैसे, दुर्नाम, दुर्नीति, दुर्निवार, इत्यादि।

(२) यदि न के साथ टवर्ग के किसी वर्ण का संयोग हो तो न का ण हो जाता है, जैसे—कण्टक, कण्ठ, दण्ड, विषण्ण, इत्यादि।

नोट—ये नियम केवल विशुद्ध संस्कृत शब्दों के लिये हैं। अन्य किसी भाषा के शब्दों में ण का प्रयोग नहीं होता; जैसे, ट्रेन, हंटर, फंड, बंडल, इत्यादि।

---

* कवर्ग=क, ख, ग, घ ङ। चवर्ग=च, छ, ज, झ, ञ। पवर्ग=प, फ ब, भ, म। इसी प्रकार अन्य वर्ग।

कवर्ग, पवर्ग को छोड़ अन्य वर्गों के वर्ण होने से परिवर्तन नहीं होता; जैसे—अर्चना, भर्त्सना, गर्जन इत्यादि।

ये शब्द स्वाभाविक ण वाले हैं—गुण, गण, निपुण, पाणि, मणि, वेणी, वेणु, वणिक्, वाणी, वाण, इत्यादि।

नीचे कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं जिनमें न, ण के परिवर्तन से अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है

अनु (उपसर्ग, पीछे के अर्थ में)	अणु=कण, सूक्ष्म खंड।
कान=सुनने की इन्द्रिय	काण=काना
बान=आदत, सजधज।	बाण=तीर
भरनी=करघे की ढरकी, नार।	भरणी=एक लग्न का नाम; एक नक्षत्र; भरण करने वाली।
विचारना=(क्रिया) विचार करना	विचारणा (संज्ञा) विचार करने की क्रिया।
शान=इज्ज़त, सजावट, ठाटबाट।	शाण=हथियार की धार तेज़ करने का पत्थर; कसौटी।

अपवाद—गिरिनदी और गिरिणदी दोनों रूप होते हैं।

३—श, ष और स।

(१) यदि किसी शब्द के आदि में स हो और उस के पहले अ आ को छोड़ अन्य कोई स्वर* संधि के लिये आया हो तो, स का ष हो जाता है; जैसे, अभि+सेक=अभिषेक, नि+सिद्ध=निषिद्ध, वि+सम=विषम, सु+सुप्ति=सुषुप्ति, इत्यादि।

---

* स्वर चाहे अकेला आवे या किसी व्यंजन के साथ मिल कर आवे; जैसे, वि, सु आदि।

अपवाद—किन्तु यदि स के बाद ऋ या र हो तो स का ष नहीं होता; जैसे, विस्मरण, अनुसरण, विसर्ग इत्यादि।

(२) ट या ठ के साथ संयोग होने पर स का ष हो जाता है; जैसे, शिष्ट, काष्ठ, मिष्ट, पृष्ठ, इत्यादि।

नोट—संस्कृत को छोड़ अन्य भाषा के शब्दों में ये नियम नहीं लगते; जैसे—मास्टर, स्टेशन, प्लास्टर, इत्यादि।

[illegible]

जाता है :—

अंश=भाग, हिस्सा।	अंस=कंधा
अयश=अपकीर्ति	अयस=लोहा
आशा=उम्मीद	आसा=सोने चाँदी का डंडा
ईशा = ऐश्वर्य्य	ईषा = हल की लम्बी लकड़ी जिसमें जुआ लगाते हैं।
कशा=(सं०) चाबुक, (फा०) खिंचाव।	कष=कसौटी। कस=दबाव, वश, काबू।
कोष, कोश=खज़ाना, शब्दकोष।	कोस=दो मील की दूरी
चषक = मदिरा पीने का प्याला	चसक=हल्का दर्द
तैश=गुस्सा	तैष = चान्द्र पौषमास
तोश=हिंसा, हिंसक।	तोष=संतोष
नाश=ध्वंस, बरबादी।	नास=जो दवा नाक से सुड़की जाय।
निरशन=उपवास	निरसन=त्याग, दूर हटाना।

निराशा=नाउम्मेद	निरास=निराकरण, दूर करना।
पाश=बंधन	पास=समीप
भूषा=गहना, आभूषण।	भूसा=अन्न के डंठल, छिलका आदि का चूर।
मशक=मच्छड़, मसा।	मसक=मसकने (फटने) की क्रिया
मास=महीना	माष=उड़द, मसा।
मुश्क=कस्तूरी, भुजा।	मुष्क=अंडकोष, चोर, ढेर।
रोशन=प्रकाशित, प्रसिद्ध।	रोषण=पारा
लाश=शव, मुर्दा।	लास=एक प्रकार का नाच
लेश-थोड़ा	लेस=गोटा
वारिश=विष्णु	वारिस=उत्तराधिकारी
विश, विस=कमल की डंटी, मृणाल।	विष=ज़हर
विशयी=वह जिसे किसी प्रकार की शंका न हो।	विषयी=विलासी
शंकर=महादेव	संकर=दो भिन्न भिन्न जातियों से उत्पन्न।
शकल=टुकड़ा	सकल=सब
शकृत=विष्ठा	सकृत=एकबार
शप्त=वह व्यक्ति जिसे शाप दिया गया हो।	सप्त=सात
शबल=चितकबरा	सबल=ताकतवर
शम=शांति, इन्द्रियों को वश में करना।	सम=तुल्य

शमा=मोम, मोमबत्ती।	समा=वर्ष, साल।
शर=तीर	सर=तालाब, मस्तक।
शर्व=महादेव, विष्णु।	सर्व=समस्त
शहर=नगर	सहर=सवेरा
शाला=मकान, जगह।	साला=स्त्री का भाई
शेर=व्याघ्र	सेर—१६ छटांक का एक तौल
शूर=बहादुर, योद्धा।	* सूर=सूर्य्य
सरकश=उद्धत, उत्पाती।	सरकस (सर्कस)=वह स्थान जहां जानवरों का खेल दिखाया जाता हो; जानवरों का खेल।
सरण=खिसकना, हटना।	शरण—आश्रय
शाया—छपना	साया=परछांही

अपवाद—

कलश, कलस=घड़ा

किशलय, किसलय=नया पत्ता

कोश, कोष=अभिधान, ख़ज़ाना।

दाश†, दास=नौकर

मषि, मसि=स्याही

---

* यह शब्द अन्धे के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा है।

† इस रूप का प्रयोग हिन्दी में नहीं देखा जाता है। 'दास' का ही प्रयोग होता है।

मुशल, मुषल, मुसल=मूसल (अन्न आदि कूटने का डंडा)

रशना, रसना=जीभ, रस्सी।

विकाश, विकास=वृद्धि, खिलना।

विमर्श, विमर्ष=किसी तत्व का अनुसंधान; आलोचना।

विश, बिस=कमल की डंटी।

वेश, वेष=कपड़े लत्ते पहनने का ढंग; पोशाक।

शंबल, संबल=यात्रा के लिए भोजन सामग्री; पाथेय।

शफर, सफर=मछली

शायक, सायक=तीर

शूकर, सूकर=सूअर

४—अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु

(१) अनुस्वार—हिन्दी में बहुधा सरलता के ख़याल से संयुक्त ङ, ञ, ण, न, म के बदले अनुस्वार का व्यवहार किया जाता है; जैसे :— पङ्कज=पंकज; खञ्जन=खंजन; खण्डन=खंडन; बन्दन=बंदन; अम्बिका=अंबिका, इत्यादि।

नोट—१ अनुस्वार के बदले आगे वाले वर्ण का उसी वर्ग के पाँचवें वर्ण से संयोग कर सकते हैं; जैसे, पंकज=पङ्कज; खंजन=खञ्जन इत्यादि।

किन्तु संस्कृत को छोड़ कर अन्य किसी भाषा के शब्दों में ङ, ञ, ण, का संयोग नहीं होता। अतः भंटा,

डंटा, पंजा पंखा, लंडन आदि के बदले भण्टा, डण्टा पञ्जा, पङ्खा, लण्डन आदि लिखना ठीक नहीं होगा।

न और म का संयोग अनुस्वार के बदले हो सकता है; जैसे— संदल=सन्दल, रटंत=रटन्त; डंबल=डम्बल, इत्यादि।

२ संस्कृत शब्द के दीर्घ स्वर वाले वर्ण पर अनुस्वार देने से उसका अनुनासिक अर्थात् चन्द्रविन्दु के समान उच्चारण होने का भय रहता है। अतः उस पर अनुस्वार न देकर आगे के वर्ण में ङ, ञ आदि वर्णों का यथा-स्थान संयोग करना चाहिए; जैसे—शांकरि, पांचाल, भांड, चांद्र, कांपिल्य आदि के बदले शाङ्करि, पाञ्चाल, भाण्ड, चान्द्र, काम्पिल्य आदि लिखना अच्छा होगा।

३ य, र, ल, व, श, ष, स, ह के साथ, पूर्ववर्त्ती वर्ण पर अनुस्वार के बदले, किसी अनुनासिक वर्ण का संयोग नहीं होता; जैसे—संयम, संराव, संलाप, संवाद, संशय, संसार, संहार के बदले सन्यम, सन्राव सन्लाप, आदि लिखना अशुद्ध होगा।

४ म से पहले वर्ण पर अनुस्वार देने के बदले म का द्वित्व कर देना चाहिए। अतः हंमीर, चंमल, आदि के बदले, हम्मीर, चम्मल आदि लिखना ठीक होगा।

(२) चन्द्रविन्दु—चन्द्रविन्दु का प्रयोग हिन्दी के शब्दों में होता है। इसका प्रयोग होने पर भी ह्रस्ववर्ण ह्रस्व ही रहता है। अतः

चन्द्रविन्दु वाले वर्ण का उच्चारण हल्का होता है; जैसे—हँसना, गाँव, चाँद इत्यादि।

नोट—१ दीर्घ वर्णों पर अनुस्वार का पूरा पूरा दीर्घ उच्चारण नहीं होता। अतः वहाँ चन्द्रविन्दु का व्यवहार होता है; जैसे—आँत, भाँति, यहाँ, वहाँ, इत्यादि।

२ किन्तु जब किसी वर्ण के सिर पर किसी स्वर का चिह्न लगाया जाता है तो सुविधा के लिए चन्द्रविन्दु न देकर अनुस्वार ही देना उचित समझा जाता है, यद्यपि कि उसका उच्चारण चन्दविन्दु के ही समान होता है; जैसे—बेंत, सिंचाई, सेंत, कौंध, इत्यादि।

३ उर्दू के नकारान्त शब्दों मे बहुधा न को हटाकर, न के पूर्ववर्त्ती वर्ण पर (यदि न के पहले आ हो तो, अन्यथा नहीं) चन्द्रविन्दु लगाने का रिवाज है; जैसे—जहाँ (जहान), कद्रदाँ (कद्रदान), गुलिस्ताँ (गुलिस्तान), इत्यादि।

नीचे लिखे शब्दों में अनुस्वार और चन्द्रविन्दु के फेर से उनके अर्थ में भी अन्तर पड़ जाता है :—

अँगना=आँगन	अंगना=स्त्री
अँगारी=ईख के सिर पर की पत्ती; ईख के छोटे टुकड़े।	अंगारी=दहकते हुए कोयले का छोटा टुकड़ा।
चँचरी=पत्थर के ऊपर से होकर बहनेवाला पानी।	चंचरी=भ्रमरी

टँकाना=जोड़वाना, सिलवाना।	टंकाना=सिक्कों का परखवाना
दाँत=(मुख के भीतर का प्रसिद्ध अवयव)	दांत (दान्त)=वशीभूत
माँद=बिल, हिंसक जन्तुओं के रहने की गुफा।	मांद (मान्द)=तालाब का जल
माँसी=उर्द के रंग का	मांसी=इलायची, जटामासी।
सँकरी=पतली	संकरी=वह जो भिन्न भिन्न जातियों के मेल से उत्पन्न हो।
सँभार=देख रेख	संभार=संचय, तैयारी।
सँवार=(सँवारना=सजाना)	संवार=आच्छादन; विवार का उल्टा।
साँग=बरछी	सांग (साङ्ग)=सब अङ्गों से पूर्ण
साँध=लक्ष्य	सांध (सान्ध)=सन्धि सम्बन्धी
हँकारना=आवाज़ देकर संबोधन करना।	हंकारना=वीरनाद करना, हुंकार करना।
हँसी=हँसने की क्रिया या भाव।	हंसी=हंस की मादा

कभी कभी एक ही शब्द में विकल्प से अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु दोनों का प्रयोग होता है। जैसे—

अँगरेज़, अंगरेज़=इंगलैंड में रहनेवाली जाति

अँजली, अंजली=दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट।

कँघी, कंघी=बाल साफ करने या सँवारने का एक उपकरण
काँसा, कांसा=एक धातु
चँगेरी, चंगेरी=फूल रखने का पात्र

५—व और ब

हिन्दी में व और ब में स्पष्ट अन्तर है। पर तो भी संस्कृत के कुछ शब्दों के व के स्थान में ब का प्रयोग होने लगा है; यह भूल है। तत्सम शब्दों का प्रयोग करते समय व और ब पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

नीचे कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं जिनमें व और ब के फेर से अर्थ में भी अन्तर हो जाता है—

अरवी—एक कंद जिसकी तरकारी होती है।	अरबी=अरब देश का; अरबी भाषा।
कुनवा=खरादी, खरादनेवाला।	कुनबा=परिवार
जवान=युवा	ज़बान=जीभ, बोली।
तव=तुम्हारा	तब=(अव्यय) बाद, उस समय।
दाव=वन; आग; एक हथियार।	दाब=दबने या दबाने का भाव
दावा=वन की आग; किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य्य।	दाबा=क़लम लगाने के लिए पौधे की टहनी को मिट्टी मे दबाने का काम।
वकुल=अगस्त का पेड़ या फूल	बकुल=मौलसिरी

वदन=मुख	बदन=शरीर
वन=जंगल	बन=निरौनी, मजदूरी; कपास का पेड़ ।
वल=मेघ	बल=ताकत
वहन=ढोना; जैसे, भार वहन करना ।	बहन=बहिन
वात=वायु	बात=वचन
वाद=तर्क, शास्त्रार्थ ।	बाद=हवा (फ़ारसी); पश्चात् ।
वार=सप्ताह का दिन; आघात ।	बार=समय; विलंब ।
वारिश=विष्णु	बारिश=वर्षा
वालिका=कान का एक गहना, बाली ।	बालिका=लड़की
वास=रहना, निवास ।	बास=गंध, महक ।
वासना=इच्छा	बासना=सुगंधित करना
वासी=रहनेवाला	बासी=जो ताज़ा न हो
व्याज=छल, बहाना ।	ब्याज=सूद
विस्तर=विस्तार, फैलाव ।	बिस्तर=बिछावन
वेला=काल, समय; समुद्र का किनारा ।	बेला=एक प्रकार के फूल का पौधा; उसका फूल ।
वेशी=वेश धारण करनेवाला	बेशी=अधिक
वैर=शत्रुता	बैर=एक प्रसिद्ध फल
शराव=मिट्टी का प्याला	शराब=मदिरा

शव=मुर्दा	शब=रात
सवा=एक और चौथाई (१¼)	सबा=पूर्व से बहनेवाली सबेरे की हवा।
सेव=बेसन का एक पकवान (झिलिया)।	सेब=एक प्रसिद्ध फल

कुछ शब्दों में एक ही स्थान पर व और ब दोनों का विकल्प से प्रयोग होता है :—

वक, बक=बगुला
वर्वर, बर्बर=जंगली, असभ्य।
वलि,बलि=उपहार, नैवेद्य।
वाण, बाण=तीर
वाणिज्य, बाणिज्य=व्यापार
वाधा, बाधा=रुकावट
वाल्मीकि, बाल्मीकि=रामायण रचनेवाले एक प्रसिद्ध मुनि।
वाष्प, बाष्प=भाप
वाह्य, बाह्य=बाहरी
वाहु, बाहु=भुजा
विन्दु, बिन्दु=नुक़्ता, बूँद।
वीज, बीज=बीया, जो बोया जाय।

६—हलन्त शब्द

शुद्ध व्यंजन के चिह्न का प्रयोग अधिकतर संस्कृत में ही होता है, क्योंकि संस्कृत में शब्दों के अकारान्त वर्णों के उच्चारण में अ की ध्वनि स्पष्ट होती है। अतः वहाँ व्यंजनान्त और अकारान्त का भेद स्पष्ट है। किन्तु हिन्दी में बहुधा अकारान्त वर्णों का भी उच्चारण व्यंजनान्त के समान होता है; जैसे—पागल, बोतल, शबनम, कम, बन, गज, इत्यादि।

केवल थोड़े से हिन्दी शब्दों में (विशेष कर अनुकरणवाचक शब्दों में) शुद्ध व्यंजन का चिह्न प्रयुक्त होता है; जैसे, बम्, हर्, फुर्, सर्, इत्यादि।

यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं जिनका हलन्त होने पर एक अर्थ होता है, और अकारान्त होने पर दूसरा अर्थ हो जाता है :—

जगत्=संसार	*जगत=कूएँ का चौतरा
परिषद्=सभा	परिषद=अनुचर
बम्=शिवकी आराधना में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द।	बम=एक प्रकार का एक विस्फोटक गोला।
वाक्=वाक्य, वाणी।	वाक=वाक्य, बगलों का समूह।
सन्=साल	सन=पटुआ
हल्=शुद्ध व्यंजन	हल=खेत जोतने का एक प्रसिद्ध औजार।

* हिन्दी में 'संसार' के अर्थ में भी यही शब्द प्रयुक्त होने लगा है।

७—अक्षरों के नीचे बिन्दी

हिन्दी भाषा के लिए प्रयुक्त देवनागर वर्णमाला में केवल ड और ढ के नीचे बिन्दी दी जाती है। किन्तु अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं के कुछ शब्दों को देवनागराक्षरों मे लिखने के लिए क, ख, ग, ज, फ, के नीचे बिन्दी का प्रयोग किया जाता है। जैसे—क़िला, ख़ानदान, ग़रीब, ज़बान, फ़र्श, कम्यूनिज़्म, फ़ाइनल इत्यादि। यह प्रयोग सार्वदेशिक नहीं है। किन्तु जहाँ बिन्दी का प्रयोग न करने से अर्थ मे गड़बड़ी होने की सम्भावना हो, वहाँ बिन्दी का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

नीचे लिखे शब्दों में बिन्दी के फेर से अर्थ में भी अन्तर हो जाता है :—

कतरा=कटा हुआ टुकड़ा	क़तरा = बूँद
कद=इर्ष्या, ज़िद।	क़द=ऊँचाई
कदम = कदम्ब का वृक्ष या फल	क़दम=डग, पैर।
*कदर (संस्कृत) = आरा	क़दर=मान; मात्रा।
कफ=बलगम	कफ़=आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी। जैसे कमीज का कफ़। झाग, फेन।
करार=ऊँचा किनारा	क़रार = ठहराव, वादा।

* इन शब्दों का प्रयोग हिन्दी में नहीं देखा जाता, किन्तु अर्थ के अभाव से बिन्दी की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

करीना = मसाला	क़रीना = तरीक़ा; जैसे चीज़ें क़रीने से रक्खी हुई हैं।
कालीन = काल सम्बन्धी; जैसे, गुप्तकालीन।	क़ालीन = गलीचा
कौल = उत्तम कुल मे उत्पन्न; वाममार्गी।	क़ौल = उक्ति; प्रतिज्ञा।
खाना = भोजन; भोजन करना।	ख़ाना = घर
खाम = जोड़, टाँका।	ख़ाम = कच्चा, अनुभवहीन।
खार = सज्जी, रेह।	ख़ार = काँटा
खाला = नीचा	ख़ाला = मौसी
खैर = कत्था	ख़ैर = कुशल, अच्छा।
गज = हाथी	गज़ = ३६ इंच की एक माप
*गाम = रास्ता	ग़म = दुःख
गरज = ज़ोर से बोलने का शब्द; गंभीर शब्द।	ग़रज़ = आशय, मतलब।
गुल = फूल	ग़ुल = शोर, हल्ला।
जनाना = मालूम कराना	ज़नाना = स्त्री संबंधी
जमाना = गाड़ा करना; दृढ़ता पूर्वक बैठाना।	ज़माना = समय
जरा = बुढ़ापा	ज़रा = थोड़ा
जात = जन्म, उत्पन्न।	ज़ात = शरीर
जाया = स्त्री	ज़ाया = व्यर्थ

जिला=चमक	ज़िला=इलाका, डिस्ट्रिक्ट।
तेज=चमक	तेज़=शीघ्रगामी; तीक्ष्ण।
फरक=फरकने की क्रिया; जैसे, आँख की फरक	फ़रक़=पार्थक्य, अलग।
मुकर्रर=दोबारा, दूसरी बार।	मुकर्रर=तय किया हुआ; नियुक्त।
मेज=एक प्रकार की घास।	मेज़=टेबुल
राज=हुकूमत, शासन व्यवस्था।	राज़=रहस्य, छिपी बात।
राजी=पंक्ति	राज़ी=अनुकूल; सम्मत।
* वरक=साधारण वस्त्र	वरक़=सोने चांदी का पत्तर; पुस्तक का पृष्ठ।
* वाज=घी, यज्ञ, आदि।	वाज़=उपदेश, शिक्षा।
लहजा=गाने या बोलने का ढंग, स्वर।	लहज़ा=पल, क्षण।
शाक=भाजी, तरकारी।	* शाक़=भारी, कठिन।
शायक=तीर	शायक़=शौकीन, इच्छुक।
शौक=शुकसमूह, तोतों का झुंड।	शौक़=प्रबल लालसा
सखी=सहेली, सहचरी।	सख़ी=दानी
सागर=समुद्र	साग़र=प्याला
सीख=सलाह, शिक्षा।	सीख़=लोहे की लम्बी, पतली छड़।
सुराग=(सु+राग) गाढ़ प्रेम; सुन्दर राग।	सुराग़=टोह, पता।

* चिह्नित शब्दों का प्रयोग हिन्दी में नहीं देखा जाता, किन्तु बिन्दी के कारण होनेवाले अन्तर को ध्यान में रखना चाहिये।

हलका=जो भारी न हो	हलक़ा=वृत्त, मंडल; कई गाँवों या क़सबों का समूह।

८—क़रीब क़रीब समान उच्चारण वाले कुछ शब्द जिनके अर्थ अलग अलग हैं—

अध्यशन = अजीर्ण	अध्येषण=याचना
अधिदेव=इष्टदेव	अधिदैव=दैविक, आकस्मिक।
अवग्रह=रुकावट	अवग्रहण = अपमान
अवर्त्त=स्फूर्तिशून्य पदार्थ; वह पदार्थ जिसके आर पार प्रकाश या दृष्टि न जा सके।	आवर्त्त=पानी का भँवर
अविराम = लगातार	अभिराम = सुन्दर
अवृत्ति = जीविका का अभाव	आवृत्ति=बारबार किसी बात का अभ्यास।
आसन=स्थिति; बठने की विधि; बैठने के लिये कोई वस्तु	आसन्न=[illegible]स्थ, निकट आया [illegible] हुआ
इतर=दूसरा	इत्र=अतर; [illegible], गुलाब का इत्र।
उपरत=विरक्त, उदासीन।	[illegible] भोग विलास में लगा हुआ।
कंकाल = ठठरी	कंगाल=ग़रीब।

कदन=मरण; युद्ध; हिंसा।	कदन्न=बुरा अन्न
कर्ज़=ऋण	करज=नख
कर्तन=काटना	कीर्त्तन=भजन, गुणकथन।
कर्म=काम	क्रम=बारी
कल्मष=पाप	कल्माष=काला, चितकबरा।
कान्ता=सुन्दरी स्त्री	कान्तार=भयानक स्थान
कामुक=कामी, विषयी।	कार्मुक=धनुष
क्रान्ति=उलट फेर	क्लान्ति=थकावट
कुन्तल=सिर के बाल	कुंडल=कान का एक आभूषण
कुशल=दक्ष; मंगल।	कौशल=दक्षता
कृत=बनाया हुआ; किया हुआ।	क्रीत=खरीदा हुआ
कृति=कार्य्य	कृत्ति=मृगचर्म, चमड़ा।
कृत्तिका=एक नक्षत्र	कृत्यका=भयंकर कार्य्य करनेवाली स्त्री।
कृपण=कंजूस	कृपाण=तलवार
कृशानु=अग्नि	कृषाण=किसान
गण=समूह, परिचारक।	गण्य=गिनने के योग्य; प्रतिष्ठित।
गर्त्त=गड्ढा	गर्द=धूल
गिरा=वाणी; गिरना क्रिया का भूतकाल।	गिराँ=मँहगा
घृणा=नफरत	घिरना=घेरा जाना
चूर=कण	चूड़=शिखा

द्वा औषध	दावा=वन में लगने वाली आग; अधिकार प्रकट करने का कार्य; जैसे—खेत का दावा।
द्यूत—जुआ	दूत=संवाद ले जाने वाला।
नगर=शहर	नागर=चतुर आदमी; सभ्य व्यक्ति।
नहर=सिंचाई के लिये कृत्रिम नदी।	नाहर=सिंह
निवृत्त=खाली, विरक्त; वह जो छुट्टी पा गया हो।	निर्वृत्त=जो पूरा हो गया हो।
निर्वात=जहाँ हवा न हो निर्विवाद=विना झगड़े का; जिसमें कोई विवाद न हो।	निर्वाद=अपवाद; अवज्ञा।
निर्विष=विषहीन	निर्विष्ट=जो भोग कर चुका हो; जो मुक्त हो गया हो।
निशाकर=चन्द्रमा	निशाचर=राक्षस
निहत=मारा गया	निहित=छिपा हुआ
पड़त=लागत	परत=तह
परिणाम=नतीजा	परिमाण=तादाद
परुष=कड़ा, कर्कश।	पौरुष=साहस, पुरुषत्व।
प्रकृत=यथार्थ, असली।	प्राकृत=स्वाभाविक; साधारण; प्राकृत भाषा।
प्रणय=प्रेम	परिणय=विवाह

प्रतीप = उल्टा	प्रदीप = दीपक
प्रदर्शन = दिखलाने का काम	प्रधर्षण = अपमान; आक्रमण।
प्रदेश = प्रान्त; किसी देश का एक बड़ा भाग।	प्रद्वेष = शत्रुता
प्रबल = बलवान, प्रचंड।	प्रवर = श्रेष्ठ, प्रधान।
प्रवार = वस्त्र, चादर।	प्रवाल = मूँगा
प्रसाद = प्रसन्नता, कृपा।	प्रासाद = महल
पाणि = हाथ	पानी = जल
*प्राय = तुल्य; जैसे मृतप्राय = मृतक के तुल्य।	प्रायः = बहुधा
पठ = प्रवेश	पैंठ = बाज़ार
फण = साँप का फैला हुआ सिर	फ़न = खूबी, हुनर, विद्या।
फ़ालिज = लकवा	फाजिल = आवश्यकता से अधिक।
मनुजात = (मनु + जात) मनु से उत्पन्न।	मनुजाद = (मनुज+आद) नरभक्षक।
मशक = मच्छड़; चमड़े का थैला जिसमें पानी भरा जाता है।	मश्क = किसी काम को अच्छी तरह करने का अभ्यास।
मास = महीना	मांस = गोश्त
योग = मेल, एकत्र होना।	योग्य = क़ाबिल
रंक = ग़रीब	रंग = वर्ण (लाल, पीला, आदि)

* इस शब्द का प्रयोग किसी दूसरे शब्द के साथ ही होता है, अकेला नहीं होता।

रोचक = रुचने वाला	रेचक = दस्तावर
रोशन = प्रकाशित; प्रसिद्ध।	रोषण = पारा; कसौटी।
लक्ष = लाख (सौ हज़ार)	लक्ष्य = उद्देश्य
व्यंग = वह जिसका कोई अंग टूटा हो; विकलाङ्ग।	व्यंग्य = गूढ़ और छिपा हुआ अर्थ; ताना।
वर्ण = रंग; ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि विभाग।	व्रण = घाव, फोड़ा।
वरण = पसंद करना, चुनना।	
वर्हीं = मोर	विरही = जिसे वियोग हो
शाकल = टुकड़ा; छाल।	शक्ल = आकृति, बनावट।
शर्म = लज्जा	शर्म्म = मकान; सुख।
श्रम = मिहनत	
श्रवण = कान; सुनना।	श्रमण = बौद्ध सन्यासी; मजदूर।
शाम = सन्ध्या	श्याम = काला; साँवला।
शुक्ति = सीप	सूक्ति = अच्छी उक्ति।
शुल्क = फ़ीस	शुक्ल = उजला
सर्ग = परिच्छेद; स्वभाव; सृष्टि।	स्वर्ग = सात लोकों में तीसरा लोक
सूचि = सूई	शुचि = पवित्र
सेक = जल-सिंचन; तर करना।	सेंक = गर्मी पहुँचाने की क्रिया।
सौगंध = सुगंधित तेल आदि का व्यापार करने वाला; खुशबू।	सौगंद = शपथ

६—तद्भव और मूल शब्द

हिन्दी में ऐसे अनेक तद्भव शब्द प्रचलित हैं, जिनका मूल शब्द भी व्यवहार में आता है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं जिनके मूलरूप में एक अर्थ और अपभ्रंश रूप में दूसरा अर्थ हो जाता है :—

मूल	अपभ्रंश
अज्ञान=जिसे ज्ञान न हो	अजान=जो किसी बात से वाकिफ़ न हो।
अनार्य्य=जंगली, असभ्य जाति	अनाड़ी=किसी विषय से अपरिचित।
आश्रय=शरण	आसरा=उम्मीद
उत्थान=उन्नति	उठान=ऊँचाई; उठने की क्रिया या भाव।
उत्साह=किसी काम को करने की लगन; बलवती इच्छा; जोश।	उछाह=आनन्द
उद्घाटन=प्रकट करना, खोलना; उ० रहस्योद्घाटन; पुस्तकालय का उद्घाटन।	उघारना=किसी वस्तु को, ऊपर का ढक्कन या आवरण हटाकर, प्रकट करना।
उद्वेलन=किनारे से ऊपर जाना; क्षुब्ध होना।	उबलना=खौलना

क्षीर=दूध	खीर=दूध में पका हुआ चावल
क्षेत्र=मैदान;कोई कार्य्य करने का स्थल।	खेत=जोती हुई भूमि जहाँ अन्न उपजाया जाता हो।
गंभीर=विचारशील, गहरा। उ० गंभीर व्यक्ति; गंभीर समुद्र।	गहरा=उथला का उल्टा उ० गहरा समुद्र; गहरा विचार।
गर्भिणी=जिसे गर्भ हो (सभी प्राणियों के लिये प्रयुक्त)।	गाभिन=जिसे गर्भ हो (केवल पशुओं के लिये प्रयुक्त)।
छत्र=राजाओं के सिर पर लगाया जाने वाला छाता।	छाता=(साधारण लोगों के काम में आने वाला)।
ध्वनि=शब्द	धुन=गाने का तर्ज़
निरालय=एकान्त	निराला=एकान्त, विचित्र।
पत्र=पत्ता; चिट्ठी।	पत्ता=वृक्ष आदि का पत्ता
परीक्षा=जाँच; इम्तहान।	परख=किसी वस्तु के खरा खोटा होने की जाँच।
पर्ण=पत्ता	पान=एक लताविशेष का पत्ता जो खाया जाता है।
पार्श्व=बगल	पास=नज़दीक
पृष्ठ=पीठ; पुस्तक का पृष्ठ; पिछला हिस्सा।	पीठ=धड़ का पिछला भाग।
भिक्षार्थी=भिक्षा चाहने वाला।	भिखारी=निर्धन; भीख माँग कर खाने वाला।

मज्जन=स्नान	मंजन=दाँत साफ़ करने का चूर्ण
मध्यम=बीच का	मंझला=उम्र या बड़ाई छोटाई के हिसाब से बीच का।
रश्मि=किरण; घोड़े की लगाम।	रस्सी=डोरी
रुष्ट=नाराज़	रूठ=रूठना, अप्रसन्न हो जाना; (विशेष कर व्यंग्य में प्रयुक्त)।
लब्धि=प्राप्ति (प्रायः गणित में प्रयुक्त)।	लाभ=नफ़ा, फ़ायदा।
लोक=मर्त्य, स्वर्ग आदि सात लोक।	लोग=मनुष्य
विभूति=ऐश्वर्य्य; भस्म।	भभूत=भस्म
शृङ्खला=ज़ंजीर, क्रम, सिलसिला।	साँकल=लोहे की ज़ंजीर
श्रेष्ठ=सब से अच्छा	सेठ=धनवान (विशेष कर धनी मारवाड़ियों के लिए प्रयुक्त)
सज्ञान=जिसे ज्ञान हो।	सयाना=बुद्धिमान; युवा।
सन्धि=मेल	साँझ=सूर्यास्त का समय।
सौभाग्य=अच्छा भाग्य	सुहाग=पति के जीवित रहने का भाव। (स्त्रियों के लिये प्रयुक्त)

१०——उपसर्गवाले शब्द

उपसर्गों के संयोग से शब्दों के अर्थ में बहुधा विशेषता या भिन्नता आ जाती है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं, जिनके अर्थ में उपसर्गों के कारण भिन्नता आ गई है :—

अनुगत=अनुयायी, सेवक। अवगत=विदित

अनुभूत=अनुभव किया हुआ प्रभूत=बहुत संभूत=उत्पन्न
अभिभूत=वशीभूत।

अपकर्ष=गिराना उत्कर्ष=श्रेष्ठता प्रकर्ष=उत्तमता

अपेक्षा=बनिस्बत, अभिलाषा। उपेक्षा=अनादर

अभिनिवेश=प्रवेश, गति। उपनिवेश=एक देश के लोगों की दूसरे देश मे आबादी।
सन्निवेश=निवास, घर।

अभिचार=तंत्र के प्रयोग उपचार=चिकित्सा परिचार=सेवा

आकलन=ग्रहण, संग्रह। व्यकलन=घटाना संकलन=जोड़ना

आघात=चोट व्याघात=विघ्न संघात=समूह; चोट।

आधान=स्थापना व्यवधान=अन्तर विधान=नियम
संधान=निशाना लगाना; खोज।

आसन्न=समीपस्थ अवसन्न=दु:खी

आहार=भोजन व्याहार=वाक्य

उद्गम=उत्पत्ति का स्थान संगम=मिलन

कमउम्र=थोड़ी उम्र का हमउम्र=समान उम्र का

काण्ड=घटना प्रकाण्ड=बहुत बड़ा

परिग्रह=संग्रह; विवाह । प्रतिग्रह=विरोध, ग्रहण । प्रग्रह=लगाम, किरण।
विग्रह = लड़ाई ।

परिताप = क्लेश प्रताप = सामर्थ्य

परिमाण = तादाद प्रमाण = सबूत

परिमेय=जो नापा जा सके प्रमेय=जो प्रमाण का विषय हो सके

परिभव = अनादर पराभव = हार प्रभव = उत्पत्ति

परिवृत्त = घेरा हुआ परावृत्त = फेरा हुआ प्रवृत्त=लगा हुआ

परिहार=निवारण; खंडन । प्रतिहार=द्वारपाल । प्रहार=आघात

बदराह=बुरे रास्ते पर चलने वाला । हमराह = साथ, संग ।
गुमराह = भूला भटका हुआ ।

बदनाम = निन्दित हमनाम = समान नाम वाला

बदतमीज़ = अशिष्ट बातमीज़ = शिष्ट

बरवक्त = हमेशा ऐनवक्त = मौके पर

भाग = हिस्सा विभाग = हिस्सा; महकमा ।

वाद = तर्क अपवाद = व्यापक नियम से अलग; निन्दा ।

विवाद = झगड़ा प्रवाद = जनश्रुति

विराम=ठहरना अभिराम=सुन्दर

विरोध=मुक़ाबला; द्वेष । निरोध=रोक

विकल्प=धोखा; इच्छाधीन होना । संकल्प=निश्चय

संकुल = भरा हुआ पर्याकुल = घबड़ाया हुआ

सम्पन्न = भरा पूरा प्रपन्न=आश्रित विपन्न=विपद् ग्रस्त

हास=हँसने की क्रिया उपहास=निन्दा परिहास=दिल्लगी

११—पर्यायवाची मालूम पड़ने वाले शब्दों में अन्तर

अप्रसन्नता क्रोध—'अप्रसन्नता' में क्रोध की अपेक्षा तीव्रता की मात्रा कम है। साधारण सी बात को लेकर कोई किसी पर अप्रसन्न हो सकता है। 'अप्रसन्नता' में बदला लेने का भाव नहीं है किन्तु 'क्रोध' में तीव्रता है, और उसमें बदला लने का भाव वर्त्तमान है। उचित आदर न होने पर अप्रसन्नता होती है, लेकिन अपमान होने पर क्रोध होता है।

कष्ट, तकलीफ़—'कष्ट' शारीरिक और मानसिक दोनों हो सकता है। 'तकलीफ' से विशेष कर शारीरिक कष्ट का बोध होता है। अपनी दुरवस्था पर कष्ट होता है। अपरिचित स्थान में रहने और खाने पीने का कष्ट या तकलीफ होती है। मृतव्यक्ति की बातें याद कर कष्ट होता है; जाड़े में कपड़े के अभाव से कष्ट या तकलीफ होती है।

शोक, विषाद, व्यथा, अफ़सोस, खेद—'शोक' और 'विषाद' दोनों की उत्पत्ति किसी अप्रिय घटना से होती है। दोनों से घोर मानसिक कष्ट का बोध होता है। लेकिन 'शोक' में 'विषाद' की अपेक्षा अस्थायित्व की मात्रा अधिक है। 'व्यथा' दिल की चोट को कहते हैं। अप्रिय किन्तु साधारण घटना पर 'अफसोस' होता है। अपनी गलती या असमर्थता पर 'खेद' होता है। किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु से शोक या विषाद होता है। मित्र के विश्वासघात

करने पर व्यथा होती है। किसी वस्तु के नष्ट हो जाने पर अफ़सोस होता है। समय पर मित्र की सहायता न कर सकने का खेद होता है।

करुणा, दया, सहानुभूति, कृपा—किसी पीड़ित व्यक्ति को देखकर करुणा का संचार होता है। दीन हीन व्यक्ति पर दया आती है। 'दया' से उपकार करने की इच्छा का बोध होता है और यह अपनी स्थिति से नीचे वालों के प्रति की जाती है। दूसरे का दुःख समझ कर दुःखित होना, किसी को सहयोग देने की इच्छा रखना सहानुभूति है। 'कृपा' का अर्थ है अनुकूलता। इससे साधारण उपकार का बोध होता है और यह किसी के प्रति भी की जा सकती है।

विधवा का विलाप सुनकर करुणा उत्पन्न होती है। भूखे को देख कर दया आती है। संकट में पड़े हुए व्यक्ति के प्रति सहानुभूति होती है। देश द्रोहियों से किसी की सहानुभूति नहीं होती। देश के लिए जान देने वालों के प्रति सबों की सहानुभूति होती है। मालिक नौकर पर कृपा रखता है। राम कृपा कर श्याम को एक पुस्तक पढ़ने के लिए देता है।

प्रेम, स्नेह, प्यार—'प्रेम' अत्यन्त विस्तृत अर्थ में प्रयुक्त होता है। ईश्वर से प्रेम होता है; सत्य से प्रेम होता है; भाई, बहन, स्त्री आदि से प्रेम होता है; मिठाई से भी प्रेम होता है।

लेकिन 'स्नेह' उम्र में अपने से छोटों के लिए होता है। पिता पुत्र से स्नेह करता है। बड़ा भाई छोटे भाई से स्नेह करता है। 'प्यार' बहुधा स्नेह के अर्थ में आता है। दूसरे प्राणियों के सम्बन्ध में भी इसका व्यवहार किया जाता है; जैसे, मालिक कुत्ते को प्यार करता है।

विपत्ति, ख़तरा—'विपत्ति' से अकस्मात् उपस्थित होने वाले दैवकृत दुःख का बोध होता है। विपत्ति कब और कहाँ आवेगी, यह कह सकना कठिन है। लेकिन ख़तरे की संभावना कहाँ है और कहाँ नहीं है, इसका अनुमान मनुष्य कर सकता है। विपत्ति सभी समय उपस्थित नहीं रहती, लेकिन ख़तरा प्रायः साधारण कामों में भी और सभी समय हो सकता है। विपत्ति से शारीरिक, आर्थिक इत्यादि किसी प्रकार की भी हानि हो सकती है, लेकिन ख़तरा से विशेष कर शारीरिक हानि का ही बोध होता है। ख़तरा में विपत्ति की अपेक्षा अस्थायित्व की ध्वनि है। अनावृष्टि या अतिवृष्टि से देश पर विपत्ति आती है। बाढ़ से लोगों पर विपत्ति आती है। सिंह की गुफा में जाने में ख़तरा है। हवाई जहाज में अक्सर ख़तरा होता है।

साहस, वीरता—'साहस' का अर्थ है भय पर विजय प्राप्त करना। 'वीरता' में भय का कोई सवाल ही नहीं रहता। 'साहस' में अस्थायित्व का भाव है। डरपोक आदमी भी कुछ देर के लिये साहस दिखा सकता है, परन्तु वह वीर नहीं बन

सकता। 'साहस' हृदय का अस्थायी भाव है, लेकिन 'वीरता' प्राकृतिक गुण है। साहसी मनुष्य वीर हो सकता है और नहीं भी हो सकता है, किन्तु बिना साहस के कोई वीर नहीं हो सकता। मनुष्य सिंह के आगे जाने का साहस करता है, लेकिन उससे लड़ने मे वीरता की ज़रूरत होती है।

ख़ुशी, आनन्द—'ख़ुशी' साधारण अर्थ मे आता है। साधारण सी बात में भी ख़ुशी होती है। 'आनन्द' ख़ुशी के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है और सात्विक आह्लाद के अर्थ मे भी। मित्र का पत्र पाकर ख़ुशी या आनन्द होता है; पुत्र का जन्म सुन कर ख़ुशी या आनन्द होता है, लेकिन ईश्वर के भजन मे आनन्द आता है। किसी महात्मा के दर्शनों से आनन्द होता है।

दरिद्र, कंगाल, दीन—जिसके पास आवश्यकतापूर्त्ति के लिये काफ़ी धन न हो, वह दरिद्र है। जिसे पेट पालने के लिये भीख तक माँगनी पड़े, वह कंगाल है। जिसका आत्म-गौरव नष्ट हो गया हो, वह दीन है। निर्धन और धनी दोनों दीन हो सकते हैं। धनी मनुष्य भी संकट में पड़ कर किसी के आगे दीनता प्रकट कर सकता है। दरिद्र मनुष्य दीन हो सकता है और नहीं भी हो सकता है, लेकिन 'कंगाल' से निर्धनता के साथ साथ दीनता का भी बोध होता है।

अनुभव, अनुभूति—स्वयं किसी वस्तु को देख कर, उसका प्रयोग कर हम उसका अनुभव प्राप्त करते हैं। किसी उच्च भाव का चिन्तन कर, हृदय में उसका अनुभव कर, हम अनुभूति प्राप्त करते हैं। संसार का अनुभव होता है; ईश्वर के संबंध मे अनुभूति होती है। शिक्षक को पढ़ाने का अनुभव होता है; कवि को प्रकृति के संबंध में अनुभूति होती है।

निकट, पास—'निकट' और पास दोनों नज़दीक के अर्थ में पर्यायवाची हैं। पर 'निकट' से विचार का तथा 'पास' से अधिकार का भी बोध होता है। आरा के निकट या पास रतनकुल नामक गाँव है। ज्ञानियों के निकट दुःख और सुख समान है। धनिकों के पास धन होता है।

अनुरूप, अनुकूल—'अनुरूप' से योग्यता और 'अनुकूल' से उपादेयता और उपयोगिता का बोध होता है। विद्वानों का उनके अनुरूप सत्कार किया जाता है। लेखक को उसकी पुस्तक के अनुरूप पारिश्रमिक मिलता है। रोगी के लिए पहाड़ी स्थान की आबहवा अनुकूल होती है। यूरोप का सामाजिक वातावरण भारतवासियों के लिए अनुकूलनहीं है। कभी कभी योग्यता के अर्थ में भी अनुकूल का प्रयोग किया जाता है; जैसे, यह सम्मान उनके अनुकूल नहीं हुआ।

सेवा, शुश्रूषा—सेवा किसी की भी की जा सकती है। शुश्रूषा

असमर्थों या रोगियों की होती है।

ईर्ष्या, द्वेष, स्पर्द्धा—'ईर्ष्या' का अर्थ है दूसरों की उन्नति देख कर जलना। किसी कारण वश किसी से शत्रुता होना 'द्वेष' है। उन्नति में दूसरों से बढ़ जाने की इच्छा 'स्पर्द्धा' है। राम को श्याम का धन देख कर ईर्ष्या होती है; कुछ रुपये माँगने पर श्याम के न देने से उसके मन में द्वेष होता है, और वह धन कमाने में श्याम की स्पर्द्धा करता है।

अलौकिक, अस्वाभाविक—'अलौकिक' वह वस्तु है जो लोक में दुर्लभ हो। अस्वाभाविक वह है जो प्रकृति विरुद्ध हो। सत्य, क्षमा आदि, अलौकिक गुण हैं। योगियों में अलौकिक तेज होता है। मांस मनुष्य के लिये अस्वाभाविक भोजन है।

अस्त्र, शस्त्र—'अस्त्र' वह हथियार है जो फेंक कर चलाया जाता हो। 'शस्त्र' वह है जो हाथ में रख कर चलाया जाता हो। तीर अस्त्र है; तलवार शस्त्र है।

उपकरण, उपादान—'उपकरण' वह सामग्री है जिसके सहयोग से कोई कार्य्य सिद्ध हो। 'उपादान' वह सामग्री है जिससे कोई पदार्थ बने। कोई व्यक्ति राष्ट्र की उन्नति का उपकरण हो सकता है। ईंट, चूना, मिट्टी आदि उपादानों से मकान तैयार होता है। उपादान से किसी वस्तु के निर्माण में लगे हुए भिन्न भिन्न तत्त्वों या सामग्रियों का

बोध होता है।

प्रमाद, भ्रम—'प्रमाद' असावधानी के कारण और 'भ्रम' अज्ञता या अनभिज्ञता के कारण होता है। लेखक प्रमादवश अशुद्धियाँ करता है। अन्धेरे में रस्सी देख कर साँप का भ्रम होता है।

घमंड, अभिमान—'घमंड' से अपने आगे औरों को तुच्छ समझने का भाव व्यक्त होता है। 'अभिमान' में 'घमंड' की अपेक्षा औचित्य की मात्रा अधिक है। अभिमान गौरव के अर्थ मे भी प्रयुक्त होता है। दरिद्र मनुष्य को धन मिलने पर घमंड हो जाता है। विद्वान् को अपनी विद्या का अभिमान होता है। भारतवासियों को अपनी प्राचीन सभ्यता पर अभिमान होना चाहिए।

कार्य्य, कर्त्तव्य—'कार्य्य' से किसी साधारण काम का बोध होता है। 'कर्त्तव्य' उस कार्य्य को कहते हैं जिसे अवश्य करना चाहिए, जिसके करने के लिए धार्म्मिक या नैतिक बंधन हो। लिखना कार्य्य है, लेकिन पिता की सेवा करना कर्त्तव्य है।

अधिक, काफ़ी—'अधिक' का अर्थ है, आवश्यकता से ज्यादा। 'काफ़ी' का अर्थ है, आवश्यकता से न कम न अधिक। बाढ़ आने से गंगा में जल अधिक हो जाता है, लेकिन गर्मी में भी उसमें काफ़ी जल रहता है।

अपराध, पाप—सामाजिक क़ानून का उल्लंघन करना 'अपराध'

है। नैतिक नियमों का उल्लंघन पाप है। एक ही कार्य्य 'अपराध' और 'पाप दोनों हो सकता है। बिना पूछे किसी की वस्तु लेना अपराध है। किसी की हत्या करना अपराध और पाप दोनों हैं। झूठ बोलना पाप है।

चालाक, बुद्धिमान—जो उचित या अनुचित उपायों से अपना काम निकालना जानता हो वह चालाक है। 'चालाक' से धूर्त का बोध होता है, और यह अक्सर बुरे भाव में प्रयुक्त होता है। जिसकी विचार शक्ति परिपक्व हो वह बुद्धिमान है। चालाक आदमी मुक़दमें मे अपने प्रति-द्वन्दी को हरा देता बुद्धिमान व्यक्ति मुक़द्दमा करने की अपेक्षा पंचायत से मामले का फैसला करा लेना अधिक पसन्द करता है। बुद्धिमान में विवेक होता है। चालाक में धूर्तता और स्वार्थ होता है।

इच्छा, कामना, संकल्प—'इच्छा' किसी भी साधारण वस्तु की होती है। कामना किसी विशेष पदार्थ की होती है। 'संकल्प' से किसी पदार्थ को प्राप्त करने के दृढ़ निश्चय का बोध होता है। मिठाई खाने की इच्छा होती है। पुत्र की कामना होती है। विदेश जाने का संकल्प किया जाता है।

प्रार्थना, अनुरोध—'प्रार्थना' से दीन भाव की ध्वनि निकलती है। 'प्रार्थना' अपने से बड़ों के प्रति, आत्मसम्मान का खयाल छोड़ कर की जाती है। 'अनुरोध' बराबर वालों से

किया जाता है। 'अनुरोध' से दीनता नहीं प्रकट होती। नौकर मालिक से छुट्टी के लिए प्रार्थना करता है। भक्त ईश्वर से प्रार्थना करता है। राम श्याम से किसी काम में सहायता देने के लिए अनुरोध करता है। भारत सरकार प्रान्तीय सरकारों से किसी विषय पर रिपोर्ट भेजने के लिए अनुरोध करती है।

पुस्तक, ग्रन्थ—'पुस्तक' साधारणतः सभी प्रकार की छपी हुई या हस्तलिखित रचनाओं के लिए व्यवहृत होता है। लेकिन 'ग्रंथ' से विषय या आकार के गुरुत्व का बोध होता है। 'रचना तत्त्व' पुस्तक है। रामायण ग्रंथ है।

प्रयोग, उपयोग—अनुभव प्राप्त करने के लिए किसी वस्तु को व्यवहार में लाना 'प्रयोग' है। साधारण व्यवहार के अर्थ मे भी 'प्रयोग' आता है। ऐसी वस्तु का व्यवहार जिसका लाभ विदित है, 'उपयोग' है। किसी वस्तु के प्रयोग का उद्देश्य अच्छा या बुरा, कुछ भी हो सकता है। लेकिन उपयोग लाभ के लिए किया जाता है। वैज्ञानिक रासायनिक द्रव्यों का प्रयोग करता है। डाकू डाका डालने में अस्त्र शस्त्र का प्रयोग करते हैं। हत्यारा पिस्तौल का प्रयोग करता है। लेखक बहुधा अशुद्ध शब्दों का प्रयोग करते हैं। यूरोप वाले खाद्य पदार्थों में गेहूं का अधिक उपयोग करते हैं।

'प्रयोग' किसी काम के करने के ढंग के अर्थ में, और उपयोग लाभ के अर्थ में भी आता है। जंगली लोग

बंदूक का प्रयोग नहीं जानते। अशिक्षित लोग पुस्तकों का उपयोग नहीं जानते।

आदि, इत्यादि—साधारणतः एक उदाहरण के बाद 'आदि' और एक से अधिक उदाहरणों के बाद 'इत्यादि' का प्रयोग किया जाता है। पुस्तक आदि; काग़ज, कलम, दावात, इत्यादि।

महाशय, महोदय—'महाशय' बहुधा साधारण लोगों के लिए और 'महोदय' बड़े लोगों के लिए आता है। महाशय तारकनाथ; चीफ़ जस्टिस महोदय।

नहीं, न, मत—सामान्य वर्त्तमान, अपूर्णभूत और आसन्नभूत कालों को छोड़ कर बहुधा अन्य कालों में 'न' का प्रयोग होता है। 'नहीं' का प्रयोग सम्भाव्य-भविष्यत्, क्रियार्थक संज्ञा तथा विधि और संकेतार्थ कालों में बहुधा नहीं होता। 'मत' केवल विधि काल में आता है। लड़का घर न आया। नौकर कभी न आवेगा। अब वे दिन न रहे। मैं कहीं जा नहीं सकता। मुझ से मत बोलो। कभी कभी 'न' का प्रयोग भी विधि काल में होता; जैसे, वहाँ न जाओ।

परन्तु, किन्तु—'परन्तु' लेकिन का पर्यायवाची है। किन्तु' का प्रयोग बहुधा निषेधवाचक वाक्यों के पश्चात् होता है; जैसे, मैंने उनसे चार रुपए मांगे थे, परन्तु उन्होंने तीन ही दिये। कामनाओं के प्रबल होने से आदमी दुराचार नहीं करता, किन्तु अन्तः करण के निर्बल हो जाने से वैसा करता है।

द्वितीय परिच्छेद।

१—अनेकार्थक शब्द ।

अंक=संख्या का चिह्न; जैसे, १, २, ३, । भाग्य । गोद ।

अंकुश=हाथी को हाँकने का दो मुहाँ भाला । दबाव ।

अधर=नीचे का ओठ । अंतरिक्ष; जैसे, वह अधर में लटका हुआ है ।

अपवाद=निन्दा । वह नियम जो व्यापक नियम के विरुद्ध हो ।

अपेक्षा=इच्छा । आवश्यकता । आशा । बनिस्बत ।

आपत्ति=विपत्ति । एतराज़ ।

आम=आम का फल या वृक्ष । जन साधारण । मामूली ।

कंद=वह जड़ जो गूदेदार और बिना रेशे की हो । मिश्री ।

कटाक्ष=तिरछी नज़र । व्यंग्य, आक्षेप ।

कला=अंश । किसी कार्य्य को भली भांति करने का कौशल ।

कषाय=कसैला । गेरू के रंग का ।

कसरत=व्यायाम । अधिकता; उ० पटने में आलू कसरत से होता है ।

काम=इच्छा । कार्य ।

केतु=ध्वजा । एक ग्रह । पुच्छल तारा ।

केवल=एकमात्र । विशुद्ध ज्ञान ।

कोट=एक पहरावा । क़िला ।

कोटि=धनुष का सिरा । श्रेणी । करोड़

जाल=चिड़िया आदि पकड़ने का फन्दा। समूह; उ० किरण-जाल। फ़रेब।

ताल=संगीत में काल का परिमाण। करतलध्वनि। तालाब।

द्रव्य=वस्तु। धन।

धर्म=प्रकृति, स्वभाव। कर्त्तव्य। सम्प्रदाय; जैसे, सनातन धर्म, ईसाई धर्म।

निराला=एकान्त। विचित्र।

पद=दर्जा। शब्द। ईश्वर भक्ति सम्बन्धी गीत।

पृष्ठ=पीठ। पीछे का भाग। पन्ना।

पानी=जल। चमक। इज़्ज़त।

प्रभाव=सामर्थ्य। असर। महिमा। दबाव।

पार्थिव=पृथिवी संबंधी। राजसी। मिट्टी का शिवलिङ्ग।

पारावार=समुद्र। हद।

बहार=वसंत ऋतु। आनंद। रौनक़।

मधु=शहद। शराब। वसंत ऋतु।

मल=मैल। विष्ठा। पाप।

मूक=गूँगा। चुप। विवश।

लक्ष्य=निशाना। उद्देश्य।

लंघन=लाँघने की क्रिया। उपवास।

वर्ण=रंग। जाति। अक्षर।

वार=सप्ताह का दिन; उ० रविवार, सोमवार। आघात, आक्रमण।

विधि=ब्रह्मा। प्रणाली। भाँति।

विरोध=वैर । विपरीत भाव ।

विषम=जो सम न हो । बहुत कठिन । भीषण ।

विषय=वह जिस पर कुछ विचार किया जाय । भोग विलास ।

शरीर=देह । नटखट ।

शुद्ध=पवित्र । ठीक । जिसमें मिलावट न हो ; ख़ालिस ।

शेर=व्याघ्र । उर्दू कविता के दो चरण ।

श्रुति=सुनने की इन्द्रिय; कान । किंवदन्ती । वेद ।

सर=तालाब । सिर । पराजित । उ० सिपाही ने अकेले डाकुओं को
सर किया ।

स्थूल=मोटा । सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य ।

सेहत=सुख । रोग से छुटकारा ।

हरकत=गति । चेष्टा । नटखटी ।

हसरत=अफ़सोस । हार्दिक कामना ।

हस्ती=हाथी । अस्तित्व; उ० ईश्वर के आगे मनुष्य की हस्ती ही क्या है ।

हीन=परित्यक्त । रहित । निकृष्ट । दीन ।

हृद्य=हृदय का । स्वादिष्ट ।

हेम=बर्फ़ । स्वर्ण ।

२—विपरीतार्थक शब्द।

जिन शब्दों के पहले सु लगा हो, उनमे बहुधा सु के स्थान पर कु लगाकर विपरीतार्थक बनाया जाता है; जैसे—

सुकर्म—कुकर्म
सुराज—कुराज
सुपात्र—कुपात्र
सुपथ—कुपथ
सुमार्ग—कुमार्ग, इत्यादि।

बहुधा सु के स्थान पर दुर या दुस् लगा कर विपरीतार्थक बनाया जाता ; जसे—

सुलभ—दुर्लभ
सुकर्म—दुष्कर्म
सुगंध—दुर्गन्ध
सुकर—दुष्कर
सुगम—दुर्गम, इत्यादि।

जिन शब्दों के आदि में स्वर हो उनमें अन् लगाकर विपरीतार्थक बनाया जाता है; जसे—

अन्त—अनन्त
इष्ट—अनिष्ट
आदि—अनादि
आदर—अनादर
उपस्थित—अनुपस्थित
उपयुक्त—अनुपयुक्त, इत्यादि।

जिन शब्दों के आदि में व्यंजन हो उनमें बहुधा अ लगाकर विपरीतार्थक बनाया जाता है; जैसे—

सुख—असुख

यश—अयश

सुन्दर—असुन्दर

ज्ञान—अज्ञान

जेय—अजेय, इत्यादि ।

जिन शब्दों के आदि में स उपसर्ग हो, उनमें स के स्थान पर बहुधा निर् या निस् लगाकर विपरीतार्थक बनाया जाता है; जैसे—

साकार—निराकार

सविकार—निर्विकार

सजीव—निर्जीव

सकाम—निष्काम

सदोष—निर्दोष, इत्यादि ।

नीचे लिखे शब्द उपसर्गों के संयोग या परिवर्त्तन से विपरीतार्थक हो गये हैं :—

अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुराग	विराग
आदान	प्रदान
उपकार	अपकार
उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्कृष्ट	निकृष्ट

उन्नति	अवनति
क्रय	विक्रय
मान	अपमान
यश	अपयश
संयोग	वियोग
सम्पद्	विपद्, इत्यादि ।

नीचे लिखे शब्द केवल अर्थ के कारण विपरीतार्थक हैं—

अपना	पराया
आदि	अन्त
कोमल	कठिन
जड़	चेतन
जल	थल
जीवन	मरण
दाता	कृपण
पाप	पुण्य
भला	बुरा
मालिक	नौकर
राजा	प्रजा
रोना	हँसना
विधि	निषेध
सृष्टि	प्रलय
स्थावर	जंगम

सुन्दर	कुरूप
सन्धि	विग्रह
हर्ष	विषाद
ह्रस्व	दीर्घ

३—ऊनार्थक शब्द

ऊनार्थक शब्दों से लघुता का बोध होता है; जैसे, पहाड़ी=छोटा पहाड़; पलँगड़ी=छोटा पलंग; ढोलकी=छोटी ढोलक, इत्यादि।

अकारान्त या आकारान्त शब्दों के अन्त में बहुधा अ या आ के बदले ई लगा कर ऊनार्थक बनाया जाता है; जैसे—

काठ	काठी (काठ का छोटा टुकड़ा)
कुर्ता	कुर्ती
गगरा	गगरी
घंटा	घंटी
ढकना	ढकनी
नद	नदी
पहाड़	पहाड़ी
पिंडा	पिंडी
पिटारा	पिटारी
मटका	मटकी
रस्सा	रस्सी, इत्यादि।

बहुधा शब्दों में अन्य परिवर्त्तनों के साथ या जोड़ कर ऊनार्थक बनाया जाता है; जैसे :—

कुटी	कुटिया
चूहा	चुहिया
ताल	तलैया
नाद (पशुओं के खाने का बड़ा बर्त्तन)	नदिया (चौड़े मुंह का छोटा बर्त्तन)
फोड़ा	फुड़िया
लोटा	लुटिया
हाँड़ी	हँड़िया

कुछ संस्कृत शब्दों में क (स्त्रीलिङ्ग शब्दों में का) जोड़ कर ऊनार्थक बनाया जाता है; जैसे :—

कन्या	कन्यका
कली	कलिका
पिंड	पिंडिका
पुत्र	पुत्रक
लता	लतिका
वृक्ष	वृक्षक

कुछ शब्दों से दो दो ऊनार्थक शब्द बनते हैं; जैसे :—

अँगरखा	अंगा	अँगिया
खाट	खटिया	खटोला
गट्ठर	गठरी	गठरिया

डब्बा	डिब्बी	डिबिया
ढोल	ढोलक	ढोलकी
बाग	बगीचा	बगीची

कुछ भिन्न प्रकार के ऊनार्थक शब्द :—

आँगन	अँगनई
आँत	अँतड़ी
कन	कनकी
कोठा	कोठरी
खाज	खुजली
खाजा (एक तरह का मिष्टान्न)	खजली
घर	घरौंदा
चाम	चमोटी (चाम का छोटा टुकड़ा)
चोर	चोट्टा
टीका, टिकिया	टिकली (बेंदी; औषध की छोटी गोली)
डफ	डफली
दु:ख	दु:खड़ा
दीया	दियरी
पलंग	पलँगड़ी
पुस्तक	पुस्तिका
बिल्ली	बिलौटा

मोट	मोटरी
रोआँ	रोंगटा
लट्ठ	लाठी
सन्दूक़	सन्दूकची
साँप	सँपोला
सूप	सुपली
हिरन	हिरनौटा

४—कई शब्दों के बदले एक शब्द।

वह जिसमें तुरत सोचने की शक्ति हो=प्रत्युत्पन्नमति

वह जिसकी बुद्धि कुश की नोक के समान तेज़ हो=कुशाग्रबुद्धि

वह जिसकी दृष्टि दूर तक जाय (अर्थात् जो दूर तक सोचे)=दूरदर्शी, अग्रशोची, दूरंदेश।

वह जो सबों को बराबर (एक समान) देखे=समदर्शी

वह जिसकी स्त्री मर गई है=विधुर

वह (स्त्री) जिसका पति मर गया हो=विधवा, मृतभर्तृका।

वह जो एक ही समय में वर्तमान हो=समसामयिक; उ० अकबर और एलिज़ाबेथ समसामयिक थे।

वह (स्त्री) जिसे सूर्य्य भी न देख सके=असूर्यपश्या

वह जिसकी प्रतिज्ञा दृढ़ है=दृढ़प्रतिज्ञ

वह जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त की है=लब्धप्रतिष्ठ

वह जिसने चित्त (मन) दिया (लगाया) है=दत्तचित्त

वह जो किये हुए उपकार को माने=कृतज्ञ

वह जो किये हुए उपकार को न माने=कृतघ्न

वह जिसकी बोली मीठी है=मिष्टभाषी, मधुरभाषी, मिठबोला ।—

वह जो कम बोलता हो=मितभाषी

वह जिसका रंग खराब है=बदरंग

वह जिसकी बाहु लम्बी हो=दीर्घबाहु

वह जिसकी बाहु बड़ी हो=महाबाहु

वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो=विशेषज्ञ

वह जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त हो=प्रतिनिधि

वह जिसका दमन कठिन हो=दुर्दम्य, दुर्दमनीय, दुर्दान्त, दुराधर्ष, दुर्धर्ष ।

वह जिसका तेज चला गया हो=निस्तेज

वह जिसकी प्रभा विद्युत के समान हो=विद्युत्प्रभ

वह जो भेदा या तोड़ा न जा सके=दुर्भेद्य

वह (विषय) जो विचार में आ सकता हो=विचारगम्य

वह बात जो बार बार कही जाय=पुनरुक्ति

वह उपकार जो किसी उपकार के बदले किया जाय=प्रत्युपकार

वह बात जो कान के पास धीरे धीरे कही जाय=कानाफूसी

जिसका पहले से अनुमान न हो=अतर्कित

जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित कर लिया गया

हो=नामज़द; उ० वह सरकार की ओर से बोर्ड के मेम्बर नामज़द हुए हैं।

जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो=विवक्षित

जिसकी उपमा न हो= अनुपम, निरुपम।

जिसकी आशा न की गई हो=अप्रत्याशित

जिसकी आयु कम हो=अल्पायु, अल्पजीवी।

जिसका निवारण कठिन हो=दुर्निवार्य्य

जिसका निवारण न हो सके=अनिवार्य्य

जिसका अनुभव इन्द्रियों के द्वारा न हो=अगोचर, अतीन्द्रिय

जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो=कृतकार्य्य, कृतकृत्य*, कृतार्थ*।

जिस (वृक्ष) के पत्ते झड़ गये हों=अपर्ण

जो नापा न जा सके=अपरिमित, अपरिमेय।

जो प्रमाण से न सिद्ध हो सके=अप्रमेय

जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो
जिसमें कोई अच्छा गुण न हो } =निर्गुण

जो इच्छा के अधीन हो=इच्छाधीन, वैकल्पिक, ऐच्छिक।

जो दूसरे के स्थान पर अस्थायीरूप से काम करे=स्थानापन्न; उदा० स्थानापन्न सभापति।

---

*ये शब्द बहुधा नम्रता दिखलाने के लिए व्यवहार में आते हैं, जैसे, आज आप के दर्शनों से मैं कृतार्थ हो गया। आप की कृपा पाकर मैं कृतकृत्य हो गया।

जो खाने के योग्य हो=खाद्य, भक्ष्य।

जो पीने के योग्य हो=पेय

जो एक स्थान से हट कर दूसरे स्थान को गया हो=स्थानान्तरित, उदा० कमिटी का दफ़्तर यहाँ से चौक पर स्थानान्तरित हो गया है।

जो अंगारे के समान लाल हो=लालअंगारा।

जो भुजंग के समान काला हो=कालाभुजंग।

करने की इच्छा=चिकीर्षा

जीतने की इच्छा=जिगीषा

तरने की इच्छा=तितीर्षा

देखने की इच्छा=दिदृक्षा

पाने की इच्छा=लिप्सा

जानने की इच्छा=जिज्ञासा

खाने की इच्छा=बुभुक्षा

नोट—इच्छा रखनेवाले के अर्थ में :—चिकीर्षु, जिगीषु, तितीर्षु, दिदृक्षु, लिप्सु, जिज्ञासु, बुभुक्षु।

शक्ति के अनुसार=यथाशक्ति, यथासाध्य।

विधि के अनुसार=यथाविधि

समझ के मुताबिक=यथामति

स्थान के अनुसार=यथास्थान

क्रम के अनुसार=यथाक्रम

जहाँ तक हो सके (संभावना के अनुसार)=यथासंभव

आत्मा से संबंध रखनेवाला=अध्यात्म

जन्मभर = आजन्म

जीवन भर = आजीवन

मृत्यु तक=आमरण

आँखों के आगे=प्रत्यक्ष

आँखों से परे = परोक्ष

पत्नी के सहित=सपत्नीक

कष्ट से हो सकनेवाला=कष्टसाध्य

कई व्यक्तियों में से एक=अन्यतम, उ० वे कार्यकारिणी के अन्यतम सदस्य हैं।

वर्त्तमान से पहले का=भूतपूर्व; उदा० भूतपूव मंत्री।

बिना पलक झपकाए=निर्निमेष, अपलक, एकटक।

शिव का उपासक या शिव संबंधी=शैव

विष्णु का उपासक या विष्णु संबंधी=वैष्णव

शक्ति का उपासक या शक्ति संबंधी=शाक्त

स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान=प्रत्यभिज्ञान

जो लौट आया हो=प्रत्यागत

जो आया हो=आगत

किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का उद्योग=प्रतिस्पर्द्धा

बहुत बढ़ा चढ़ा कर कहना = अत्युक्ति

गीदड़ के समान भभकी दिखाने की क्रिया = गीदड़भभकी

बन्दर के समान घुड़की दिखाने की क्रिया=बन्दरघुड़की

बिना सन्देह के=निस्सन्देह, बेशक।

सिर से पैर तक=आपादमस्तक

प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा=प्रमाणकोटि

अन्य से संबंध न रखनेवाला=अनन्य; उदा० वह कृष्ण का अनन्य भक्त है=कृष्ण को छोड़ और किसी की भक्ति नहीं करता।

बिना परिश्रम के=अनायास; उदा० यह काम अनायास हो गया। चारो फल उन्हें अनायास ही प्राप्त हो गए।

जो सब में एक सा पाया जाय=सर्वसामान्य, सर्वसाधारण। उदा० वीरता जापानियों का सर्वसामान्य गुण है।

५—अशुद्ध शब्द

बहुधा ठेठ हिन्दी के शब्दों का संयोग संस्कृत या अरबी, फारसी के शब्दों या प्रत्ययों के साथ किया जाता है। ऐसे प्रयोग अशुद्ध हैं। पर नीचे दिये हुए इस प्रकार के कुछ शब्द व्यवहार में आने लगे हैं :—

अशुद्ध	शुद्ध
अकाट्य	अखण्डनीय
उपरोक्त	उपर्युक्त
खोजपूर्ण	अनुसंधानपूर्ण
चुनिन्दा	चुने हुए
सराहनीय	श्लाघनीय

नीचे लिखे शब्द दोबारा प्रत्यय लगाकर संज्ञा बनाए गये हैं, इसलिए वे अशुद्ध हैं :—

अशुद्ध	शुद्ध
आधिक्यता	आधिक्य, अधिकता

कौशलता	कौशल, कुशलता ।
बाहुल्यता	बाहुल्य, बहुलता ।
सख्यता	सख्य
साम्यत्व	साम्य, समता ।
सौख्यता	सौख्य, सुख ।
सौजन्यता	सौजन्य, सुजनता ।
सौन्दर्य्यता	सौन्दर्य्य, सुन्दरता ।

नीचे लिखे शब्द दोबारा प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाये गये हैं, इसलिए वे अशुद्ध हैं :—

अशुद्ध	शुद्ध
आवश्यकीय	आवश्यक
पूज्यनीय	पूज्य, पूजनीय ।
मान्यनीय	मान्य, माननीय ।
षष्ठम	षष्ठ
सम्बन्धीय	सम्बन्धी

नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ हैं :—

अशुद्ध	शुद्ध
जागृत	जागरित, जाग्रत ।
जागृति, जाग्रति	जागर्त्ति
त्रिवार्षिक	त्रैवार्षिक
प्रमाणिक	प्रामाणिक
पाश्चिमात्य	पाश्चात्य

अशुद्ध	शुद्ध
पौर्वात्य	प्राच्य, पूर्वीय
बुद्धिवान्	बुद्धिमान्
भगीरथी	भागीरथी
भाग्यमान्	भाग्यवान्
लक्ष्मीमान्	लक्ष्मीवान्
व्यवहारित	व्यवहृत
संसारिक	सांसारिक
समाह्निक	सामाह्निक

नोट—इक प्रत्यय लगाने पर शब्द के प्रथमवर्ण के अ का आ, इ का ऐ, ए का ऐ, उ का औ, ओ का औ और औ का आव हो जाता है; जैसे, व्यवहार व्यावहारिक; दिन-दैनिक; इतिहास-ऐतिहासिक, सेना—सैनिक, लोक—लौकिक, पुराण—पौराणिक, नौ—नाविक, इत्यादि ।

(२) वान् और मान् प्रत्ययों के प्रयोग का साधारण नियम यह है कि अकारान्त या आकारान्त संज्ञाओं के पश्चात् वान् आता है और अन्यत्र मान्; जैसे, धनवान्, गुणवान्, विद्यावान, ज्ञानवान्, श्रीमान्, धीमान्, मतिमान् इत्यादि । किन्तु इस नियम के अपवाद भी अनेक हैं; यथा, लक्ष्मीवान् आदि ।

समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ :—

अशुद्ध	शुद्ध
एकत्रित	एकत्र

अशुद्ध	शुद्ध
कालीदास	कालिदास
दिवारात्रि	दिवारात्र
निर्दोषी	निर्दोष
निधनी	निधन
निरोगी	नीरोग
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल
भ्रातागण	भ्रातृगण
मनोराज	मनोराज्य
लब्धप्रतिष्ठित	लब्धप्रतिष्ठ
व्याकुलित	व्याकुल
सकुशलपूर्वक	सकुशल, कुशलपूर्वक।
हतोत्साहित	हतोत्साह

नोट—संस्कृत के इन् प्रत्ययान्त शब्दों का व्यवहार हिन्दी में बहुधा विभक्त्यन्त शब्दों के समान होता है; जैसे, योगिन्=योगी; भोगिन=भोगी, इत्यादि। समास होने पर न् का लोप हो जाता है, पर इ ज्यों का त्यों बना रहता है। अतः ऐसे शब्दों का समास करने में इ का ई नहीं करना चाहिए, जैसे, 'योगीराज' अशुद्ध है; इसके बदले योगिराज होना चाहिए।

सन्धि सम्बन्धी अशुद्धियाँ :—

अशुद्ध	शुद्ध
अत्योक्ति	अत्युक्ति
तदोपरान्त	तदुपरान्त
दुरावस्था	दुरवस्था
वनोवास	वनवास
शिरमणि	शिरोमणि
सन्मुख	सम्मुख
सन्मान	सम्मान

हलन्त संबंधी अशुद्धियाँ :—

अशुद्ध	शुद्ध
अर्थात	अर्थात्
उत्पात्	उत्पात
तड़ित	तड़ित्
भविष्यत	भविष्यत्
महान	महान्
विद्वान	विद्वान्
श्रीमान	श्रीमान्

नोट—मान्, वान्, वत्, सात् और चित् प्रत्ययान्त शब्द हलन्त होते हैं; जैसे, आयुष्मान्, बलवान्, मातृवत्, भस्मसात्, कदाचित्, इत्यादि।

कुछ अन्य प्रकार के अशुद्ध शब्द :—

अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी
अहिल्या	अहल्या
आधीन	अधीन
आशिर्वाद	आशीर्वाद
चिन्ह	चिह्न
द्वारिका	द्वारका
पैत्रिक	पैतृक
मिश्र	अमिश्र
स्मसान	स्मशान
सुलोचनी	सुलोचना
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप

दरअसल, दरहक़ीकत, फिलहाल, आदि शब्दों के बाद कोई विभक्ति (में, पर, इत्यादि) नहीं जोड़ना चाहिए, क्योंकि दर और फ़िल स्वयं ही विभक्ति का काम करते हैं; जैसे, दर असल (असल में) यह नक़ली हीरा है। फिलहाल (हाल में) तुम्हारा यहाँ रहना ठीक है।

तृतीय परिच्छेद

कुछ विशेष नियम

१—वचन

(१) भाववाचक और गुणवाचक संज्ञाओं का प्रयोग प्रायः एकवचन में होता है; जैसे, सांसारिक वस्तुओं का सौन्दर्य्य क्षणभंगुर है। मूर्खों की मित्रता की अपेक्षा बुद्धिमानों की शत्रुता अधिक अच्छी है। इन वाक्यों में सौन्दर्य्य, मित्रता और शत्रुता एकवचन में आए हैं।

नोट—(१) जहाँ संख्या या प्रकार का बोध हो वहाँ गुणवाचक संज्ञाएँ बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं; जैसे, इस लाठी में बहुत सी खूबियाँ हैं। ताजमहल में अनेक विशेषताएँ हैं। मादक-द्रव्यों में अनेक दोष हैं।

(२) दिल, मन और हृदय प्रायः एकवचन में व्यवहृत होते हैं।

(२) समूहवाचक संज्ञाएँ प्रायः एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; जैसे, भारत की जनता स्वाधीनता का महत्त्व नहीं समझती।

राजा को प्रजा पर अत्याचार नहीं करना चाहिए। जंगल में हाथियों का एक झुंड फिरता था। इन वाक्यों में जनता, प्रजा और झुंड समूहवाचक संज्ञाएँ हैं तथा एकवचन में हैं।

नोट—यदि अनेक समूहों का बोध हो तो समूहवाचक संज्ञाएँ बहुवचन मे आती हैं; जैसे, यूरोपीय देशों की जनताएँ स्वाधीनता का महत्व भलीभाँति समझती हैं। इङ्गलैंड और फ्रांस की प्रजाओं पर अधिक कर नहीं है। जंगल में हाथियों के कई झुंड फिर रहे थे।

'सौदा' शब्द हमेशा एकवचन में रहता है।

(३) द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे, भारत से बहुत सोना विदेशों को जाता है। उन के पास बहुत धन है। न होगा नौ मन तेल न राधा नाचेगी।

नोट—जब भिन्न भिन्न प्रकार के द्रव्यों का बोध हो तो द्रव्यवाचक संज्ञाएँ बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं; जैसे, सरसों, तिल आदि के तेल अच्छे होते हैं। भारत में कई तरह के लोहे मिलते हैं। अन्य धातुओं के मेल से कई तरह के सोने बनाए जाते हैं।

(४) जाति-भर का बोध कराने के लिए संज्ञाओं का प्रयोग प्रायः एकवचन में होता है; जैसे, सिंह पशुओं का राजा है। हाथी सवारी के काम में आता है। मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है।

(५) आँख, कान, उँगली, पैर, दाँत आदि शब्द, जिनसे दो

या अधिक अवयवों या इन्द्रियों का बोध हो, प्रायः बहुवचन में आते हैं; जैसे, आप की आज्ञा सिर आँखों पर है। यह बात राजा के कानों तक पहुंच गई। मन्त्री राजा को उँगलियों पर नचाता है। बुढ़ापे में बाल सफ़ेद हो जाते हैं।

नोट—(१) ऐसे शब्दों से एकवचन का बोध कराने के लिये एकवचन में भी उनका प्रयोग होता है; जैसे, बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय। यहाँ 'बाल' से 'एक बाल' का बोध होता है।

एकवचन का बोध कराने के लिये ऐसे शब्दों के पहले प्रायः एकवचन सूचक शब्द लगा देते हैं; जैसे, मेरी दाहिनी आंख खराब है। उनका एक दाँत टूट गया है। उनके सिर का एक बाल भी नहीं पका है।

ये शब्द कभी कभी मुहावरे में एकवचन में भी आते हैं।

(२) 'हाथ' शब्द मुहावरे में बहुधा एकवचन में आता है; जैसे, मेरा हाथ खाली है। इस काम में उनका हाथ है। किन्तु करणकारक में बहुवचन में आता है; जैसे, मेरे हाथों यह काम हुआ है। मेरे हाथों पीटे जाओगे।

(६) नीचे लिखे शब्द अर्थ के अनुसार बहुवचन हैं :—

पुरखा—उनके पुरखे कभी बनारस में रहते थे।

बापदादा—उनके बापदादे नवाबों के यहाँ अच्छे ओहदों पर थे।

लोग—लोग विद्या का नहीं, धन का आदर करते हैं।

नोट—'पुरखा' और 'बापदादा' कर्त्ताकारक में (आगे विभक्ति न रहने पर) अविकृत रूप में भी आते हैं; जैसे, उनके पुरखा नामी चित्रकार थे। उनके बापदादा विद्याव्यसनी थे।

(७) नीचे लिखे शब्द प्रायः बहुवचन में आते हैं :—

चौपाया—चौपाये मनुष्यों से अधिक नीरोग रहते हैं।

दर्शन—आप के दर्शन पाकर मैं कृतार्थ हो गया।

प्राण—हवाई जहाज चलानेवालों के प्राण हमेशा संकट में रहते हैं।

नोट—(१) 'चौपाया' विशेषण होने पर विशेष्य के अनुसार आता है, जैसे, गाय चौपाया जानवर है। गाय, भैंस और ऊँट चौपाये जानवर हैं।

(२) 'होश' कर्त्तव्यज्ञान के अर्थ में कभी कभी बहुवचन में प्रयुक्त होता है; जैसे, यह खबर सुनते ही उनके होश उड़ गए। किन्तु चेतना के अर्थ में बहुधा एकवचन में प्रयुक्त होता है; जैसे, आध घंटे के बाद उन्हें होश हुआ।

(८) नीचे लिखे शब्द करणकारक में बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं :—

जाड़ा—भिखारी जाड़ों (जाड़े से) ठिठुर रहा है।

प्यास—प्यासों (प्यास से) मेरी जान जा रही है।

भूख—अकाल में लोग भूखों (भूख से) मरते हैं।

(९) आदर के लिये बहुधा बहुवचन आता है; जैसे, रामबाबू विद्वान् आदमी हैं। वह आज आवेंगे।

(१०) ओकारान्त और औकारान्त शब्द, जिनके अन्त में अनुस्वार हों, एकवचन और बहुवचन में समान रहते हैं; जैसे, गौं, जोखों, दौं, सरसों, इत्यादि।

(११) ऐसे स्त्रीलिङ्ग शब्द जिनके अन्त में 'या' हों, केवल चन्द्रबिन्दु लगाकर बहुवचन बनाए जाते हैं; जैसे चिड़िया—चिड़ियाँ, लुटिया—लुटियाँ; बुढ़िया=बुढ़ियाँ; गुड़िया—गुड़ियाँ; डिबिया—डिबियाँ, इत्यादि।

२—लिंग

पुल्लिग—

(१) ऊनवाचक संज्ञाओं को छोड़, ठेठ हिन्दी की आकारान्त संज्ञाएँ पुल्लिंग है; जैसे, माथा, तलवा, कपड़ा, पैसा, रुपया, इत्यादि।

(२) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ना, आव, पन या पा हो, वे पुल्लिंग हैं; जैसे, गाना, बहाव, बड़प्पन, बुढ़ापा, इत्यादि।

(३) आन प्रत्यय युक्त कृदन्त संज्ञाएँ पुल्लिंग हैं; जैसे, लगान, मिलान, नहान, उठान, इत्यादि।

स्त्रीलिंग—

(१) ऊनवाचक याकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं—जैसे, लुटिया, खटिया, डिबिया, इत्यादि।

(२) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ट, वट या हट हो वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे, सजावट, चिकनाहट, बनावट, आहट, झंझट, इत्यादि।

३—वचन और लिंग के विकार

(१) बहुधा पुल्लिंग शब्दों का (जब वे कर्त्ताकारक में हों और उनके आगे कारक की कोई विभक्ति न हो) बहुवचन में भी अविकृत रूप रहता है; जैसे, मैदान में बड़े बड़े वृक्ष हैं। जंगली पशु बलवान होते हैं। हाथी बुद्धिमान् होते हैं।

नोट—आकारान्त पुल्लिंग शब्दों में बहुधा विकार होता है; जैसे, उनके पास तीन बकरे हैं। हम सब ईश्वर के बंदे हैं।

अपवाद—काका, मामा, नाना, बाबा, सूरमा, मुखिया, अगुआ, योद्धा आदि शब्द कर्त्ताकारक में (आगे विभक्ति न रहने पर) दोनों वचनों में अविकृत रहते हैं।

(२) जमा, उमदा और ज़रा हमेशा अविकृत रूप में रहते हैं; जैसे, मेरे कुछ रुपये बैंक में जमा हैं। तरकारी उमदा है। ज़रा सी बात पर वह बिगड़ गए।

नोट—'ताज़ा' के विकृत रूप 'ताज़े' और 'ताज़ी' व्यवहार में आने लगे हैं, यद्यपि कि ऐसे प्रयोग अशुद्ध हैं। 'ताज़ी' का अर्थ है 'अरबी घोड़ा;' पर 'ताज़ी हवा', 'ताज़ी मिठाई', ऐसा प्रयोग होने लगा है।

(३) कलकत्ता, दरभंगा, छपरा, पटना, आगरा, आदि कुछ देशी संस्थानवाचक आकारान्त शब्दों का, कर्त्ताकारक को छोड़ अन्य कारकों में बहुधा विकृत रूप (आ के स्थान में ए) आता है; जैसे, मैं पटने से आ रहा हूं। वे आगरे गये हैं।

चतुर्थ परिच्छेद

वाक्य प्रकरण

१—वाक्यभेद

(१) पृथक्करण की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं, साधारण, संयुक्त और मिश्र।

साधारण—साधारणवाक्य वह है जिस में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय* हो, जैसे, घोड़ा तेज़ दौड़ता है। राम की गाय खूब दूध देती है।

मिश्र—मिश्र वाक्य वह है जिसमें मुख्य उद्देश्य और विधेय के सिवा एक या अधिक समापिका-

---

* किसी विषय पर कुछ कहने के लिए ही वाक्य की सृष्टि हुई है। इसलिए वाक्य स्वतः दो हिस्सों में बँटा हुआ है, (१) विषय, जिस पर कुछ कहा जाय; (२) विषय के सम्बन्ध में जो कुछ कहा जाय। इन्हीं दोनों को क्रम से उद्देश्य और विधेय कहते हैं; जैसे, राम खाता है। इस वाक्य में 'राम' उद्देश्य है, और 'खाता है' विधेय।

क्रियायें † रहती हैं; जैसे, जबतक ईश्वर की इच्छा नहीं होती, कोई किसी का बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

संयुक्त—संयुक्तवाक्य वह है जिसमें एक से अधिक वाक्यों का समावेश हो; जैसे, राम और श्याम अच्छे लड़के हैं। राम या श्याम यहाँ आवेगा। राम में अलौकिक शक्ति थी; इसलिये रावण जैसे प्रतापी राजा को भी उनके आगे मुँहकी खानी पड़ी।

(२) अर्थ की दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं:—

(१) विधानार्थक—जिससे किसी बात का होना पाया जाय; जैसे, राम अच्छा लड़का है।

(२) निषेधवाचक—जिससे किसी विषय का अभाव सूचित हो; जैसे उनके पास रुपये नहीं हैं।

(३) आज्ञार्थक—जिससे आज्ञा, विनती या उपदेश का अर्थ सूचित हो; जैसे, यहाँ आओ।

---

† क्रिया में वाच्य, काल, अर्थ, पुरुष, लिंग और वचन के कारण विकार होते हैं। जिस क्रिया में ये विकार पाये जाते हैं और जिसके द्वारा विधान किया जा सकता है, उसे समापिका क्रिया कहते हैं; "राम आता है" इस वाक्य में "आता है" समापिका क्रिया है; क्योंकि इसमें काल, पुरुष, लिंग आदि के कारण विकार पाया जाता है, और वह राम के संबंध में विधान करता है।

वहाँ मत जाना। झूठ मत बोलो।

(४) प्रश्नार्थक—जिससे प्रश्न का बोध हो; जैसे, आप कब तक आवेंगे?

(५) विस्मयादिबोधक—जिससे विस्मय, शोक, हर्ष, आदि सूचित हों; जैसे, कैसा सुन्दर दृश्य है! शोक! तिलक अब न रहे! अहा! आप आ गए!

(६) इच्छाबोधक—जिससे इच्छा या आशीष सूचित हो; जैसे, भगवान् दुश्मन का भी भला करे। तुम फलो फूलो।

(७) संदेह सूचक—जिससे संदेह या संभावना प्रकट हो; जैसे, श्याम आता होगा। आज शायद वह आवें।

(८) संकेतार्थक—जिससे संकेत या शर्त्त सूचित हो; जैसे, आप कहें तो मैं जाऊँ। राम न आता तो यह काम न होता। संकेतार्थक वाक्य में एक कार्य्य दूसरे पर आश्रित रहता है।

नोट—निषेधवाचक वाक्य बनाने के लिए विधानार्थक वाक्य में केवल 'नहीं' जोड़ दिया जाता है; जैसे, राम के पास रुपये हैं—राम के पास रुपये नहीं हैं।

किन्तु निषेधवाचक वाक्य से विधानार्थक वाक्य दो प्रकार से बनाया जा सकता है; (१) 'नहीं' हटा कर,

(२) विपरीतार्थक शब्द का प्रयोग कर। 'नहीं' हटा कर विधानार्थक वाक्य बनाने से अर्थ में विपरीतता आ जाती है; पर विपरीतार्थ शब्द के द्वारा विधानार्थक वाक्य बनाने से अर्थ में अन्तर नहीं पड़ता; जैसे, 'राम धनी नहीं है' इस वाक्य से 'नहीं' निकाल देने पर 'राम धनी है' यह वाक्य विधानार्थक हो जाता है, लेकिन अर्थ में विपरीतता आ जाती है। यदि विपरीतार्थक शब्द का प्रयोग कर 'राम निर्धन है' ऐसा वाक्य बनावें तो निषेधवाचक और विधानार्थक वाक्यों के अर्थ में विशेष अन्तर नहीं होता।

पिछले प्रकार से विधानार्थक वाक्य बनाने के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि अर्थ में अन्तर न पड़ने पावे; जैसे, 'राम आता नहीं है' इसका 'राम जाता है' ऐसा लिखना ठीक न होगा।

—:o:—

२——पदक्रम

हिन्दी में पदक्रम का साधारण नियम यह है कि पहले कर्त्ता, तब कर्म, और अन्त में क्रिया आती है; जैसे, 'राम घर जाता है' इस वाक्य में 'राम' कर्त्ता, 'घर' कर्म और 'जाता है' क्रिया है।

लेकिन वक्ता या लेखक के भाव के अनुसार बहुधा उपर्युक्त क्रम भंग हो जाता है; जैसे, आता ही तो था मैं। उसे बुलाना मत। यह काम मैं करूँगा।

पद क्रम में अन्तर पड़ने से कभी कभी वाक्यों के अर्थ में कुछ अन्तर पड़ जाता है। ऐसे वाक्यों के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं :—

(१) मैंने मिठाई नहीं खाई=(साधारण),
मिठाई मैंने नहीं खाई=खाने वाला कोई दूसरा होगा, मैं नहीं हूं।

(२) तुम उनके कौन होते हो ?=तुम्हारा उनसे क्या रिश्ता है ?
तुम उनके होते कौन हो ?=तुम्हारा उनसे कोई रिश्ता नहीं है।

(३) मेरे यहाँ फल हैं=(साधारण)
फल मेरे यहाँ हैं=वे फल जिनका सम्बन्ध पहले की घटनाओं से है।

(४) उनसे भी मिल लो=औरों से मिल चुके हो, उनसे भी मिल लो।
मिल लो उनसे भी=उनसे मिलना आवश्यक तो नहीं है, पर तो भी मिल लो।

(५) वह मिहनत करे और तुम मौज करो=मिहनत करना उसका काम है, और मौज करना तुम्हारा काम।
मिहनत करे वह और मौज करो तुम !=वह मिहनत करता है, उसे ही मौज करना चाहिए, तुम्हें नहीं।

(६) एक भेड़िया किसी स्थान पर नदी किनारे पानी पी रहा था=किसी स्थान विशेष में बहने वाली नदी के किनारे पानी पी रहा था।

एक भेड़िया नदी किनारे किसी स्थान पर पानी पी
रहा था=नदी के किनारे वर्त्तमान किसी स्थान-
विशेष पर पानी पी रहा था।

(७) किसी समय भारत का बोलबाला था=अब भारत का
नहीं, किसी दूसरे देश का बोलबाला है।

भारत का किसी समय बोलबाला था=अब भारत का
बोलबाला नहीं है, अब वह हीनावस्था में है।

(८) गाय तो मेरी है=यह गाय विशेष मेरी है, दूसरे की नहीं।
मेरी तो गाय है=भैंस, घोड़ा आदि पशु मेरे नहीं,
मेरी सिर्फ़ गाय है।
मेरी गाय तो है=मेरी गाय वर्त्तमान है।

(९) यह कलम किस की है ?=(साधारण)
यह है किस की कलम ?=इस कलम का वास्तविक
अधिकारी कौन है ?

(१०) आप चले जाइए=(साधारण)
चले आप जाइए=आप को चला जाना चाहिए, किसी
दूसरे को नहीं।

(११) राजा को झुकना नहीं चाहिये=राजा के लिए झुकना
उचित नहीं है।
झुकना राजा को नहीं चाहिए=यदि झुकना ही पड़े
तो अन्य लोगों को झुकना चाहिए, राजा
को नहीं।

(१२) मत जाइये=जाना निषिद्ध या अनुचित है।

जाइए मत=ठहरिए।

(१३) मेरी कलम यह है=इतनी कलमों में मेरी कलम यह है, और कलमें दूसरों की हैं।

यह मेरी कलम है=यह खास कलम मेरी है, दूसरे की नहीं।

(१४) आप यह बात मत कहिए=कोई दूसरी बात कहिए, यह विशेष बात मत कहिए।

यह बात आप मत कहिए=यह बात कोई दूसरा भलेही कहे, आप मत कहिए।

(१५) तुम पाठशाला जाओगे न ?=पाठशाला जाने का तुम्हारा निश्चय है न ?

तुम पाठशाला न जाओगे ?=तुम्हारे जाने का उद्देश्य पाठशाला है न ?

(१६) वह सोता कब था ?=वह सोता नहीं था।

वह कब सोता था ?=वह किस समय सोता था ?

नोट—बोलनेवाले के बोलने के ढंग से, किसी शब्दविशेष पर विशेष प्रकार से ज़ोर देने से, वाक्य का अर्थ बदल जाता है। 'वह कब सोता था' इसी वाक्य में यदि 'वह' पर ज़ोर दिया जाय तो इसका अर्थ हो जायगा—'वह नहीं सोता था, हाँ और लोग सोते थे।' शब्दों के विशेष उच्चारण द्वारा ऊपर दिये गए कई वाक्यों के अथ बदले जा सकते हैं।

अर्थ के ख़याल से नीचे लिखे शब्दों के स्थान का ध्यान रखना चाहिए :—

(१) तो, भी, ही, भर, तक और मात्र उन्हीं शब्दों के बाद देना चाहिये, जिन पर ज़ोर देना हो ; जैसे, राम भी यहाँ आवेगा। इस वाक्य में 'भी' से राम के आने का अवधारण होता है ; पर 'राम यहाँ भी आवेगा' इस वाक्य मे 'भी' से 'यहाँ' अर्थात् स्थान विशेष का अवधारण होता है।

(२) 'केवल' जिस शब्द के पहले आता है सिर्फ़ उसी से उसका संबंध होता है ; जैसे, केवल राम भोजन करेगा। राम केवल भोजन करेगा। पहले वाक्य में 'केवल' का सबंध 'राम' से है, और दूसरे में भोजन से।

(३) मारे, बिना, सिवा आदि कुछ अव्यय किसी शब्द के पहले या पीछे भी आ सकते हैं; जैसे, मारे काम के मुझे फ़ुर्सत नहीं थी; काम के मारे मुझे फ़ुर्सत नहीं थी। इसी प्रकार, राम के सिवा या सिवा राम के ; राम के बिना, बिना राम के।

(४) 'यद्यपि' का प्रयोग वाक्य के प्रारंभ में होता है; जैसे, यद्यपि तुम्हें विश्वास है कि सफल होगे, तौभी तुम्हें भरपूर परिश्रम करना चाहिए।

(५) निषेधवाचक अव्यय 'न' क्रिया के पूर्व आता है; प्रश्न-वाचक अव्यय 'न' वाक्य के अन्त में आता है; और अवधारण बोधक अव्यय 'न' जिस शब्द से अवधारण बोध कराना हो, उसके बाद आता है; जैसे, मैं न जाऊँगा। हरीश बाबू सकुशल हैं न? जान मेरी न जायगी, तुम्हें क्या?

(६) नहीं और मत क्रिया के पहले (कभी कभी पीछे भी) आते हैं; जैसे, आपने मिठाई नहीं खाई। आपने देखा नहीं। आप वहाँ मत जाइए। आप वहाँ जाइए मत।

२—अध्याहार

कभी कभी वाक्य में संक्षेप या गौरव लाने के लिये कुछ ऐसे शब्द छोड़ दिये जाते हैं, जो छोड़ दिये जाने पर भी वाक्य के अर्थ में सम्मिलित रहते हैं। भाषा के इस प्रयोग को अध्याहार कहते हैं; जैसे, तुम केवल अपनी ही ओटते हो। इस वाक्य मे 'अपनी ही' के बाद 'बात' शब्द छोड़ दिया गया है, लेकिन वह वाक्य के अथ में सम्मिलित है।

अध्याहार दो प्रकार का होता है—(१) पूर्ण (२) अपूर्ण।

पूर्ण अध्याहार में छोड़ा हुआ शब्द वाक्य के किसी भी भाग में नहीं आता; जेसे, हमारी उनकी अच्छी निभी। कुछ उनकी सुन लो, और कुछ अपनी कहलो।

अपूर्ण अध्याहार में छोड़ा हुआ शब्द एक बार पहले आ चुकता है, या पीछे आता है; जैसे राम का घोड़ा इतना अच्छा नहीं है जितना कि श्याम का (घोड़ा अच्छा है)। पानी तरल (होता है) और पत्थर ठोस होता है।

(१) पूर्ण अध्याहार।

(१) देखना, कहना और सुनना क्रियाओं के सामान्य वर्त्तमान और आसन्न भूतकालों में कर्त्ता बहुधा लुप्त रहता हैं; जैसे, (मैं)

देखता हूं, अब वह नहीं आवेगा। (मैंने) सुना है कि वह बीमार है। (नीतिज्ञों ने) कहा है, शत्रु का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए।

(२) विधिकाल में कर्त्ता बहुधा लुप्त रहता है; जसे, (तुम) ज़रा सुनो। (तुम) एक काम करो। (आप) बैठिये, मैं अभी आता हूं।

(३) सम्बन्ध कारक के बाद बात, हाल, संगति आदि अर्थ वाले विशेष्यों का बहुधा लोप हो जाता है; जैसे, इतने लोगों के बीच मेरी (बात) कौन सुनता है। जहाँ चारो इकट्ठे हों वहाँ का (हाल) क्या कहना। हमारी और उनकी (संगति) अच्छी निभी।

(४) 'होना' क्रिया के वर्त्तमान काल के रूप बहुधा कहावतों में, निषेधवाचक विधेय में तथा उद्गार में लुप्त रहते हैं; जैसे, दूर के ढोल सुहावने (होते हैं)। सज्जन किसी की बुराई नहीं करते (हैं)। महाराज की जय (हो)।

(५) समुच्चयबोधक 'कि', 'और' तथा 'इसलिए' कभी कभी लुप्त हो जाते हैं; जैसे, पुस्तक में लिखा है, झूठ नहीं बोलना चाहिए। मेरे पास एक पुस्तक है; वह बड़ी मोटी है। मेरी तबीयत खराब है; मैं स्कूल नहीं जा सकता।

(६) 'यदि' का कभी कभी लोप हो जाता है; जैसे, आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।

(१) अपूर्ण अध्याहार

अपूर्ण अध्याहार नीचे लिखे स्थानों में होता है :—

(१) यदि एक ही क्रिया या विशेषण का सम्बन्ध कई उद्देश्यों के साथ हो तो क्रिया या विशेषण का उल्लेख एक ही बार होता है;

जसे, आम, लीची, कटहल और जामुन अच्छे फल हैं। राम, श्याम, हरि और माधो दौड़ रहे हैं।

(२) यदि अनेक विशेषणों का एक ही विशेष्य हो तो विशेष्य का उल्लेख एक ही बार होता है; जैसे, लम्बा, गोरा और बलवान आदमी।

(३) शब्दों के समान विभक्तियों का भी अध्याहार हो जाता ह, जसे, राम, श्याम और हरि में ये गुण नहीं है।

(४) कर, वाला, मय, पूव आदि प्रत्ययों का भी कभी कभी अध्याहार हो जाता है, जैसे, देख और सुनकर; आने और जाने वाला; जल और थलमय प्रदेश; भक्ति तथा प्रेम पूवक।

पंचम परिच्छेद

वाक्य सम्बन्धी नियम

१—कारक

(१) यदि एक ही वाक्य में कई कर्त्ता या कर्म हों, और सभी एक ही कारक की विभक्ति वाले हों तो कारक की विभक्ति केवल अंतिम कर्त्ता में, या यदि उनका कोई समानाधिकरण शब्द हो तो समानाधिकरण शब्द में लगती है; जैसे, राम, श्याम और हरि ने भोजन किया। राम और कृष्ण, दोनों ने राक्षसों का संहार किया। मैंने यदु, हरि और माधव को बुलाया। तुमने बड़े और छोटे किसी की लाज नहीं रक्खी।

(२) यदि सकर्मक क्रियायें भूतकालिक कृदन्त * के रूप में हों तो उनके योग से कर्त्ता सप्रत्यय (कारक की विभक्ति के साथ) आता

---

* क्रिया के जिन रूपों का प्रयोग दूसरे शब्दभेदों (संज्ञा, विशेषण, आदि) के समान होता है, उन्हें कृदन्त कहते हैं। वास्तव में 'कृदन्त' का अर्थ है, 'कृत् हो अन्त में जिसके'। कृत् प्रत्यय वे हैं जिनसे धातु के रूप में विकार होता है; जैसे, 'जा' धातु से जाना, गया, आदि। 'भाग' धातु से, भागता, भागा, भागते, इत्यादि। भूतकालिक कृदन्त वे क्रियायें हैं जिनसे भूतकाल का अर्थ निकले और जिनके पीछे 'आ' (स्त्रीलिङ्ग में 'ई' तथा पुल्लिंग बहुवचन में 'ए') लगा हो; जैसे, भागा, भागी, खरीदा, खरीदी, भगाया, खरीदवाया, भगाये, खरीदे, खरीदवाये, देखे, इत्यादि।

है; जैसे, मैंने रोटी खाई। उसने एक घोड़ा खरीदा। राम ने पत्र लिखा। उपर्युक्त वाक्यों मे 'खाई', 'खरीदा' और 'लिखा' सकर्मक क्रियायें भूतकालिक कृदन्त के रूप में हैं, इसलिए कर्ता सप्रत्यय ('ने' विभक्ति के साथ) आए हैं।

नोट—(१) नहाना, छींकना, खांसना आदि अकर्मक क्रियाओं के सम्बन्ध में भी उपर्युक्त नियम लागू होता है, जैसे मैंने नहाया। आपने छींका। लड़के ने खांसा।

(२) बोलना, बकना, लाना, जनना आदि सकर्मक क्रियाओं के सम्बन्ध मे उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता; जैसे, वे बोले। तुम बके। आप बाज़ार से क्या लाए? स्त्री बच्चा जनी।

(३) वैयाकरणों के मत से भूलना, समझना आदि सकर्मक क्रियाओं के सम्बन्ध मे भी उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता; लेकिन 'उन्होंने मुझे भुला दिया', 'मैंने समझा, तुम से यह काम नहीं होगा' ऐसे प्रयोग बहुधा देखे जाते हैं।

(३) बहुधा अप्राणिवाचक कर्म अप्रत्यय आता है; जैसे, रोटी लाओ। तुम्हे अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। यहाँ 'रोटी' और 'पुस्तकें' के बाद 'को' विभक्ति लगाना अशुद्ध होगा।

(४) बुलाना, पुकारना, कोसना, सुलाना, जगाना आदि कुछ रूढ़ और यौगिक क्रियाओं के साथ सप्रत्यय कर्मकारक आता

है; जैसे, वह कुत्ते को बुलाता है। स्त्री बच्चे को सुलाती है। नौकर ने मालिक को जगाया, इत्यादि।

नोट—'मारना' क्रिया के साथ कर्मकारक के दोनों रूपों का प्रयोग होता है; जैसे, चोर ने लड़का मारा; चोर ने लड़के को मारा। किन्तु, 'चोर ने लड़का मारा' इस वाक्य मे 'लड़का मारा' का प्रयोग ठीक ऐसा ही मालूम होता है जैसा कि 'चूहा मारा', 'मछली मारी', आदि। 'मारना' के पहले 'को' देने से ताड़ना का अर्थ निकलता है; जैसे, चोर ने लड़के को मारा=चोर ने लड़के को पीटा। पर 'को' हटा देने से जान से मार डालने, या शिकार करने का अर्थ निकलता है।

(५) सम्बन्ध, स्वामित्व और सम्प्रदान के अर्थ में सम्बन्ध कारक की विभक्ति का 'के' रूप आता है; जैसे, मेरे एक बहिन हुई है (सम्बन्ध); जिसके आँखें न हों वह क्या जाने (स्वामित्व); ब्राह्मण यजमानों के राखी बाँधते हैं (सम्प्रदान); मैं आप के हाथ जोड़ता हूं (सम्प्रदान)। ऐसे स्थानों में 'के' के स्थान पर 'को' का प्रयोग करना अशुद्ध है; जैसे, 'मुझ को (या मुझे) एक लड़का हुआ है' के बदले 'मेरे एक लड़का हुआ है' ऐसा होना चाहिए।

२—कर्त्ता, कर्म, क्रिया और विशेषण का अन्वय

(१) यदि एक ही पुरुष और एक ही लिंग की एक से अधिक एकवचन प्राणिवाचक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्त्ता कारक या अप्रत्यय

कर्म कारक में हों (अर्थात् उनके आगे कारक की विभक्ति न हो) और वे संयोजक समुच्चयबोधक (और, तथा, एवं) से जुड़ी हों तो, क्रिया उसी पुरुष और उसी लिंग के बहुवचन में आती है; जैसे, सीता, राधा, श्यामा और माधवी आवेंगी। हरि, माधव तथा जगदीश जायंगे। पहले वाक्य में सीता, राधा, श्यामा और माधवी एक ही पुरुष (अन्य पुरुष) और एक ही लिंग (स्त्रीलिंग) की हैं, सभी एकवचन में है, प्राणिवाचक संज्ञाएँ हैं, उनके आगे कारक की कोई विभक्ति नहीं है, और सभी समुच्चयबोधक 'और' से जुड़ी हैं; इस लिए क्रिया (आवेंगी) स्त्रीलिंग बहुवचन में आई है। दूसरे वाक्य में अन्य सभी बातों के साथ कर्त्ता पुल्लिंग हैं, इसलिए क्रिया (जायँगे) पुल्लिंग, बहुवचन में आई है। इसी प्रकार अप्रत्यय कर्म कारक में—मैंने गाय और भैंस मोल ली। शिकारी ने भेड़िया और चीता देखे। हमने नाती और पोता देखे।

नोट—(१) यदि कर्त्ताओं या कर्मों से पृथक्ता का बोध हो, तो क्रिया बहुधा एकवचन में आती है; जैसे, बैल और घोड़ा अभी पहुंचा है। मेरे पास एक गाय और एक भैंस है। राजधानी में राजा और उसका मंत्री रहता था। वहाँ एक बुढ़िया और लड़की आई। कुटुम्ब का प्रत्येक बालक और वृद्ध इस बात का प्रयत्न करता है। कर्म कारक में—किसान ने एक गाय और एक भैंस मोल ली। हमने नाती और पोता देखा।

(२) यदि प्राणिवाचक संज्ञाओं के स्थान पर अप्राणि-वाचक संज्ञाएँ हों, तो भी क्रिया एकवचन में रहती है; जैसे, लड़के की देह में लोहू और मांस नहीं रह गया है। मेरी बातें सुन कर महारानी को हर्ष तथा आश्चर्य्य हुआ। मैंने कूएँ में से घड़ा और लोटा निकाला।

(२) भिन्न भिन्न लिंगों की दो या अधिक प्राणिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आवें, तो क्रिया बहुधा पुल्लिंग बहुवचन में आती है; जैसे, राजा और रानी मूर्च्छित हो गए। बैल और गाय चरते हैं। हमने लड़का और लड़की देखे।

नोट—कई द्वन्द्व समासों का प्रयोग इसी प्रकार होता है; जैसे, स्त्री-पुत्र भी अपने नहीं रहते। बेटा-बेटी सब के घर होते हैं। उसके मा-बाप ग़रीब थे।

(३) यदि भिन्न भिन्न लिंग, वचन तथा जाति की एक से अधिक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्त्ता कारक या कर्म कारक में आवें तो क्रिया के लिंग वचन अंतिम कर्त्ता या कर्म में अनुसार होते हैं; जैसे, महाराज और समूची सभा उसके दोषों को जानती है। गर्मी और हवा के झकोरे और भी क्लेश देते थे। उसने मेरे लिए सात कमीजें और कई कपड़े तैयार किये थे।

(४) भिन्न भिन्न पुरुषों के कर्त्ताओं में यदि उत्तम पुरुष आवे तो क्रिया उत्तम पुरुष होगी; यदि मध्यम तथा अन्य पुरुष कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष में रहेगी; जैसे, हम और तुम वहाँ चलेंगे। तू

और वह कल आना। तुम और वे कब आओगे? वह और मैं साथ पढ़ती थी।

(५) यदि कई कर्त्ता या कर्म विभाजक समुच्चयबोधक (या, अथवा, वा) से जुड़े हों तो अंतिम कर्त्ता या कर्म के अनुसार क्रिया होती है; जैसे, इस काम में कोई हानि अथवा लाभ नहीं हुआ। मैं या मेरा भाई जायगा। पोथियाँ या साहित्य किस चिड़िया का नाम है! वे अथवा तुम ठहर जाना। तुमने टोपी या कुर्त्ता लिया होगा। लड़के ने पुस्तक, काग़ज़ अथवा पेंसिल पाई थी।

(६) यदि एक या अधिक कर्त्ताओं या कर्मों का कोई समानाधिकरण शब्द हो तो क्रिया समानाधिकरण* शब्द के अनुसार होती है; जैसे, राम, श्याम, हरि, यदु, कोई भी आ सकता है। धन, धरती सब का सब हाथ से निकल गया। उसने धन, संतान, आरोग्यता आदि सब सुख पाया। हरिश्चन्द्र ने राज-पाट, पुत्र-स्त्री, घरद्वार सब कुछ त्याग दिया। उपर्युक्त वाक्यों मे 'कोई', 'सब का सब' आदि समानाधिकरण शब्दों के अनुसार क्रिया आई है।

(७) यदि कई कर्त्ताओं या कर्मों से एक ही वस्तु का बोध हो, तो क्रिया एकवचन मे आती है; जैसे, एक प्रसिद्ध तैराक और पहल-

---

*किसी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए जो शब्द आते हैं वे 'समानाधिकरण' कहलाते हैं; जैसे, 'पतिव्रता सीता' 'प्रतापी राम' में 'पतिव्रता' और 'प्रतापी' समानाधिकरण हैं; इसी प्रकार 'वह कलियुग का भीम है' इस वाक्य में 'भीम' समानाधिकरण शब्द है। विशेषण भी समानाधिकरण का काम करते हैं यदि उनसे विशेष्य की व्यापकता कम न हो। 'मैं मोहन लाल हूँ' इस वाक्य में मोहन लाल समानाधिकरण है।

वान यहाँ आया है। मैंने एक अच्छा पड़ोसी और मित्र पाया है। इन वाक्यों में 'तैराक' और 'पहलवान' तथा 'पड़ोसी' और 'मित्र' से एक ही व्यक्ति का बोध होता है।

(८) यदि सकर्मक क्रिया का कोई कर्म सप्रत्यय हो (अर्थात् उसके आगे कर्म कारक की विभक्ति हो) तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में आती है; जैसे, रानी ने सहेलियों को बुलाया। साधु ने स्त्री को रानी समझा। मीरकासिम ने मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया। मिसेज एनी बेसेंट को संरक्षक बनाया गया। यदि कर्म अप्रत्यय हो तो—मिसेज एनी बेसेंट संरक्षक बनाई गईं। राम ने रोटियाँ खाईं; (पर रोटियों को खाया)। मैंने फल चक्खे; (पर फलों को चक्खा)।

(९) कभी-कभी उद्देश्य के अर्थ को पूरा या स्पष्ट करने के लिये कोई दूसरा शब्द आता है, उसे उद्देश्यपूर्त्ति कहते हैं; जैसे, 'राम अपने घर का मालिक है'; इस वाक्य मे 'राम' उद्देश्य है और 'मालिक' उद्देश्य की पूर्त्ति है।

यदि उद्देश्यपूर्त्ति के लिंग वचन पुरुष उद्देश्य के लिंग वचन पुरुष से भिन्न हों तो क्रिया के लिंगवचन पुरुष बहुधा उद्देश्य ही के अनुसार होते हैं, जैसे, बेटी किसी दिन पराये घर का धन होती है। काले कपड़े शोक का चिह्न माने जाते हैं।

नोट—यदि उद्देश्यपूर्त्ति का अर्थ प्रधान हो अथवा उसमें उत्तम या मध्यम पुरुष सर्वनाम आवे, तो क्रिया के लिंग वचन पुरुष उद्देश्य की पूर्त्ति के अनुसार होवें

हैं; जैसे, झूठ बोलना उसकी आदत हो गई है।
इन सब सभाओं का मुख्य उद्देश्य मैं ही था।

(१०) कभी-कभी सकर्मक क्रियायें अपूर्ण रहती हैं; तब उनके अर्थ को पूरा करने के लिये जो शब्द दिये जाते हैं वे सकर्मक क्रिया की पूर्त्ति या कर्म पूर्त्ति कहलाते हैं; जैसे, मैंने अपना दिल पत्थर कर लिया' इस वाक्य में 'पत्थर' पूर्त्ति का शब्द है, क्योंकि 'मैंने अपना दिल कर लिया', ऐसा वाक्य होने से अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

यदि पूर्त्ति के लिगवचन से कर्म के लिंगवचन भिन्न हों तो क्रिया के लिंगवचन कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे, हमने अपनी छाती पत्थर कर ली। क्या तुमने मेरा घर अपनी बपौती समझ लिया? उसने अपना शरीर मिट्टी कर लिया।

नोट—यदि कर्मपूर्त्ति के अर्थ की प्रधानता हो तो कभी-कभी क्रिया के लिंगवचन उसी के अनुसार होते हैं; जैसे, हृदय भी ईश्वर ने क्या ही वस्तु बनाई है।

(११) यदि कर्त्ता सप्रत्यय हो और कर्म के स्थान पर कोई वाक्य या क्रियार्थक संज्ञा हो तो क्रिया सदैव पुल्लिंग, एकवचन और अन्य पुरुष मे रहती है; जैसे, तुम्हे बात करना न आया। उसे रसोई बनाना नहीं आता है। यहाँ 'बात करना', 'रसोई बनाना' क्रियार्थक संज्ञाएँ हैं।

(१२) यदि क्रियार्थक संज्ञा* या तात्कालिक-कृदन्त† का कर्त्ता संबंध कारक में आवे तो विधेयविशेषण कर्त्ता के लिंगवचन के अनुसार विकल्प से बदलता है ; जैसे, आँख का तिरछा (या तिरछी) होना अच्छा नहीं है। पत्तों के पीला (या पीले) पड़ते ही पौधे को पानी देना चाहिये। पहले वाक्य में क्रियार्थक संज्ञा 'होना' का कर्त्ता 'आँख' संबंध कारक में अलग अलग है, इसलिये विधेय विशेषण कर्त्ता 'आँख' के अनुसार 'तिरछी' या विकल्प से 'तिरछा' भी हो सकता है। दूसरे वाक्य मे 'पड़ते ही' तात्कालिक कृदन्त है और उसका कर्त्ता 'पत्तों' संबंध कारक मे है, इसलिये विधेयविशेषण 'पीला' विकल्प से 'पीले' भी हो सकता है।

(१३) यदि विधेय में आनेवाली संज्ञा उद्देश्य से भिन्न लिंग में आवे तो उसके पूर्ववर्त्ती संबंधकारक का लिंग बहुधा उद्देश्य के अनुसार होता है; जैसे, धर्मनिष्ठता भारत को प्राण है। सीता पतिव्रता स्त्रियों की मुकुट थी। पुलिस प्रजा की सेवक है।

---

* क्रियार्थक संज्ञा से उन क्रियाओं का बोध होता है जिनका प्रयोग भाववाचक संज्ञा के समान होता है; जैसे, 'कहना सहज है, पर करना कठिन है' इस वाक्य में कहना और करना क्रियार्थक संज्ञाएँ हैं। इसी प्रकार समझना, रोना, आना, जाना आदि भी क्रियार्थकसंज्ञा हो सकते हैं। धातु के अंत में 'ना' जोड़ने से क्रियार्थकसंज्ञा बनती है।

† तात्कालिक कृदन्त से मुख्य क्रिया के साथ ही होनेवाली घटना का बोध होता है, और 'ही' जोड़ने से बनता है, जैसे निकलते ही, आते ही, आते ही, इत्यादि।

नोट—यदि भाववाचक या गुणवाचक संज्ञाएँ संबंध कारक के बाद हों, तो बहुधा भाववाचक या गुणवाचक संज्ञाओं के लिंग के अनुसार ही संबंध कारक का भी लिंग होता है; जैसे, पतिव्रताएँ भारत का सौन्दर्य्य हैं। यह लड़का मेरे वंश की शोभा है। संतान घर का उजाला है।

(१४) जब क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग विशेषण के समान होता है, तो उसके लिंग वचन विशेष्य (जिसके लिए वह आवे) के अनुसार होते हैं; जैसे, उन्हे दवाई पीनी पड़ेगी। जो बात होनी थी सो हो गई। पर ऐसा प्रयोग विकल्प से होता है। उपर्युक्त वाक्यों मे 'पीना' और 'होना' भी शुद्ध हैं।

नोट—यदि विशेष्य बहुवचन मे हो तो विकल्प वाला नियम बहुधा लागू नहीं होता; जैसे, मुझे तरह तरह की मिठाइयाँ खरीदनी हैं। तुम्हे ये फल खाने पड़ेंगे।

(१५) विभक्तिरहित कर्म के पश्चात् आनेवाला आकारान्त विधेय विशेषण उस कर्म के साथ एक ही लिंगवचन में आता है; जैसे, गाड़ी खड़ी करो। दरजी ने कपड़े ढीले बनाए। मैं तुम्हारी बात पक्की समझता हूं।

नोट—यदि कर्म सप्रत्यय हो तो विधेय विशेषण के लिङ्गवचन कर्म के अनुसार विकल्प से होते हैं, जैसे, आप ही इस लड़की को अच्छी (या अच्छा) कर सकते हैं। मैंने सभी लोगों को सभागृह में बैठे (या बैठा)

पाया। रघु ने नन्दिनी को अपने सामने खड़ी (या खड़ा) देखा।

(१६) यदि कर्त्ता सप्रत्यय हो, कर्म अप्रत्यय हो और क्रिया सकर्मक और भूतकालिक कृदन्त से बनी हुइ हो तो क्रिया के लिंग-वचन कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे लड़के ने पुस्तक पढ़ी। स्त्री ने चित्र बनाए।

३—विराम चिह्न।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले मुख्य विराम चिह्न ये हैं :—

	नाम	रूप
१	अल्पविराम	,
२	अर्द्ध विराम	;
३	पूर्णविराम	।
४	प्रश्नचिह्न	?
५	आश्चर्य चिह्न	!
६	निर्देशक (डैश)	—
७	कोष्ठक	( ) [ ]
८	अवतरण चिह्न	" "

(१) अल्पविराम का प्रयोग नीचे लिखे स्थानों में होता है :—

[क] उन स्थानों पर जहाँ "और", 'या' (अथवा उनके समानार्थी) समुच्चयबोधक शब्दों का अध्याहार हो; जैसे, राम, श्याम, हरि और माधव तेज़ लड़के है। राम, श्याम, हरि या माधव

किसी ने ज़रूर यह काम किया है। उन्होंने मुझे कभी भोजन-वस्त्र देकर, कभी रुपए देकर और कभी सहानुभूति दिखाकर ही मेरा उत्साह बढ़ाया है। भूखों रह कर, घरद्वार बेंच कर, भीखमाँग कर या कर्ज़ लेकर, चाहे जैसे हो, मैं यह काम करूँगा ही।

[ख] क्रिया विशेषण के समान आने वाले उन वाक्यखंडों के बाद जिनका उद्देश्य समान हो; जैसे, आरा से पाँच कोस दूर, गंगा के किनारे, सोन से बाईं ओर, रतन दास का बसाया हुआ, रतनकुल नामक एक गाँव है।

[ग] समानाधिकरण शब्दों के बीच मे, जैसे, कलियुग के भीम, राममूर्त्ति यहाँ आनेवाले हैं। रघुकुल भूषण, धर्म के रक्षक, अधर्म के लिए कालस्वरूप, मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र का नाम कौन नहीं जानता ?

[घ] यदि उद्देश्य का विस्तार बहुत बड़ा हो और वह अप्रत्यय हो, तो उसके पश्चात्, जैसे चारों ओर से उड़ कर आती हुई चिड़ियों के कोलाहल का शब्द, जंगल मे फैल रहा था।

[ङ] क्योंकि, लेकिन (तथा इसके समानार्थी), जो, तो, आदि समुच्चय बोधक शब्दों के पहले, यदि उनके साथ वाले वाक्य का कर्त्ता पहले ही वाक्य मे हो; जैसे, यह पुस्तक अच्छी है, इसलिए पढ़ने के योग्य है। वह विद्वान् हैं, अतएव गंभीर हैं। वह दुराचारी, अतएव अयोग्य है। श्याम यहाँ आवेगा, और हरि को ले जायगा।

नोट—दो पूर्ण वाक्यों के बीच में यदि 'और अथवा 'या' (या इनके समानार्थी शब्द) आवें, तो उनके आगे

अल्पविराम का प्रयोग होता है; जैसे, राम यहाँ है, और उसका भाई कलकत्ते में है। मैं बाज़ार गया था, और तुम घर गए थे। मैं जाऊँगा, या वह जायगा।

[च] संबोधन कारक की संज्ञा और संबोधन शब्दों के बाद; जैसे, लो, वह आ गया। भाई, तुमने यह अच्छा नहीं किया। लड़को, यह जान लो, सदाचार ही सब से भारी धर्म है।

[छ] उदाहरणों में जैसे, यथा, आदि शब्दों के बाद, और आदि, इत्यादि शब्दों के पहले।

(२) अर्द्धविराम नीचे लिखी अवस्थाओं में प्रयुक्त होता है:—

[क] जब संयुक्त वाक्यों के प्रधान वाक्यों में परस्पर विशेष संबंध नहीं रहता, तो वे अर्द्धविराम के द्वारा अलग किये जाते हैं; जैसे, हरिचरण बाबू मुर्शिदाबाद के रहने वाले थे; पर उनके जीवन का अधिकांश भाग पटने में बीता। मैं कलकत्ते गया था; लेकिन राम बाबू से मेरी भेंट नहीं हुई।

[ख] उन पूर्ण वाक्यों के बीच में, जिनमें से अंतिम वाक्य के पहले 'और' 'तथा' आदि समुच्चयबोधक रहते हैं; जैसे, रात हुई; चारों ओर अँधियारी छा गई; पथिकों का रास्ता चलना बंद हो गया; और सभी प्राणी निद्रा देवी की आराधना में लीन हो गए।

[ग] उन आश्रित वाक्यों के बीच में जो एक ही मुख्य वाक्य पर अवलंबित रहते हैं; जैसे, जब तक हमारे देश में शिक्षा का काफी प्रचार न होगा; लोग स्वाधीनता का महत्त्व न जान जायँगे; युवक में देश की प्रतिष्ठा के लिए मर मिटने का भाव न पैदा होगा; तब तक उन्नति हम से कोसों दूर है।

[घ] उदाहरण सूचक 'जेसे' शब्द के पहले।

(३) पूर्ण विराम का प्रयोग नीचे लिखे स्थानों में होता है :—

[क] पूर्ण वाक्य के अंत में; जैसे, राम अच्छा लड़का है।

[ख] कभी-कभी और, परन्तु, अथवा, इसलिए, आदि सम्मुच्चयबोधक शब्दों से शुरू होने वाले, वाक्यों से पहले, यदि पहले के वाक्य का अर्थ पूर्ण हो गया हो; जैसे, इस संसार मे ऐसे भी लोग हैं, जो दूसरे की भलाई के लिए अपनी जान तक दे देते हैं। और इसी संसार में ऐसे भी लोग हैं, जो अपनी स्वार्थपूर्त्ति के लिए दूसरों की जान तक ले लेते हैं।

(४) प्रश्नवाचक चिह्न वाक्य के अंत में आता है; जैसे, तुम्हारी किताब कहाँ है? तुम घर कब जाओगे?

नोट—प्रश्नवाचक वाक्य वह है जिसके द्वारा कोई उत्तर माँगा जाय।

(५) आश्चर्य चिह्न का प्रयोग नीचे लिखे स्थानों में होता है :—

[क] उन शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के अन्त में जिनसे मनोविकार (विस्मय, क्रोध, शोक, हर्ष, आदि) का बोध हो; जैसे, वाह! तुमने तो खूब वीरता दिखाई! छिः! नाश हो ऐसे मनचलों का!

नोट—(१) यदि मनोविकार सूचक अव्ययों से स्वतन्त्र मनोविकार न सूचित हो, तो उनके बाद आश्चर्यचिह्न के बदले अल्पविराम का चिह्न आता है; जैसे, आह, मैं सचमुच आजतक तुम्हारी प्रतीक्षा करती

थी, राजकुमार ! ओह, तो तुमने इतने दिन कष्ट में बिताये, आज उसका मूल्य माँगने आई हो, क्यों ?

(२) कभी-कभी मनोविकार की तीव्रता सूचित करने के लिए एक से अधिक आश्चर्यचिह्नों का भी प्रयोग किया जाता है; जैसे, शोक ! शोक !! महाशोक !!! बाजे-गाजे के शब्दों के साथ घहराता हुआ, आकाश फाड़ने वाला, एक गंभीर स्वर चारों ओर से गूँज उठा—"धन्य मुण्डमाल !!!"

(३) बहुधा मनोविकार सूचक सम्बोधन पदों के अन्त में भी आश्चर्यचिह्न आता है; जैसे, जय हो देव ! एक स्त्री कुछ प्रार्थना करने आई है। मूर्ख ! फिर क्या चाहिए ?

[ख] उन शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के बाद, जो देखने में प्रश्नवाचक के समान मालूम पड़ते हैं, लेकिन वास्तव में जिनसे मनोविकार सूचित होता है, उत्तर की अपेक्षा नहीं की जाती; जैसे, अरे ! तुम ने यह क्या किया ! राम-राम ! ऐसा काम भी कोई करता है !

(३) [क] निर्देशक चिह्न का प्रयोग समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के बीच में होता है; जैसे, दुनिया में नयापन—नूतनत्व—ऐसी चीज़ नहीं जो गली गली मारी फिरती हो। श्याम—जिसने गणितज्ञ के रूप में काफी प्रतिष्ठा प्राप्त की है—विलायत जा रहा है।

[ख] छूटी हुई बात को पूरा करने के लिए भी निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे, राम एक अच्छा वक्ता है—नहीं, नहीं, वह एक अच्छा विद्वान् भी है। राम विद्वान्—एक अच्छा विद्वान् है।

[ग] किसी विषय के साथ तत्सम्बन्धी अन्य बातों की सूचना देने में भी निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे, इंगलैंड में राजनीतिज्ञों के दो दल हैं—एक उदार, दूसरा अनुदार। भारत में कई प्रकार के आम होते हैं—बम्बई, मालदह, सिपिया, लँगड़ा, आदि।

(७) कोष्ठक का प्रयोग नीचे लिखे स्थानों में होता है :—

[क] किसी शब्द या वाक्यांश के बाद उसका समानार्थी शब्द या वाक्यांश देने के लिए, जैसे, माधो (राम बाबू का लड़का) पढ़ने में तेज़ है। नीग्रो (हब्सी) लोग काले होते हैं।

[ख] किसी ऐसे शब्द, वाक्यांश या वाक्य को मूल वाक्य मे रखने के लिए, जिसका मूल वाक्य से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध न हो, किन्तु जिसके देने से मूल वाक्य के अर्थ में स्पष्टता या विशेषता आ जाय; जैसे, राम का टूटा हुआ मकान बरसात में गिर गया (वह यही चाहता भी था)। स्त्री—(रोकर) हाय, मेरा लाल कहाँ गया?

(८) [क] अवतरण चिह्नों का प्रयोग किसी के वचन को उद्धृत करने, अवतरण देने या अक्षर अथवा वाक्य का प्रयोग शब्द के समान करने के लिए आता है, जैसे, राम ने कहा—"मैं बीमार हूं, इसलिए नहीं आऊँगा।" 'क' का उच्चारण कंठ से होता है।

रामायण में लिखा—"जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहिं विलोकत पातक भारी।"

[ख] पुस्तक, समाचार, लेख, चित्र, मूर्त्ति, पदवी, लेखक के उपनाम और वस्तु के व्यक्तिवाचक नाम में भी अवतरण चिह्नों का प्रयोग होता है; जैसे, 'रंगभूमि' प्रेमचन्द का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। 'विश्वबंधु' आगरे से निकलता है। 'प्रतीक्षा' राम मोहन बाबू का सर्वश्रेष्ठ चित्र है।

नोट—(१) अक्षर, शब्द या वाक्यांशों को कभी कभी इकहरे अवतरण चिह्नों के भीतर रक्खा जाता है, जसे, 'राम' शब्द के अनेक अर्थ हैं।

(२) जब अवतरण चिह्नों के भीतर के वाक्यों में वर्त्तमान शब्द या वाक्य के लिए अवतरण चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है, तो इकहरे अवतरण चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जैसे, रामने कहा—"मेरे भाई का यह कहना कि 'कलकत्ते की आबहवा अच्छी है' कहाँ तक ठीक है, मैं नहीं कह सकता।"

(३) यदि अवतरण चिह्नों के भीतर दिये जाने वाले वाक्य कई अनुच्छेदों में बँटे हों, तो सभी अनुच्छेदों के आदि में अवतरण चिह्न रहते हैं, केवल अन्तिम अनुच्छेद में आदि और अन्त दोनों स्थान पर दिये जाते हैं।

यह ध्यान रखने की बात है कि विराम चिह्नों के परिवर्त्तन से बहुधा वाक्य के अर्थ में परिवर्त्तन हो जाता है; जैसे :—

(१) सुन्दरराम कहाँ रहता है ?=सुन्दर राम नामक व्यक्ति के रहने का स्थान कहाँ है ? या वह राम जो सुन्दर है, कहाँ रहता है ?

सुन्दर, राम कहाँ रहता है ?=हे सुन्दर, राम कहाँ रहता है

सुन्दर—राम कहाँ रहता है ?=सुन्दर नामक व्यक्ति पूछता है कि राम कहाँ रहता है ?

(२) राम यहाँ कहाँ रहता है ?=यहाँ किस स्थान पर राम रहता है ?

राम यहाँ कहाँ रहता है !=राम यहाँ नहीं रहता।

(३) आना होगा=(आज्ञार्थक) आना पड़ेगा।

आना होगा ? (प्रश्नसूचक) क्या आना पड़ेगा ?

आना होगा !=आश्चर्य्य या दुःख है कि आना पड़ेगा।

(४) राम रोगी है; हरि नीरोग है।=राम रोगी है, पर हरि रोगी नहीं है।

राम रोगी है। हरि नीरोग है।=ये अलग अलग स्वतन्त्र वाक्य है, अर्थात् एक का दूसरे से कोई संबंध नहीं।

(५) मालिक ने आज्ञा दी, अभी जाओ !=मालिक ने (नौकर को) तुरत जाने की आज्ञा दी।

मालिक ने आज्ञा दी; अभी जाओ !=कोई तीसरा व्यक्ति कहता है—"मालिक ने तुम्हारे जाने की आज्ञा दी; तुम अभी जाओ !"

पूर्णविराम, अर्द्धविराम और अल्पविराम चिह्नों से ठहराव का समय भी ज्ञात होता है। पूर्ण विराम से वाक्य की समाप्ति, अतएव पूरे ठहराव का बोध होता है; अर्द्धविराम से वाक्यों या वाक्यांशों में कुछ संबंध या आश्रय, अतएव पूर्णविराम से कम ठहराव का बोध होता है; और अल्पविराम से वाक्यों, वाक्यांशों या शब्दों में निकट संबंध, अतएव अर्द्धविराम से भी कम ठहराव का बोध होता है।

षष्ठ परिच्छेद

मुहावरे

मुहावरा उन वाक्यों, वाक्यांशों या शब्दों को कहते हैं जिनका प्रचलित अर्थ, प्रत्यक्ष या शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है; जैसे, 'मित्र की मृत्यु का समाचार सुनकर उनका कलेजा टूक टूक हो गया' इस वाक्य में 'कलेजा टूक टूक हो गया' यह मुहावरा है। इसका प्रत्यक्ष या शाब्दिक अर्थ हुआ—"कलेजा टुकड़े टुकड़े होकर कई भागों में विभक्त हो गया।' किन्तु प्रचलित अर्थ है—"बहुत दुःख हुआ।" इसी प्रकार 'उनका दिमाग़ आस्मान पर है' इस वाक्य में 'दिमाग़ आस्मान पर है' यह मुहावरा है। इसका प्रत्यक्ष अर्थ है—"दिमाग़ उड़ कर आस्मान पर चला गया है।" लेकिन दिमाग़ उड़ता नहीं, और न वह आस्मान में जाता है; इसलिए यह अर्थ बेमानीमतलब का है। इसका प्रचलित अर्थ है—"उसे घमंड हो गया है।" इस तरह हम देखते हैं कि मुहावरे के प्रचलित और प्रत्यक्ष अर्थ में बहुत अन्तर पड़ जाता है।

मुहावरे दो प्रकार के होते हैं। कुछ मुहावरे ऐसे हैं जिनका अर्थ उनके भीतर के किसी शब्द विशेष के लक्षण से प्रकट होता है; जैसे—"उनकी आँखों से अंगार बरसने लगा।" इस वाक्य में 'आँखों से अंगार बरसना' मुहावरा है। इसका अथ है, 'क्रोध

होना'। जब किसी व्यक्तिको क्रोध आता है, तो उसकी आँखें स्वभावतः लाल हो जाती हैं, और अंगार भी लाल होता है; इस कारण क्रोधावस्था में आँखों में अंगार के लक्षण पाये जाते हैं। अतः 'आँखों से अंगार बरसना' का अर्थ अंगार के लक्षण से प्रकट होता है। इसी तरह के मुहावरे 'कलेजा चूर चूर हो जाना', 'अंधा बनना', 'आँखों का काँटा होना', आदि हैं।

दूसरे प्रकार के मुहावरे वे हैं जिनका अर्थ लक्षण से नहीं, बल्कि गूढ़ अभिप्राय से प्रकट होता है; जैसे, 'अक्ल का दुश्मन' का गूढ़ अभिप्राय है 'मूर्ख'। इसी प्रकार 'आँख का काजल चुराना' का अर्थ है 'बड़ी सफाई के साथ चोरी करना।'

कुछ मुहावरों की तह में कोई घटनाविशेष छिपी रहती है; जैसे, 'टेढ़ी खीर'। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि किसी अंधे को यह जानने की इच्छा हुई कि खीर कैसी होती है। किसी ने उसे बतलाया कि खीर बगले के समान सफेद होती है। अंधे ने फिर पूछा—"भाई, बगला कैसा होता है?" उस व्यक्ति ने हाथ टेढ़ा कर, बगले के आकार का बनाकर कहा कि देखो बगला ऐसा होता है। अंधे ने छूकर देखा और कहा—"भाई, यह तो टेढ़ा है! तब तो खीर टेढ़ी होती है और उसका खाना मुश्किल काम है!" इस प्रकार 'टेढ़ी खीर' का अर्थ हुआ—'मुश्किल काम'।

इसी प्रकार 'पाँचो सवार में शामिल होना (या नाम लिखाना) के विषय में यह कहानी प्रचलित है—एकबार चार घुड़सवार कहीं जा रहे थे। उनके पीछे पीछे गधे पर सवार एक पाँचवाँ व्यक्ति भी

जा रहा था। किसी ने उससे पूछा—"भाई, वेचारो सवार कहाँ जा रहे हैं ? गधे पर सवार व्यक्ति ने बिगड़ कर कहा "हूँ, पाँचो सवार कहो; हम पाँचो सवार अमुक स्थान को जा रहे हैं।" इस प्रकार इसका अर्थ हुआ 'श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनना।'

मुहावरों का प्रयोग बोलचाल से लेकर उच्चकोटि की साहित्यिक भाषा तक में किया जाता है। उनके प्रयोग से वाक्य में चुस्ती और सुन्दरता आ जाती है। जो बात कई वाक्यों या वाक्यांशों मे स्पष्ट हो सकती है वह मुहावरे के प्रयोग से कुछ ही शब्दों में स्पष्ट हो जाती है; जैसे, 'उसने जो कुछ कहा है, उससे भीतरी रहस्य प्रकट होता है।' इस वाक्य को मुहावरे के साथ इस प्रकार लिखा जायगा—'उसने पते की बात कही है।' इस प्रकार थोड़े ही शब्दों में यहाँ काम चल जाता है; और साथ ही वाक्य में चुस्ती और सुन्दरता भी आ जाती है।

नीचे मुहावरेदार भाषा के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

"किन्तु प्रवल वीर अभिमन्यु का प्रचंड प्रताप दुर्योधन से न सहा गया। अभिमन्यु ने शीघ्र ही उनकी नाकों दम कर दिया। तब द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृप, कर्ण, शल्य और कृतवर्मा ने मिल कर दुर्योधन को अभिमन्यु के पंजे से छुड़ाया। शिकार का इस तरह जाल से निकल जाना अभिमन्यु से न सहा गया।"

'किंतु धृतराष्ट्र की सन्तान की शठता और बुरे व्यवहार के कारण हमारे भाई तंग आ गये हैं—उन्हें न मालूम कितने कष्ट भोग

करने पड़े हैं। इससे, वर की आग बुझाने के इरादे से, बीच बीच में किए गये उनके अधर्म पूर्ण कामों पर भी हम धूल डाल दिया करते हैं।"

—पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी

"भाइयो, मेरी सारी उम्र छल कपट में कट गई। मैंने न जाने कितने आदमियों को दगा दिया, कितने खरे को खोटा किया, पर अब भगवान ने मुझ पर दया की है, वह मेरे मुँह की कालिख को मिटाना चाहते हैं। मैं आप सभी भाइयों से ललकार कर कहता हूं, जिसका मेरे जिम्मे जो कुछ आता हो, जिसकी जमा मैंने मार ली हो, जिसके चोखे माल को खोटा कर दिया हो, वह आकर अपनी एक एक कौड़ी चुकाले × × ×"

"देहात के आदमी थे, गड़े मुर्दे उखाड़ना क्या जानें। फिर प्रायः लोगों को याद भी न था कि उन्हें महादेव से क्या पाना है, और ऐसे पवित्र अवसर पर भूल चूक हो जाने का भय उनका मुँह बन्द किये हुए था। सब से बड़ी बात यह थी कि महादेव की साधुता ने उन्हें वशीभूत कर लिया था।

—प्रेमचन्द,

नोट—यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक भाषा के अलग अलग मुहावरे हैं। एक भाषा के मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद दूसरी भाषा में रखने से अर्थ में गड़बड़ी हो जायगी। मुहावरों का अनुवाद मुहावरों में किया जा सकता है। किंतु हिन्दी

और उर्दू दो अलग अलग भाषाएँ नहीं, बल्कि एक ही भाषा दो रूपों में है। अतः उर्दू के मुहावरे ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त किये जा सकते हैं। हाँ, ऐसा करते समय एक बात अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि जिस प्रकार संस्कृत के मुहावरे हिन्दी में में नहीं आते उसी प्रकार अरबी-फारसी के कठिन शब्दों से युक्त मुहावरे भी हिंदी में प्रयुक्त नहीं होने चाहिए।

नीचे कुछ प्रचलित मुहावरे दिये जाते हैं :—

(अ, आ)

अंगारों पर पैर रखना=अपने को खतरे में डालना।

अंगारों पर लोटना=क्रोधित होना; इर्ष्या से व्याकुल होना।

अंत पाना=भेद पाना; उ० उनके दिल का अंत पाना कठिन है। ईश्वरीय लीला का अंत कौन पा सकता है!

अंधा बनना=जान बूझ कर किसी बात पर ध्यान न देना।

अंधा बनाना=बेवकूफ बनाना।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना=अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करना।

अपना-सा मुँह लेकर रह जाना=अकृतकार्य्य होने पर लज्जित होना; माँगने पर भी भोजन न मिलने पर, वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

अपनी ही गाना ; अपनी ही ओटना ; अपना ही राग अला-

पना=अपनी ही बात कहना, और किसी की बातों पर ध्यान न देना ।

अपनी बात पर आना=हठ पकड़ना ; उ० अब वह अपनी बात पर आ गया है, न मानेगा ।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना=अपनी प्रशंसा आप करना ।

आँख उलट जाना=अभिमान होना; उ० इतने ही धन में तुम्हारी आँखें उलट गईं ।

आँख का अन्धा गाँठ का पूरा=मूर्ख धनवान ।

आँख का काँटा या आँख की किरकिरी होना=शत्रु होना ।

आँख का तारा या आँख की पुतली होना=बहुत प्यारा होना ।

आँख कान खुला रखना=सचेत रहना; उ० ज़रा आँख कान खुला रक्खा करो, यहाँ तुम्हारे बहुत से शत्रु हैं ।

आँख का पानी ढल जाना=लज्जा दूर हो जाना ; उ० हमेशा कुकर्म मे रत रहने के कारण उसकी आँख का पानी ढल गया है ।

आँख को बदी भौं के आगे कहना ; आँखों के आगे पलकों की बुराई करना=किसी की निन्दा उसके इष्ट मित्र के आगे ही करना ।

आँख खुलना=नींद टूटना ; ज्ञान होना ।

आँखें चार होना=देखा देखी होना ।

आँख चुराना=सामने न होना, नज़र न उठाना

आँख बचाना=सामना न करना, अपने को छिपाना; उ० मैं उनक आँख बचाकर निकल आया हूं ।

आँख भर आना = आँखों में आंसू आना।

आँखों में चरबी छाना = घमंड से चूर होना, मदान्ध होना।

आँखों में टेसू, तीसी, या सरसों फूलना=जो बात मन में समाई है वही चारों ओर दिखाई देना।

आँखों में धूल डालना, देना या झोंकना = धोखा देना।

आँखों मे रात कटना = रात भर नींद न पड़ना।

आँसू पीकर रह जाना=भीतर ही भीतर रोकर रह जाना।

आँसू पोंछना = धीरज देना; उ० इस विपत्ति के समय उसका आँसू पोंछने वाला कोई नहीं है।

आँसुओं से मुँह धोना=बहुत रोना।

आकाश पाताल एक करना=भारी उद्योग करना; उसका पता लगाने के लिये मैं आकाश पाताल एक कर दूँगा।

आकाश से बातें करना=बहुत ऊँचा होना; कुतुब मीनार आकाश से बातें करता है।

आग लगे पर कुँआँ खोदना=कोई कठिन काय्य आ पड़ने पर, सीधे उपाय को छोड़ कर देर से होने वाली युक्ति सोचना।

आग मे घी या ईंधन डालना=क्रोध बढ़ाना।

आठ आठ आँसू रोना = बहुत विलाप करना।

आटा दाल का भाव मालूम होना=सांसारिक व्यवहार का ज्ञान होना।

आटा माटी होना = नष्ट भ्रष्ट होना।

आड़े आना=सहायक होना ; उ० विपत्ति के समय जो आड़े आवे वही मित्र है।

आड़े हाथों लेना=लज्जित करना; मैंने उन्हें खूब आड़े हाथों लिया।

आधा तीतर आधा बटेर=कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का।

आन की आन में=शीघ्र ही; आन की आन में मैं घर जा पहुंचा।

आन तोड़ना=प्रतिज्ञा भंग करना।

आन रखना=मान रखना।

आये दिन=प्रति दिन; उ० आयेदिन का यह झगड़ा अच्छा नहीं।

आप आप करना=खुशामद करना।

आपे से बाहर होना=क्रुद्ध होना; गाली सुनते ही वे आपे से बाहर हो गए।

आम के आम गुठलियों के दाम=दोहरा लाभ उठाना।

आरज़ू बर आना=इच्छा या आशा पूरी होना; उ० तुम्हारी आरज़ू बर आये!

आसन डिगना=चित्त चलायमान होना।

आसमान के तारे तोड़ना=कोई कठिन या असंभव कार्य्य करना।

आसमान ज़मीन के कुलाबे बाँधना=खूब लम्बी चौड़ी हाँकना।

आसमान टूटना=किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना; बाढ़ क्या आई, मेरे गाँव पर आसमान टूट पड़ा।

आसमान पर चढ़ना या उड़ना=इतराना, घमंड करना।

आसमान पर चढ़ाना=अत्यन्त प्रशंसा करना; उन्होंने एक साधारण से आदमी को आसमान पर चढ़ा दिया।

आसमान पर थूकना=किसी बहुत बड़े आदमी को निन्दित करने का प्रयत्न करना।

आसमान सिर पर उठाना=उपद्रव मचाना; उ० तुम रातदिन आसमान सिर पर उठाये रहते हो।

आस्तीन का साँप=वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे; उ० जिसकी मैंने इतनी भलाई की उसी ने मेरे साथ विश्वासघात किया; मैं नहीं जानता था कि वह आस्तीन का साँप निकलेगा।

अस्तीन में साँप पालना=शत्रु को मित्र समझ कर आश्रय या सहायता देना। उ० मैं नहीं जानता था कि मैंने आस्तीन में साँप पाल रक्खा है।

(इ, ई)

इत्तफ़ाक़ करना=सहमत होना; उ० मैं इस बात में आप से इत्तफ़ाक़ करता हूं।

इधर उधर करना=टालमटोल करना।

इधर की उधर करना या लगाना=चुगलखोरी करना।

इधर की दुनिया उधर हो जाना=अनहोनी बात का होना; उ० चाहे इधर की दुनियां उधर हो जाय, पर राम झूठ नहीं बोल सकता।

ईंट से ईंट बजाना=ध्वस्त करना।

(उ)

उँगली उठाना=लांछित करना; उ० उनकी ओर कोई उँगली नहीं उठा सकता।

उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना=किसी व्यक्ति से किसी वस्तु का थोड़ा सा भाग पाकर साहसपूर्वक उसकी सारी वस्तु पर अधिकार जमाना।

उँगलियों पर नचाना=अपने वश में रखना।

उठते बैठते=हर समय; उ० उठते बैठते तुम उसी की चर्चा किया करते हो।

उठ जाना=मर जाना; उ० अच्छे अच्छे लोग उठ गए।

उठा रखना=बाकी रखना; उ० मैंने तुम्हारी भलाई के लिये क्या उठा रक्खा ?

उड़ती खबर=वह खबर जिसकी सचाई का निश्चय न हो।

उदय से अस्त तक=पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक; उ० उदय से अस्त तक कहीं भी ऐसा आदमी नहीं मिलेगा।

उधार खाये बैठना=(१) अपने अनुकूल होने वाली बात के लिए अत्यन्त उत्सुक होना; उ० किताब लेने के लिए तो वह उधार खाये बैठे हैं।

(२) किसी का नाश चाहना; उ० वह बहुत दिनों से तुम पर उधार खाये बैठा है।

उन्नीस बीस होना=बहुत कम अन्तर होना।

उलटी गंगा बहना=अनहोनी होना।

उलटे छुरे (या उस्तुरे) से मूड़ना=बेवकूफ बनाकर लूटना।

ऋण चढ़ना=कर्ज़ होना।

ऋण पटना=धीरे धीरे कर्ज़ अदा होना।

ऋण उतारना=कर्ज़ अदा करना; नेकी का बदला चुकाना।

(ए)

एक आँख देखना=समान भाव रखना।

एक आँख न भाना=तनिक भी अच्छा न लगना; उ० वह तो मुझे एक आँख भी नहीं भाता है।

एक न चलना=कोई युक्ति सफल न होना; यहाँ तुम्हारी एक न चलेगी।

एँड़ी चोटी का पसीना एक करना=खूब परिश्रम करना।

(ओ, औ)

ओखली में सिर देना=अपनी इच्छा से किसी झंझट या खतरे मे पड़ना।

औसान भूलना=सुधबुध भूलना; उ० एक ही वार में सारा औसान भूल जाओगे।

(क)

कच्चा पड़ना=अप्रामाणिक या कमज़ोर ठहरना; उ० यहाँ तुम्हारी दलील कच्ची पड़ती है।

कटती कहना = मर्मभेदी बात कहना।

कढ़ी का उबाल = शीघ्र ही घट जाने वाला जोश।

बासी कढ़ी में उबाल आना=(१) बुढ़ापे में युवावस्था की सी उमंग आना। (२) छोड़े हुए कार्य्य को फिर करने की तत्परता आना।

कलई खुलना=असलियत ज़ाहिर होना।

कलई न लगना=युक्ति न चलना।

कलेजा कटना=दिल पर चोट पहुँचना।

कलेजा थाम कर रह जाना=शोक का वेग दबा कर रह जाना; उ० पुत्र की मृत्यु का संवाद सुनकर वह कलेजा थाम कर रह गए।

कलेजा धक से हो जाना=भय या शोक से सहसा स्तब्ध हो जाना; उ० यह सुनते ही मेरा कलेजा धक से हो गया।

कलेजा निकाल कर रखना=दिल की सच्ची बात कहना; उ० 'काग़ज़ पर रख दिया कलेजा निकाल कर'।

कलेजा पक जाना=कष्ट से जी ऊब जाना।

कलेजा मुँह को आना=दुःख से व्याकुल होना।

क़हर टूटना=आफ़त आना।

(किसी के) रास्ते में काँटा बिछाना=अड़चन डालना।

(किसी के) रास्ते का काँटा होना=बाधास्वरूप होना।

काँटा बोना=बुराई करना।

काँटों में घसीटना=संकट में डालना।

काठ मार जाना=लज्जित या स्तब्ध हो जाना; उ० इस बात का भेद खुलते ही, उन्हें काठ मार गया।

कान भरना=किसी के मन में किसी के विरुद्ध कोई बात पैठा देना।

कान भर जाना=सुनते सुनते जी ऊब जाना।

काफ़िया तंग करना=बहुत हैरान करना।

काम तमाम करना=मार डालना।

किनारा कसना=अलग हो जाना; उ० संकट के समय तुम भी किनारा कसते हो!

(दूसरे के लिए) कुआँ खोदना=बुराई का सामान करना।

कान काटना=मात करना, बढ़ कर होना।

कान खड़े होना=चौकन्ना या सचेत होना, उ० कानाफूसी होते देखकर उसके कान खड़े हो गये।

कान देना=ध्यान देना; ज़रा मेरी बातों पर कान दो।

कान पर जूँ न रेंगना= कुछ भी ध्यान न देना।

कुएँ (में) भाँग पड़ना=सब की बुद्धि मारी जाना। (एक कुएँ का पानी बहुत आदमी पीते हैं; इसलिए यदि कुएँ में भाँग पड़ जाय तो उस कुएँ का पानी पीने वाले सभी आदमियों को नशा हो जायगा। इसी आशय को लेकर यह मुहावरा बना है); उ० वहाँ इस समय नीति अनीति का कोई सवाल नहीं है; वहाँ कुएँ भाँग पड़ी है।

कैंची काटना=नज़र बचा कर निकल जाना।

कोल्हू काट कर मोंगरी बनाना=कोई छोटी चीज़ बनाने के लिए बड़ी चीज़ नष्ट करना।

कौड़ी के मोल बिकना=बहुत सस्ता बिकना।

(ख)

खटाई में पड़ना = दुविधा में पड़ना।

खड़ा जवाब=तुरंत अस्वीकार। लोग रामबाबू से चन्दा माँगने गए थे, पर वहां से खड़ा जवाब मिला।

ख़म खाना=झुकना, दबना।

खरी सुनाना=सच्ची बात कहना, चाहे किसी को बुरा लगे या भला।

खलियान करना=काटकर ढेर कर देना; युद्ध में बहुत आदमियों को मारना।

ख़ाक में मिलना = बरबाद होना।

ख़ार खाना=डाह करना; उ० वह मुझ से ख़ार खाता है।

खोगीर की भरती=अनावश्यक और व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का इकट्ठा होना।

ख़ून सफ़ेद हो जाना=स्नेह आदि का नष्ट हो जाना।

खेत आना=युद्ध मे मारा जाना।

(ग)

गड़े मुर्दे उखाड़ना = दबीदबाई पुरानी बात उभाड़ना।

गड़ जाना=लज्जित होना; उ० अपने मुँह पर अपनी शिकायत सुनकर वे गड़ गये।

गरज गाँठना=मतलब निकालना।

गाँठ में बांधना=अच्छी तरह याद रखना; उ० एक न एक दिन तुम्हें अपने किये का फल मिलेगा; यह गाँठ में बांध लो।

गाढ़े में पड़ना=संकट में पड़ना।

गाढ़े की कमाई=मिहनत की कमाई।

गिरगिट की तरह रंग बदलना=बहुत जल्दी सम्मति या सिद्धान्त बदलना।

गुड़ खाना गुलगुलों से परहेज़=कोई बड़ी बुराई करना और छोटी बुराई से बचना।

गुदड़ी का लाल=कोई ऐसा गुणी, रंगरूप से जिसका गुणी होना प्रकट न होता हो।

गुदड़ी में लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु; छोटे स्थान में गुणी व्यक्ति।

गुल खिलना=विचित्र घटना होना; उ० लोगों को उसकी बेईमानी का पता चल गया है, अब देखिए क्या गुल खिलता है।

गुस्सा पीना=भीतर ही भीतर क्रोध कर के रह जाना।

गौं का यार=मतलबी।

(घ)

घर का न घाट का=निकम्मा।

घात पर चढ़ना=वश में आना।

घी के दीये जलना=मनोरथ सफल होना।

(च)

चंग पर चढ़ाना=मिजाज बढ़ा देना; घात पर चढ़ाना।

चलन से चलना=अपने पद और मर्यादा आदि के अनुकूल चलना।

चार चाँद लगना=चौगुनी शोभा या प्रतिष्ठा होना, उ० इस ग्रन्थ ने लेखक की कीर्त्ति में चार चाँद लगा दिया।

चिकने घड़े पर पानी पड़ना=किसी पर उपदेश का असर न पड़ना; उ० पिता ने पुत्र को बहुत समझाया, पर वहाँ तो चिकने घड़े पर पानी पड़ रहा था।

चिकने मुँह का ठग=ऐसा धूर्त्त जो देखने में भलामानुस जान पड़ता हो।

चिराग़ या दीया तले अँधेरा होना=गुणों वाले वस्तु या व्यक्ति में ऐब होना

चोली दामन का साथ=बहुत अधिक घनिष्ठता; प्रेम और त्याग में चोली दामन का साथ है।

चौकड़ी भूल जाना=किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाना; सिटपिटा जाना।

(छ)

छठेछमासे=कभी कभी; उ० मैं छठे छमासे वहाँ जाया करता हूँ।

छठी में नहीं पड़ना=प्रकृतिविरुद्ध होना; उ० देना तो उनकी छठी में नहीं पड़ा है।

छाँह न छूने देना=पास न फटकने देना।

छाँह बचाना=दूर रहना।

छाजों मेह बरसना=मूसलाधार पानी पड़ना।

(ज)

जड़ जमना या पकड़ना=दृढ़ या स्थायी होना।

जड़ उखाड़ना या खोदना=समूल नाश करना।

ज़बान पर होना=हरदम याद होना।

ज़बान में लगाम न होना=अनुचित बातें कहने का अभ्यास होना; उ० उनकी ज़बान में लगाम नहीं है, जो जीमे आता है, बक डालते हैं।

जबान देना या हारना=प्रतिज्ञा करना; वादा करना।

ज़मीन का पैरों तले से निकल जाना=सन्नाटे में आ जाना; उ० अपनी हार की खबर सुनते ही उनके पैरों तले से ज़मीन निकल गई।

ज़मीन चूमने लगना=गिर पड़ना उ० ठोकर खाते ही वे ज़मीन चूमने लगे।

जान का रोग=सब दिन कष्ट देने वाला; उ० यह छोटा सा मकान क्या है, जान का रोग है।

जान खाना=तंग करना।

ज़िद पर आना=हठ पकड़ना।

जब तक जीना तब तक सीना=ज़िन्दगीभर किसी कष्टदायक काम में लगे रहना।

(ट)

टकसाल का खोटा=पक्का दुष्ट।

टका सा जवाब देना=तुरंत अस्वीकार करना।

टका सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित हो जाना।

टट्टी की आड़ से शिकार खेलना=किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना; छिप कर बुरा काम करना।

टांग अड़ाना=फजूल दखल देना।

टेढ़ी खीर=मुश्किल काम।

(ठ)

ठंढी साँस भरना=दुःखित होना।

ठंढी गरमी=ऊपर की प्रीति।

ठगा सा=धोखा खाया हुआ सा, भौचक्का; उ० यह दृश्य देख कर मैं ठगा सा रह गया।

ठठेरे की बिल्ली=ऐसा व्यक्ति जो कोई अरुचिकर काम देखते देखते अभ्यस्त हो जाता है। ठठेरे की बिल्ली रात दिन वर्त्तन को पीटना सुना करती है, इससे वह किसी प्रकार की आहट या खटका सुन कर नहीं डरती।

(ड)

डूबते को तिनके का सहारा=संकट में पड़े हुए व्यक्ति को थोड़ी सहायता भी बहुत होना।

डेढ़ ईंट की जुदा मसजिद बनाना=मिल कर काम न करना।

(ढ)

ढाक के तीन पात=सदा एक सा निर्धन, कभी भरापूरा नहीं।

ढेर हो जाना=मर जाना; ध्वस्त हो जाना।

ढेर करना=मार डालना।

(त)

तरह देना=ख़याल न करना।

तलवे चाटना या सहलाना=खुशामद करना।

तवे की बूँद=क्षणस्थायी; जिससे कुछ भी तृप्ति न हो; उ० यह संसार तवे की बूँद है। इतना सा भोजन तो मेरे लिये तवे की बूँद है।

किसी बात की तह तक पहुंचना=यथार्थ रहस्य जान लेना।

तारे गिनना=चिन्ता या आसरे में बेचैनी से रात काटना।

तिनके चुनना=बेसुध हो जाना; पागल हो जाना।

तिनके चुनवाना=पागल बना देना; मोहित करना।

तिनके को पहाड़ करना; तिल का ताड़ करना=छोटी सी बात को बड़ी बनाना। तुच्छ बात को बहुत महत्त्व देना।

तीन तेरह करना=तितर बितर करना।

तोते की तरह आँखें फेरना=बहुत बेमुरौवत हो जाना।

(थ)

थाली का बैंगन=अस्थिर सिद्धान्त वाला व्यक्ति।

थूक उछालना=व्यर्थ बकवाद करना।

थूक कर चाटना=कह कर मुकर जाना।

(द)

दम देना; दम में लाना=फ़ुसलाना

दम खाना=धोखा खाना, फरेब में आना।

दाँत किरकिरे होना=हार मानना।

दाँत काटी रोटी=अत्यन्त घनिष्ट मित्रता; उनसे मेरी दाँत काटी रोटी है।

दाँत खट्टे करना=खूब हैरान करना।

दाँतों तले उँगली दबाना=अचरज में आना।

दाल न गलना=युक्ति न लगना; उ० यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी।

दाल में कुछ काला होना=कुछ संदेह की बात होना; उ० आज कल पंडित जी सुधारवादी हो गये हैं; हो न हो, दाल में कुछ काला है।

दिमाग़ झड़ना=अहंकार नष्ट होना।

दूज का चाँद होना=कम दिखलाई पड़ना; उ० भाई, तुम तो दूज का चाँद हो गये हो, कभी तुमसे भेंट ही नहीं होती।

दूर की कहना=समझदारी की बात कहना।

(ध)

धुएँ का धरोहर=क्षणस्थायी वस्तु।

धोबी का कुत्ता=वह व्यक्ति जो एक ठिकाने जम कर कोई काम न करे।

(न)

नज़र पर चढ़ना=पसंद आ जाना; उ० यह चीज़ मेरी नज़र पर चढ़ गई है।

नाक का बाल=सदा साथ रहनेवाला घनिष्ठ मित्र।

नाकों चने चबाना=हैरान होना।

नाकों चने चबवाना=खूब तंग करना; हैरान करना।

नाक पर दीया बाल कर आना=सफलता प्राप्त कर के आना।

नाक पर मक्खी न बैठने देना=थोड़ा सा भी दोष न सह सकना। ज़रा भी अहसान न उठाना।
नाकों दम करना=तंग करना, हैरान करना।
नाक रगड़ना=मिन्नत करना।
नाकों आना=हैरान होना।
नाक लगाकर बैठना=बड़ा इज़्ज़त वाला बनना।
(किसी की) नाक रख लेना=किसी की इज़्ज़त बचा लेना।
नाक कटना=इज़्ज़त जाना।
निन्नानवे के फेर में पड़ना=रुपया बढ़ाने की धुन में होना।
नौ दो ग्यारह होना=देखते देखते भाग जाना।
नौ तेरह बाइस बताना=टालमटोल करना।

(प)

पते की बात=रहस्य या भेद प्रकट करने वाली बात।
पहलू बचाना=कतरा कर निकल जाना।
पहलू पर होना=सहायक होना।
पहाड़ टूटना=अचानक कोई भारी विपत्ति आना।
पाँचो उँगलियाँ घी में होना=खूब बन आना; उ० अब वह अपने घर का मालिक है; अब उसकी पाँचो उँगलियाँ घी में हैं।
पानी पानी होना=अत्यन्त लज्जित होना; उ० फटकार सुन कर वह पानी पानी हो गया।
पानी फिरना=बरबाद हो जाना; उ० उनके हौसलों पर पानी फिर गया।

पानी में फेंकना या बहाना=नष्ट करना; उ० रुपये पानी में न बहाओ।
पानी उतारना=इज़्ज़त उतारना।
पापड़ बेलना=कठोर परिश्रम करना; दुःख से दिन काटना।
पाँव फूँक फूँक कर रखना=बहुत सँभल कर काम करना।
पाँव धरती पर न रहना=बहुत घमंड होना।
पेट में डाढ़ी होना=बचपन ही में बहुत बुद्धिमान होना।
पेट मे पाँव होना=अत्यन्त छली होना।
पेट में चूहे कूदना या दौड़ना=बहुत भूख लगना; उ० मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।
पेश पाना=बर्त्ताव करना; उ० मेरे साथ वह अच्छा पेश आए।
पेश आना=जीतना; उ० बहस करने में तुम से कोई नहीं पेश पा सकता।
पौबारह होना=पाँचो उँगलियाँ घी में होना।

(फ)

फूटी आँखों न भाना=एक आँख न भाना; तनिक भी न सुहाना।
फूला फिरना=घमंड में रहना; वह दूसरे की कमाई पर फूला फिरता है।

(ब)

बगलें झाँकना=बचाव का रास्ता ढूँढना; उ० मेरे प्रश्न करने पर वह बगलें झाँकने लगा।
बराबर करना=समाप्त कर देना; उसने थोड़े ही दिनों में अपने बाप की सब कमाई बराबर कर दी।

बहती गंगा में हाथ धोना=किसी ऐसी बात से लाभ उठाना, जिससे सभी लाभ उठा रहे हों।

(किसी चीज़ का) बाज़ार गर्म होना=बाज़ार में खूब लेन देन या बिक्री होना; आज रूई का बाज़ार गर्म है।

(किसी चीज़ का) बाज़ार तेज़ होना=मूल्य वृद्धि पर होना; उ० आज रूई का बाज़ार तेज़ है।

(किसी चीज़ का) बाज़ार मंदा होना=मूल्य में ह्रास होना।

बात पी जाना=बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना।

बाल बाँका न होना=कुछ भी हानि न होना; उ० मेरे रहते तुम्हारा बाल बाँका नहीं हो सकता।

बाल बाँका करना=अनिष्ट करना, हानि पहुंचाना।

बोलबाला होना=प्रतिष्ठा होना; चलती होना; आजकल उनका बोलबाला है।

बीड़ा उठाना=कोई काम करने का संकल्प या प्रतिज्ञा करना। (शायद पहले कभी ऐसा रिवाज था कि कोई कठिन काम आ पड़ने पर लोगों के आगे पान के बीड़े रक्खे जाते थे, और जो बीड़ा उठाता था उस पर उस कार्य्य का भार समझा जाता था।)

(भ)

(किसी बात का) भूत चढ़ना या सवार होना=बहुत अधिक आग्रह या हठ होना; उ० उन पर विदेश जाने का भूत सवार है।

भूत चढ़ना या सवार होना=बहुत अधिक क्रोध होना; उ० गालियाँ सुनते ही उन पर भूत चढ़ गया (या सवार हो गया)।

भौंह जोहना=प्रसन्न करने के लिए संकेत पर चलना; खुशामद करना।

(म)

मक़दूर से बाहर पाँव रखना=सामर्थ्य या योग्यता से बढ़ कर काम करना।

मक़दूर चलना=बस चलना।

मन चलना=इच्छा होना।

मन के लड्डू खाना=व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना।

मिज़ाज न मिलना=घमंड के कारण बात न करना; जब से उन्हें नौकरी मिली है, तब से तो उनके मिज़ाज ही नहीं मिलते।

मुँह में खून या लोहू लगना=चसका लग जाना; उ० एक दिन तुम्हें रुपये क्या मिल गए, तुम्हारे मुँह में खून लग गया। (हिंसक-जंतुओं को खून का स्वाद मिलते ही, उनकी उत्तेजना बढ़ जाती है; इसी भाव को लेकर यह मुहावरा बना जान पड़ता है)।

मुँह मे लगाम न होना=जो कुछ मुँह में आवे सो कह देना।

मुँह से दूध टपकना=बहुत ही अनजान या बालक होना।

मुँह से फूल झड़ना=मुँह से बहुत ही सुन्दर और प्रिय बातें निकलना।

मुँहकी खाना=धोखा खाना।

मुँह पर नाक न होना = लज्जा न होना ।

मुरादों के दिन=युवावस्था ।

मैदान साफ होना = मार्ग मे कोई बाधा आदि न होना ।

मैदान मारना = विजय प्राप्त करना ।

मोम की नाक=अस्थिर मति; जिसकी सम्मति बहुत जल्दी बदल जाती हो ।

मोहरा लेना=मुकाबला करना ।

(र)

रंग जमाना=धाक बांधना; उ० सभा में उन्होंने खूब रंग जमाया ।

(किसी के) रंग मे ढलना या रँगा होना=किसी के प्रभाव से प्रभावित होना, उ० तुम भी उन्हीं के रंग में ढले हुए हो (या रँगे हुए हो) !

रंग में भंग करना=आनन्द में विघ्न डालना ।

रगपट्ठे से परिचित होना, रग रेशे से वाकिफ़ होना=स्वभाव, व्यवहार आदि से अच्छी तरह परिचित होना ।

रोटियों का मारा=भूखा ।

रोटियाँ तोड़ना = आराम से पेट पालना ।

(ल)

लँगोटी पर फाग खेलना=कम सामर्थ्य होने पर भी बहुत अधिक व्यय करना; थोड़ा ही साधन होने पर विलासी होना ।

लँगोटी बँधवाना = बहुत दरिद्र कर देना ।

लकीर पीटना = बिना समझे बूझे पुरानी प्रथा पर चलना ।

लाख से लीख होना=अत्यधिक से अत्यल्प होना; सब कुछ से कुछ न रह जाना ।

(किसी चीज़ के) लाले पड़ना=किसी चीज़ के लिये मुहताज़ होना।
लिफ़ाफ़ा खुल जाना=भेद खुल जाना।
लेने के देने पड़ना=लाभ के बदले हानि होना।

(स)

सब्ज़ बाग दिखाना=अपना काम निकालने के लिये, या फँसाने के लिए, बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।
सातों भूल जाना=होश हवास चला जाना।
सिक्का जमाना=प्रभुत्व जमाना।
सितारा चमकना या बलंद होना=भाग्योदय होना।
सिप्पा भिड़ाना=युक्ति करना।
सिर आँखों पर होना=सहर्ष स्वीकार होना; उ० आप की आज्ञा सिर आँखों पर है।
सिर उठाना=विरोध में खड़ा होना; शत्रुता के लिए सन्नद्ध होना; (२) प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना।
सिर ऊँचा करना=प्रतिष्ठा प्राप्त करना; उ० तुमने मेरा सिर ऊँचा किया। उसने अपना सिर ऊँचा किया।
सिर नीचा करना=बेइज़्ज़त होने का कारण होना; उ० तुमने मेरा सिर नीचा किया।
सिर चढ़ कर बोलना=छिपाये न छिपना; उ० पाप सिर चढ़ कर बोलता है।
सिर मारना=प्रयत्न करना।
सिर से कफ़न बाँधना=मरने के लिये उद्यत होना।
सिर पर खेल जाना=प्राण दे देना।

(ह)

हक़ अदा करना=कर्त्तव्य पालन करना।

हजामत बनाना=धोखा देकर धन हरण करना, या लूटना।

हथेली का फफोला=अत्यन्त सुकुमार वस्तु।

हवा बताना=टालना।

(किसी की) हवा लगना=किसी की संगत का प्रभाव पड़ना (अक्सर बुरे अर्थ मे प्रयुक्त)।

हवा खिलाना=कहीं भेजना; उ० तुम्हें जेलखाने की हवा खिलावेंगे।

(कसी वस्तु से) हाथ धोना=खो देना; उ० वह अपनी जान (या धन) से हाथ धो बैठा।

हाथ धोकर पीछे पड़ना=किसी काम में, सब कुछ छोड़ कर, प्रवृत्त होना।

हाथ न रखने देना=ज़रा भी बातों में न आना।

हाथ पाँव मारना=घोर प्रयत्न करना।

हाथ पड़ना=डाका पड़ना; आज बाज़ार में हाथ पड़ गया।

हाथ पाँव फूलना=भय से स्तब्ध हो जाना; उ० शेर को देखते ही शिकारी के हाथ पाँव फूल गए।

हाथ बँटाना=शामिल होना; उ० इस काम में मैं भी हाथ बँटाऊँगा।

हाथ मलना=बहुत पछताना; उ० जैसा किया वैसा पाया, अब हाथ क्या मलते हो।

हिरन होना=बहुत तेज़ी से भागना; मुझे देखते ही वह हिरन हो गया। शेर को देखते ही शिकारी के होश हिरन हो गए।

कहावत *

कहावतों का प्रयोग किसी प्रसंगविशेष पर, अलग वाक्य के समान होता है। यों तो बोलचाल में, अनुकूल प्रसंग के उपस्थित होते ही, बिना किसी भूमिका के भी कहावतों का प्रयोग किया जाता है; जैसे, एक साधारण हैसियत का व्यक्ति कहता है—"मेरे पास दसबारह हज़ार रुपये हों, तो एक बड़ी सी फुलवारी लगाऊँ।" यह सुनकर दूसरा व्यक्ति कहता है—"न होगा नौ मन तेल, न राधा नाचेगी।" किन्तु जब इसा कहावत को लिखना होगा तो उपर्युक्त प्रसंग को लिखकर स्पष्ट करना होगा, अन्यथा कहावत का तात्पर्य्य अस्पष्ट रह जायगा। कहावत का वास्तविक तात्पर्य्य अवसर या प्रसंग मे ही छिपा रहता है। उपर्युक्त कहावत को लिख कर

---

* मुहावरा और कहावत में अन्तर यह है मुहावरे का शब्द के समान एक निश्चित अर्थ होता है और वह वाक्य के भीतर प्रयुक्त होता है; मुहावरे का अर्थ स्पष्ट होने के लिए प्रसंग या अवसर के उल्लेख की ज़रूरत नहीं। किन्तु कहावत का प्रयोग स्वतन्त्र वाक्य के समान होता है, और उसका अर्थ स्पष्ट होने के लिए प्रसंग के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। दोनों में समानता यह है कि दोनों का वास्तविक तात्पर्य्य अक्षर या शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है।

कहावत का प्रयोग बोल चाल में अधिक होता है। साहित्यिक भाषा में उसका प्रयोग कम देखा जाता है। किन्तु मुहावरा बोल चाल या साहित्यिक भाषा, दोनों में एक समान व्यवहृत होता है।

इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—"राम एक साधारण हैसियत का आदमी है। एक दिन उसने श्याम से कहा—'मेरे हाथ में यदि दस बारह हज़ार रुपए आयें तो एक बड़ी सी फुलवारी लगाऊँ।' यह सुनकर श्याम बोला—'न होगा नौ मन तेल न राधा नाचेगी।'

बहुधा प्रसंग की भिन्नता से कहावत के तात्पर्य्य में भी भिन्नता आ जाती है। उपर्युक्त प्रसंग के अनुसार 'न होगा नौ मन तेल न राधा नाचेगी' इस कहावत से तात्पर्य्य निकला—"न दस बारह हज़ार रुपए होंगे, न बड़ी सी फुलवारी लगेगी।" यदि प्रसंग बदल कर इस प्रकार कर दिया जाय—"राम ने कहा, 'मेरे पास एक आलीशान महल होगा, तब अपने लड़के की शादी करूँगा।' यह सुनकर श्याम ने कहा—'न होगा नौ मन तेल, न राधा नाचेगी" ? तो यहाँ पर यह तात्पर्य्य निकलेगा कि 'न आलीशान महल होगा न लड़के की शादी होगी।'

बहुधा किसी विद्वान्, कवि या महात्मा की उक्ति या नीति की उक्ति भी किसी बात की पुष्टि में कहावत के रूप में प्रयुक्त होती है; जैसे, दुष्टों से कोई नहीं लगता; कहा है, 'वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू'। अब काम बिगड़ जाने पर रुपया मिला है; का वर्षा जब कृषि सुखाने! प्रेम के वश में होकर लोग क्या क्या नहीं करते! शेक्सपियर ने ठीक कहा है—'प्रेम अंधा होता है।'

नीचे कुछ कहावत दिये जाते हैं :—

अकेला चना भाँड़ नहीं फोड़ता=एक व्यक्ति के किए कोई कठिन काम नहीं होता।

अशर्फी की लूट कोयले पर छाप=मूल्यवान वस्तुओं को तो नष्ट किया जाय और तुच्छ वस्तुओं का संग्रह किया जाय।

अपनी अपनी डफली अपना अपना राग=जिसके मन में जो आवे सो कहे या करे, कोई किसी की बातों पर ध्यान न दे।

अधजल गगरी छलकत जाय=थोड़ी विद्या या थोड़े धन वाला अपनी विद्या या धन का दिखावा करता है।

आप डूबे तो जग डूबा=जो बात अपने ऊपर बीतती है, भोगनेवाला समझता है कि सारे संसार के ऊपर वही बात बीत रही है; मरणासन्न व्यक्ति के लिए संसार असार दीखता है।

आग लगते झोंपड़ा जो निकसे सो लाभ=नष्ट होती हुई वस्तुओं में से जो कुछ बच जाय, उसे लाभ ही समझना चाहिए। (क्योंकि छोड़ देने पर तो सभी का नाश निश्चित ही है)

उलटा चोर कोतवाल को डाँटे=अपराध करनेवाला व्यक्ति उलटे पकड़ने वाले को डाँट बतावे, या दोषी बनावे।

ऊँचे दूकान, फीके पकवान=जहाँ अधिक तड़क भड़क होती है, वहाँ वास्तविकता कम होती है; वहाँ से किसी अच्छी बात या वस्तु की आशा करना व्यर्थ है।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं=एक स्थान पर दो उग्र स्वभाव वाले व्यक्तियों का निवास नहीं हो सकता; एक एक ही वस्तु पर दो व्यक्तियों का अधिकार नहीं होसकता।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर=समयानुसार एक को दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ता ही है।

काजल की कोठरी में धब्बे का डर !=बदनाम जगह में, या बदनाम लोगों के बीच में रह कर बदनामी का भय क्यों किया जाय ! (बदनामी तो एक न एक दिन होगी ही, यह तो जानी हुई बात है)।

काम जो आवै कामरी, का लै करै कमाच=जिस वस्तु से काम निकले वही रखनी चाहिए।

कायले की दलाली में हाथ काले=जैसा काम किया जाता है, वैसा ही नाम होता है। बुरे काम के पास फटकने से भी अपयश ही हाथ लगता है।

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती=अपनी खराब वस्तु को भी कोई खराब नहीं कहता।

गाँव का जोगी जोगड़ा बाहर का जोगी सिद्ध=बाहर के गुणवान् व्यक्ति की क़द्र होती है, गाँव या घर के गुणवान व्यक्ति की क़द्र नहीं होती।

गुरु गुड़, चेला चीनी=सिखाने वाले से सीखने वाला ही बढ़ गया।

घर की मुर्गी दाल बराबर=घर की चीज़ की क़द्र नहीं होती; घर की वस्तु का कोई मूल्य नहीं समझता।

घर का भेदिया लंकादाह=घर ही में शत्रु निकल जाने पर घर का नाश हो जाता है।

चाम की मोटरी कुत्ता रखवार=जो जिस वस्तु को लेना चाहे, उसी के हाथ में वह वस्तु रक्षार्थ सौंप देना।

चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात=कुछ दिनों के लिए सुख, फिर वही दुःख ही दुःख।

चोर की दाढ़ी में तिनका=अपराध करने वाला स्वयं सशंक रहता है
चोर-चोर मौसेरे भाई=एक अपराधी की दूसरे अपराधी से मित्रता हो जाती है। समान दुराकांक्षा वाले व्यक्तियों में घनिष्ठता हो जाती है।
जिसकी लाठी उसकी भैंस=बलवान व्यक्ति का ही किसी वस्तु पर अधिकार होता है।
जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे विदेश=कोई निकम्मा व्यक्ति चाहे कहीं रहे, इससे किसी का कुछ लाभ या हानि नहीं।
जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै=अवसर के अनुसार ही काम करना चाहिए।
दस की लाठी एक का बोझ=जो काम दस व्यक्तियों के मिल कर करने से आसान हो जाता है, वही एक व्यक्ति के लिए कठिन हो जाता है।
दादा कह बनिया गुड़ न दे=चालाक आदमी चापलूसी मे नहीं आता।
दुधार गाय की लात भली=जिस व्यक्ति से कुछ लाभ हो, उसकी डाँट फटकार भी या कोई अप्रिय बात भी अच्छी ही मालूम होती है।
दूर के ढोल सुहावने=दूर की सुनी सुनाई बात प्यारी मालूम होती है। (आँखों के आगे वैसी नहीं मालूम होती)
दूध का जला छाँछ को फूँक फूँक कर पीता है=एकबार धोखा खा जाने पर धोखा खाने वाला व्यक्ति साधारण बातों में भी सावधानी से चलता है।

धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का=ऐसा व्यक्ति जिसकी पूछ कहीं न हो, जो इधर से उधर मारा मारा फिरे।

न देने के नौ बहाने=जब किसी को कोई वस्तु देने की इच्छा नहीं होती है, तो वह जितना चाहे बहाने कर सकता है। आदमी टालमटोल करना चाहे तो बहाने की कमी नहीं हो सकती।

न रहे बाँस न बाजे बाँसुरी=न कोई वस्तु विशेष रहेगी, और न उसका प्रयोग होगा।

नदी (या जल) में रह कर मगर से बैर=जिसके अधिकार या वश में रहना उसी से शत्रुता करना।

नाचे न जाने आँगन टेढ़=किसी काम के करने का ढंग नहीं जानना, और साधनों या सामग्रियों के खराब होने का बहाना करना।

पूछे न आछे, मैं दुलहिन की चाची; मान न मान, मैं तेरा मेहमान=जहाँ आदर-सत्कार या पूछ-पाछ न हो वहाँ कोई ढंग रचकर आदर सत्कार पाने की चेष्टा करना।

पसे की हाँडी गई, कुत्ते की जाति पहचानी गई=थोड़ी हानि सहकर किसी व्यक्ति की दुष्ट प्रकृति या पता चल गया।

बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ शुभान अल्लाह=बड़ा या ऊपर वाला तो अपने नाम या पदवी के अनुरूप खराब प्रकृति का है ही, नीचे वाला उससे भी बढ़ कर खराब प्रकृति का है।

बिल्ली के भाग से छींका टूटा=किसी ऐसी अप्रत्याशित घटना का हो जाना जिससे किसी व्यक्ति को लाभ पहुँचता हो।

मियाँ की दौड़ मस्जिद तक=किसी के कार्य्यक्षेत्र या विचारशक्ति का संकुचित होना।

रोजा गये छुड़ाने नमाज़ गले पड़ी=जिस वस्तु से छुटकारा पाना चाह रहे थे, उससे छुटकारा तो मिला नहीं, उलटे एक दूसरी झंझट सिर पर सवार हो गयी।

लड़ें सिपाही नाम सुलतान का=काम छोटे करते हैं, पर नाम बड़ों का होता है। नीचे वाले सफलता प्राप्त करते हैं, कीर्त्ति ऊपर वालों की होती हैं।

हाथ कंगन को आरसी क्या?=जब कोई बात या वस्तु प्रत्यक्ष है तो प्रमाण ढूँढ़ने की क्या आवश्यकता?

हाथी चले बजार, कुत्ता भूँके हजार=किसी उचित काम के करने में दूसरों की निन्दा की पर्वाह नहीं करनी चाहिए।

परिशिष्ट

लिंगकोष

अ

अंगुल-पुं०
अँगुली-स्त्री
अँगूठी-स्त्री०
अंगूर-पुं०
अँगोछा-पुं०
अंचल-पु०
अंधड़-पु०
अकड़-स्त्री०
अक़बाल-पु०
अकसार-स्त्री०
अक्ल-स्त्री०
अक्स-पु०
अख़बार-पु०
अचकन-पु०
अचार-पु०
अजवाइन-स्त्री
अटक-स्त्री
अड़चन-स्त्री
अड़हुल-पु०
अदरक-पु०
अनबन पु०
अनार-पु०
अपील-स्त्री०
अफरा-पु०
अफ़वाह-स्त्री०
अफ़ीम-स्त्री०
अबरक-पु०
अबीर-पु०
अबेर-स्त्री०
अमचूर-पु०
अमड़ा-पु०
अमन-पु०
अमर बेल-पु०
अमलतास-पु०
अमानत-स्त्री
अमावट-स्त्री०
अर्ज-स्त्री०
अर्जी-स्त्री०
अरमान-पु०
अरहर-स्त्री०
अरारूट-पु०
अर्चि-स्त्री०
अलक-पु०
अलमारी-स्त्री
अलवान-पु०
अलसी-स्त्री०
अवनि-स्त्री०
अवलि-स्त्री०
अशरफ़ी-स्त्री०
असर-पु०
असि-स्त्री०
अहिवात-पु०
अहेर-पु०

आ

आँख-स्त्री०
आँगन-पु०
आँच-स्त्री०
आँट-स्त्री०
आँत-स्त्री०
आँव-स्त्री०
आँवाँ-पु०
आँसू=पु०
आईन-पु०

आईना-पु०
आउंस-पु०
आक़्बत-स्त्री०
आक्सिजन-पु०
आखेट-पु०
आग-स्त्री०
आटा-पु०
आड़-स्त्री०
आढ़त-स्त्री०
आतशक-स्त्री०
आत्मा-स्त्री०
आदत-स्त्री०
आदाब-पु०
आधार पु०
आधासीसी-स्त्री
आधि-स्त्री०
आन-स्त्री०
आनबान-स्त्री०
आनाकानी-स्त्री
आपद्-स्त्री०
आपस-स्त्री०
आपा-पु०

आफ़त-स्त्री०
आफ़ियत-स्त्री०
आफ़िस-पु०
आब(चमक)-स्त्री
आब(पानी)पु०
आबजोश-पु०
आबदस्त-पु०
आबनूस-पु०
आबरू-स्त्री
आभार पु०
आमद-स्त्री०
आमोख्ता-पु०
आय-स्त्री०
आयु-स्त्री
आरसी-स्त्री०
आर्ट-स्त्री०
आर्टिकिल-स्त्री०
आर्डर-पु०
आलस-पु०
आलाप-पु०
आलू-पु०
आवाज़-स्त्री०

आशिष-स्त्री
आशीर्वाद-पु०
आसरा-पु०
आसेब-पु०
आस्तीन-स्त्री०
आह-स्त्री०
आहट-स्त्री
आहुति-स्त्री

इ

इंच-स्त्री०
इंजील-स्त्री०
इंतज़ाम-पु०
इंतज़ार-पु०
इंतहा-पु०
इंदु-पु०
इंद्रिय-स्त्री
इंधन-पु०
इजलास-पु०
इजहार-पु०
इजाज़त-स्त्री
इज्ज़त-स्त्री०
इत्तला-स्त्री
इत्र-पु०

इनकम-स्त्री०
इनफ्लुएंजा-पु०
इनाम-पु०
इनायत-स्त्री०
इनसानियत-स्त्री०
इमारत-स्त्री०
इम्तहान-पु०
इलाक़ा-पु०
इलाज-पु०
इलायची-स्त्री
इल्म-पु०
इल्लत-स्त्री०
इशारा-पु०
इश्क-पु०
इश्तहार-पु०
इसपात-पु०
इसपिरिट-स्त्री
इसबगोल-पु०
इसलाह-पु०
इस्तिरी-स्त्री०
इस्तीफ़ा-पु०
इहतियात-स्त्री०

ई
ईंगुर—पु०
ईंट—स्त्री०
ईंटा—पु०
ईख—स्त्री०
ईजाद—स्त्री०

उ
उछलकूद—स्त्री०
उछाल—स्त्री०
उज्र—पु०
उठबैठ—स्त्री०
उठान ,,
उड़ान ,,
उतरन ,,
उतार ,,
उथलपुथल ,,
उधेड़बुन ,,
उपज ,,
उपला—पु०
उपवास ,,
उपाधि—स्त्री०
उफान—पु०
उबटन—पु०
उबार ,,
उबाल ,,
उभाड़ ,,
उमंग—स्त्री०
उमड़ ,,
उमस ,,
उमेठन ,,
उम्मीद ,,
उम्र ,,
उरद—पु०
उर्दू—स्त्री०
उलझन ,,
उलट पलट ,,
उलटफेर—पु०
उलाहना ,,
उल्का—स्त्री०
उल्था—पु०
उषा—स्त्री०
उसास ,,
उसूल—पु०
उस्तुरा ,,

ऊ
ऊँघ—स्त्री
ऊँघन ,,
ऊल—पु०
ऊखल—पु०
ऊधम ,,
ऊन ,,
ऊब—स्त्री
ऊसर—पु०

ऋ
ऋक्—स्त्री०
ऋतु ,,
ऋद्धि ,,

ए
एकबाल—पु०
एकरार ,,
एका ,,
एजेंसी—स्त्री०

ऐ
ऐंठ—स्त्री
ऐंठन ,,
ऐब—पु०

ओ
ओझल—पुं०
ओट—स्त्री०
ओठ—पु०
ओप स्त्री०
ओर— ,,
ओल—पुं०
ओला— ,,
ओषधि—स्त्री०
ओस ,,
ओहदा—पुं०

औ
औक़ात(समय) पुं०
औक़ात (हैसियत)—स्त्री०
औज़ार—पुं०
औलाद—स्त्री०
औसत—पुं०

क
कंठ—पुं०
कंडील—स्त्री०

कंदरा-स्त्री०	कतरब्योत-स्त्री	क़यामत-स्त्री०	कॉंग्रेस-स्त्री०
कंदुक-पुं०	क़त्तरा-पु०	करतूत ,,	कॉंप ,,
कंधा- ,,	क़त्ल-पु०	करवट- ,,	कारतूस-पु०
कंपास ,,	क़तार-स्त्री	करवाल-पुं०	कार नस-स्त्री०
कंपोज़ ,,	क़द-पु०	करामात-स्त्री०	कालर-पुं०
कंपोजिंग स्त्री०	क़द्र-स्त्री	कराह-पुं०	कालिख-स्त्री०
कंबल-पुं०	क़नात ,,	क़लम-पुं०स्त्री०	काश्त ,,
ककहरा ,,	कपास ,,	कलह-पुं०	किताब
कगार ,,	कपूर -पु०	कवच ,,	किफ़ायत ,,
कचकच-स्त्री०	कफ़न ,,	कवायद-स्त्री०	किरच ,,
कचरकूट-पुं०	कबाब ,,	कशा-मकश ,,	किरण ,,
कचहरी-स्त्री०	क़बूल ,,	कशीदा-पुं०	किरीट-पुं०
कछार-पुं०	क़बूलियत-स्त्री	कसक-स्त्री०	क़िला ,,
क़ज़ा-स्त्री०	कब्जियत ,,	क़सम ,,	किशमिश-स्त्री०
कजिया-पु०	क़ब्र- ,,	कसर ,,	किश्त ,,
कटहल-पुं०	कमंद ,,	कसरत ,,	कीचड़ पुं०
कटार-स्त्री०	कमर ,,	कस्तूरी ,,	क़ीमत स्त्री०
कटोरा-पुं०	कमरबंद-पुं०	कहकहा-पुं०	कुंज-पु०
कठौत-स्त्री०	कमान-स्त्री	क़हत ,,	कुटेव-स्त्री०
कठौता-पुं०	कमाल-पुं०	कहर ,,	कुदरत-,,
कड़ाह-पु०	कमीज़-स्त्री०	कहावत-स्त्री०	कुदाल-,,
कतरन-स्त्री०	कमीशन-पु०	कौंख ,,	कुमक- ,,

कुलाँच–स्त्री०
कूक– ,,
कूच ,,
कृमि– पुं०
केंचुल–स्त्री०
कैद– ,,
कैबिनेट–,,
कोकिल–स्त्री०
कोख– ,,
कोदो–पु०
कोपल ,,
कोयल–स्त्री०
कोर– ,,
कोर्टशिप ,,
कोल्हू–पुं०
कोहबर ,,
क्लिप–स्त्री०

ख

खंजर–पु०
खखार ,,
खजूर–पु०स्त्री०
खटखट–स्त्री०
खटपट–स्त्री०
खड़बड़ ,,
खड़ाऊँ ,,
खड़िया ,,
ख़त–पु०
ख़ता–स्त्री०
खपड़ा–पु०
खपरैल–स्त्री०
ख़बर ,,
ख़मीर–पु०
ख़रीफ़–स्त्री०
खलियान–पुं०
खसखस–स्त्री०
खाँड़ ,,
ख़ाक ,,
खाज ,,
ख़ातिर ,,
खाद ,,
खान ,,
खाल ,,
ख़िज़ाब–पु०
ख़िलअत–स्त्री०
खिलौना–पु०
खींचतान–स्त्री
खीज–स्त्री०
खीर ,,
ख़ुराक ,,
ख़ुशामद ,,
ख़ैरात ,,
खोंच
खोज ,,
खोल पु०
खौर स्त्री०
ख़्वाहिश ,,

ग

गंध–स्त्री०
गंधक ,,
गच–पु०
गज़ट ,,
ग़ज़ल–स्त्री०
गठन ,,
गठिया ,,
गढ़न ,,
गत ,,
ग़दर पु०
गद्दा
ग़नीमत–स्त्री०
ग़फ़लत ,,
गमक–पु०
ग़रज़–स्त्री०
गरदन ,,
गर्द ,,
गला पु०
गलीचा ,,
ग़लीज़ ,,
ग़ल्प स्त्री०
गवर्नमेंट ,,
ग़श पु०
ग़श्त ,,
गाँठ स्त्री०
गाज ,,
गाजर ,,
गात–पु०
गारद–स्त्री०
गाल–पु०
ग़िज़ा–स्त्री०

गिरह—स्त्री०

गिलट—पु०

गिलाफ ,,

गिलास ,,

गीत ,,

गीता स्त्री०

गुंज ,,

गुंजा ,,

गुंजाइश—स्त्री०

गुंजार—पु०

गुग्गुल—,,

गुज़र - ,,

गुज़ारिश—स्त्री

गुनाह पु०

गुफा—स्त्री०

गुफ्तगू ,,

गुबार—पु०

गुलदस्ता,,

गुलाब ,,

गुलाबजामुन पु०

गुलाल—पु०

गुलूबंद—पु०

गुहार—स्त्री०

गँज ,,

गेंद—पु०

गेरू—स्त्री०

ग़ैरत ,,

गैस ,,

गोंद ,,

गोखरू—पं०

गोद—स्त्र

गोदाम—पुं०

गोबर ,,

गोभी—स्त्री०

गोर ,,

गोह ,,

ग़ौर—पं०

ग्रीष्म—स्त्री०

घ

घटा—स्त्री०

घटाव—पुं०

घनचक्कर ,,

घपला ,,

घमसान—पु०

घरबार ,,

घसीट—स्त्री०

घाट—पु०

घात ,,

घाव ,,

घास—स्त्री०

घिचपिच ,,

घिन ,,

घुँघनी ,,

घुँघरू—पुं०

घुड़दौड़—स्त्री०

घुड़नाल ,,

घुन—पुं०

घुमाव ,,

घुसपैठ—स्त्री०

घूँघट—पु०

घूँघर ,,

घूँट ,,

घूम—स्त्री०

घूस ,,

घेर—पु०

घ्राण—स्त्री०

च

चंग—स्त्री०

चंगुल—पु०

चँगेर—स्त्री

चंचु(चोंच)—स्त्री

चंडू—पु०

चन्द्रहार ,,

चंपा ,,

चँवर ,,

चंसुर ,,

चकमक ,,

चकाचौंध—स्त्री०

चक्कर—पु०

चक्षु ,,

चटक—स्त्री०

चढ़त ,,

चद्दर ,,

चना—पु०

चपकन—स्त्री०

चपत—पु०

चपरास—स्त्री०

चपेट-स्त्री०
चप्पल—पु०
चमक—स्त्री०
चमचम ,,
चमन—पु०
चमरख-स्त्री०
चमू ,,
चरखा—पु०
चरस ,,
चलन ,,
चलान—स्त्री०
चवाव—प०
चश्म—स्त्री०
चहक ”
चहलपहल”
चाट ”
चादर ”
चाबुक-पु०
चाय-स्त्री०
चाल ,,
चालचलन-पु०
चालढाल-स्त्री०

चाव—पु०
चाह-स्त्री०
चाहत ,,
चिंघाड़ ,,
चिउड़ा—पु०
चिक—स्त्री०
चिट ,,
चिड़िया ,,
चिढ़ ,,
चिनक ,,
चिराग़—पु०
चिरायता ,,
चिलक—स्त्री०
चिल्ल-पों ,,
चिलम ,,
चीख़ ,,
चीज़ ,,
चील ,,
चीलर—पु०
चुकंदर ,
चुल्लू ,,
चैं ,,

चूक-स्त्री०
चूर-पु०
चूरन ,,
चेचक—स्त्री०
चेत-पु०
चेन-स्त्री०
चैन-पु०
चोंच-स्त्री०
चोकर-पु०
चोट-स्त्री०
चौंक-स्त्री०
चौखट ,,
चौथ ,,
चौपड़ ,,
चौसर-पु०

छ

छठ—स्त्री०
छड़ ,,
छत ,,
छनक ,,
छप्पय—पु०
छप्पर ,,

छमक-स्त्री०
छमाछम ,,
छल—पु०
छलक-स्त्री०
छलाँग ,,
छाँह ,,
छाछ ,,
छाज—पु०
छाजन ,,
छाता ,,
छान-स्त्री०
छानबीन,,
छाप ,,
छार—पु०
छाल-स्त्री०
छिलका—पु०
छींट-स्त्री०
छींटा—पु०
छुआछूत-स्त्री०
छूट ,,
छेड़ ,,
छेद—पु०

छोर—पु०	ज़हर-स्त्री०	जुगत-स्त्री०	झंखाड़-पु०
छोह ,,	जहाज-पु०	जुगनू—पु०	झंझट-स्त्री०
छौंक—स्त्री०	जाँघ—स्त्री०	जुर्म ,,	झख ,,
ज	जाँच ,,	जुल्फ़-स्त्री०	झड़ ,,
जंग(युद्ध)-स्त्री०	जातपाँत ,,	जुल्म—पु०	झनक ,,
ज़ंग(मुरचा)-पु०	जादू—पु०	जुलूस ,,	झपक ,,
ज़ंजीर-स्त्री०	जान—स्त्री०	जुहार—स्त्री०	झपट ,,
जकड़ ,,	जामुन पु०	जूँ ,,	झमक ,,
जख़्म—पु०	ज़ायक़ा-पु०	जूठन ,,	झलक ,,
जगत(चौतरा)-स्त्री०	जायदाद-स्त्री०	जूती पैज़ार ,,	झाँक ,,
जगह-स्त्री०	जाल-पु०	जेब—पु०	झाड़फूँक ,,
जड़ ,,	ज़िंदगी-स्त्री०	जेल ,,	झाड़बुहार ,,
ज़बान ,,	जिंस ,,	जेवर ,,	झाल—पु०
जमघट-पु०	ज़िक्र—पु०	जोंक-स्त्री०	झालर-स्त्री०
जमवट-स्त्री०	ज़िद-स्त्री०	जोखिम ,,	झिझक ,,
जमात ,,	ज़िरह ,,	जोत ,,	झिड़क-स्त्री०
ज़मानत ,,	ज़िल्द ,,	ज़ोम-पु०	झील ,,
ज़रिया-पु०	ज़िल्लत ,,	ज़ोर ,,	झुरमुट पु०
ज़रूरत-स्त्री०	जी—पु०	जोश ,,	झूठ ,,
जलन ,,	जीत—स्त्री०	जौहर ,,	झूम-स्त्री०
जहमत ,,	ज़ीन—पु०	झ	झूमक-पु०
	जीभ-स्त्री०	झंकार-स्त्री०	झूमर ,,

झूल स्त्री०
झेल ,,
झोंक ,,
झोल पु०

ट

टपक स्त्री०
टब ,,
टमटम स्त्री०
टसक ,,
टसर पु०
टहल स्त्री०
टाँक ,,
टाँग ,,
टाइप पु०
टाइमटेबुल,,
टाइमपीस-स्त्री
टाट—पु०
टान—स्त्री०
टाप ,,
टापू—पु०
टाल—स्त्री०
टालमटूल—स्त्री
टिकट—पु०
टीक—स्त्री०
टीका (तिलक) पु०
टीका(अर्थ)स्त्री
टीप—स्त्री०
टीस ,,
टूट ,,
टेंट ,,
टेंटें ,,
टेक ,,
टेनिस=पु०
टेबुल ,,
टेर—स्त्री०
टेलिग्राफ़—पु०
टेलिफ़ोन ,,
टेव—स्त्री०
टेसू—पु०
टैक्स ,,
टोक—स्त्री
टोल ,,
टोह ,,
ट्राम—स्त्री०
ट्रेन ,,

ठ

ठंढ—स्त्री०
ठंढक ,,
ठट्ठ—पु०
ठठोल ,,
ठनक-स्त्री०
ठमक ,,
ठसक ,,
ठाँव-पु०,,
ठाट ,,
ठाटबाट—पु०
ठान—स्त्री०
ठूँठ—पु०
ठेक—स्त्री०
ठेलाठेल ,,
ठेस ,,
ठोंक ,,
ठोकर ,,
ठोर—पु०
ठौर ,,

ड

डंक—पु०
डंठल ,,
डंड ,,
डंस ,,
डकार ,,
डग ,,
डपट—स्त्री०
डफ—पु०
डमरू ,,
डाँट—स्त्री०
डाँड़—पु०
डाक—पु०
डाट—स्त्री०
डाढ़ ,,
डाम—पु०
डाल—स्त्री०
डाह ,,
डींग ,,
डीठ ,,
डील—पु०
डीह ,,

डेस्क—पु०
डोर—स्त्री०
डोल—पु०
ड्राइंग—स्त्री०
ड्रिल ,,

ढ

ढाढ़स—पु०
ढाल—स्त्री०
ढील ,,
ढूँढ़ ,,
ढेर—पु०
ढेलवाँस—स्त्री०
ढोंग—पु०
ढोल ,,
ढोलक—स्त्री०

त

तंबाकू—पु०
तंबीह—स्त्री०
तंबू—पु०
तक़दीर—स्त्री०
तकरार ,,
तक़रीर ,,
तकलीफ़ स्त्री०
तकसीम ,,
तजवीज़ ,,
तड़क ,,
तड़प ,,
तड़ित् ,,
ततैया ,,
तदबीर ,,
तनख्वाह ,,
तना—पु०
तनाव ,,
तपाक ,,
तफ़रीक—स्त्री०
तफ़रीह ,,
तफ़सील ,,
तबक़—पु०
तबीअत—स्त्री०
तमक—पु०
तमस्सुक ,,
तमीज़—स्त्री०
तरंग ,,
तरकश—पु०
तरकीब—स्त्री०
तरतीब ,,
तरद्दुद—पु०
तरफ़—स्त्री०
तरबूज़—पु०
तरस ,,
तरह—स्त्री०
तराज़ू—पु०
तराश स्त्री०
तरीक़ा—पु०
तर्ज़—स्त्री०
तलछट ,,
तलब ,,
तलवार ,,
तलाक़—पु०
तलाश—स्त्री०
तवाज़ा ,,
तशख़ीश ,,
तशरीफ़ ,,
तसकीन ,,
तसदीक ,,
तसवीर ,,
तह—स्त्री०
तहक़ीक़ ,,
तहक़ीक़ात ,,
तहज़ीब ,,
तहरीर ,,
तहवील ,,
तहसील
ताँत ,,
ताईद ,,
ताक ,,
ताक़(ताखा)पु०
ताकझाँक स्त्री०
ताक़त ,,
ताकीद ,,
तादाद ,,
तार—पु०
तारीख़—स्त्री०
तारीफ़ ,,
तालीम ,,
तावीज़ पु०
ताश ,,
तासीर स्त्री०

तिजारत स्त्री०
तीज ,,
तीतर पु०
तीर ,,
तुक स्त्री०
तुषार पु०
तुहिन ,,
तूत ,,
तूफ़ान ,,
तेग़—स्त्री०
तेज़ाब—पु०
तोंद—स्त्री०
तोड़—पु०
तोप—स्त्री०
तोबा ,,
तोहफ़ा—पु०
तोहमत—स्त्री०
तौक़—पु०
तौल ,,

थ

थकान—स्त्री०
थप्पड़—पु०
थर्मामीटर—पु०
थाक ,,
थाप—स्त्री०
थाल—पु०
थाह—स्त्री०
थूक — पु०
थूथन ,,
थूहर ,,
थोक ,,

द

दंगल—पु०
दख़ल ,,
दग़ा—स्त्री०
दतुवन ,,
दफ़ा ,,
दफ़्तर—पु०
दबक—स्त्री०
दमक ,,
दमकल ,,
दर— पु०
दरगाह—स्त्री०
दरबार—पु०
दराज़—स्त्री०
दरार—स्त्री०
दरिया—पु०
दलदल—स्त्री०
दलील ,,
दवा ,,
दवात ,,
दस्त—पु०
दस्तावेज़—स्त्री०
दस्तूर—पु०
दहल—स्त्री०
दहलीज़ ,,
दहशत ,,
दहाड़ ,,
दही—पु०
दहेज ,,
दाँत ,,
दाख—स्त्री०
दाग़—पु०
दाद—स्त्री०
दाद—स्त्री०
दाब ,,
दारा ,,
दारू—स्त्री०
दाल ,,
दालमोठ ,,
दालान—पु०
दाँव ,,
दावन—स्त्री०
दावात ,,
दिक्क़त ,,
दिहान ,,
दीदा ,,
दीमक ,,
दीया—पु०
दीवट—स्त्री०
दीवार ,,
दुआ ,,
दुकान ,,
दुत्कार ,,
दुनियाँ ,,
दुविधा ,,
दुम ,,
दुलार पु०
दूज—स्त्री०

दूब स्त्री०
दूर ,,
दूरबीन ,,
देख ,,
देखमाल ,,
देखरेख ,,
देन ,,
देर ,,
देह ,,
देहात ,,
दोपहर ,,
दोहद ,,
दोहर ,,
दोहा—पु०
दौड़—स्त्री०
दौड़धूप ,,
दौड़ान ,,
दौलत ,,

ध

धड़क—स्त्री०
धड़कन ,,
धड़धड़ स्त्री०
धत ,,
धनतेरस ,,
धनिया—पु०
धमधम—स्त्री०
धमक ,,
धरन ,,
धरोहर ,,
धाक ,,
धातु ,,
धाय ,,
धार (धारा),,
धार (वर्षा)-पु०
धिक्कार—स्त्री०
धुंध ,,
धुन ,,
धूप ,,
धूमधाम ,,
धूल ,,
धोवन—पु०
धौंक—स्त्री०
धौल ,,

न

नक़ल—स्त्री०
नकसीर ,,
नकाब ,,
नकेल ,,
नज़र ,,
नज़ाकत-स्त्री०
नज़ीर ,,
नथ ,,
नफरत ,,
नफ़ासत ,,
नब्ज़ ,,
नमाज़ ,,
नयन—पु०
नरिया ,,
नल ,,
नशा ,,
नश्तर ,,
नस—स्त्री०
नसीब-पु०
नसीहत-स्त्री०
नहर ,,
नाँद स्त्री०
नाक ,,
नाखून-पु०
नागरी-स्त्री०
नाप ,,
नाल(डंठल),,
नाल(घोड़े का) पु०
नालिश—स्त्री०
नाव ,,
नाशपाती ,,
नाश्ता—पु०
नास-स्त्री०
नासूर—पु०
निंब—स्त्री०
निकास-पु०
निखार ,,
निगाह-स्त्री०
निचोड़-पु०
निछावर-स्त्री०
निनावाँ-पु०
निब-स्त्री०

निबटेरा—पु०
निबाह ,,
निवार-स्त्री०
निशाना-पु०
निसबत—स्त्री०
निहार—पु०
नींद—स्त्री०
नीड़—पु०
नींबू ,,
नीम ,,
नीयत—स्त्री०
नील—पु०
नीवँ-स्त्री०
नुक़्ता-पु०
नुमाइश-स्त्री०
नेग—पु०
नेजा ,,
नैहर ,,
नोक—स्त्री०
नोकझोंक ,,
नोचखसोट ,,
नोट—पु०
नोटिस-स्त्री०
नौबत ,,

प

पंख—पु०
पंगत—स्त्री०
पंचायत ,,
पंछी—पु०
पंप ,,
पकड़—स्त्री०
पकड़धकड़ ,,
पकवान-पु०
पक्षी ,,
पख-स्त्री०
पखावज ,,
पखेरू-पु०
पखेव ,,
पगार ,,
पचपच-स्त्री०
पच्चर ,,
पछतावा-पु०
पछाड़-स्त्री०
पटकन ,,
पटकान-स्त्री०
पटपट ,,
पड़त ,,
पड़ाव—पु०
पड़ोस ,,
पतंग ,,
पत—स्त्री०
पतझड़ ,,
पतवार ,,
पताका ,,
पत्तर—पु०
पत्तल—स्त्री०
पनघट-पु०
पनसाल—स्त्री०
पनीर—पु०
पबलिक—स्त्री०
परंपरा ,,
परकार पु०
परख—स्त्री०
परचून-पु०
परवरिश-स्त्री०
पर्वाह ,,
पलक—स्त्री०
पलटन ,,
पलस्तर-पु०
पलान ,,
पशम—स्त्री०
पसंद ,,
पसर—पु०
पसोपेश ,,
पहँसुल—स्त्री०
पहचान ,,
पहल—पु०
पहलू ,,
पहुँच—स्त्री०
पाँक—पु०
पांशु—स्त्री०
पाइप—पु०
पाउडर ,,
पाग(पगड़ी)स्त्री०
पाग(शीरा)पु०
पाछ—स्त्री०
पाजेब ,,
पाटन ,,

पाड़—पु०
पानदान „
पानी „
पापड़ „
पायंदाज—पु०
पायल—स्त्री०
पायस „
पार्क—पु०
पार्लमेंट—स्त्री०
पासल—पु०
पालिश—स्त्री०
पावस „
पासंग—पु०
पासबुक—स्त्री०
पिक—पु०
पिन—स्त्री०
पिपरमिंट—पु०
पिस्ता—पु०
पिस्तौल—स्त्री०
पिस्सू—पु०
पीक—स्त्री०
पीठ „

पीतल—पु०
पीनक—स्त्री०
पीनस—पु०
पीप—स्त्री०
पीब „
पीर „
पुआल—पु०
पुकार—स्त्री०
पुचकार „
पुट—पु०
पुड़िया—स्त्री०
पुरइन—स्त्री०
पुल—पु०
पुलक „
पुलटिस—स्त्री०
पुलिस „
पुस्त „
पुश्तैन „
पूँछ „
पूनो „
पेंग „
पेंशन „

पेच—पु०
पेचकस „
पेचिश—स्त्री०
पेंसिल „
पेशकब्ज़ „
पेशबंद—पु०
पेशवाज़—स्त्री०
पेशाब—पु०
पैंठ स्त्री०
पैकेट—पु०
पैग़ाम „
पैठ—स्त्री०
पैदाइश „
पैदावार „
पैमक „
पैमाइश „
पोर „
पोल „
पोशाक „
पोस—पु०
पोस्टेज—स्त्री०
पोस्त—पु०

पोस्तीन—पु०
पौ—स्त्री०
पौद „
प्यास „
प्रतिपद् „
प्लीहा „
प्लेग—पु०
प्लेटफार्म „

फ

फंड—पु०
फंद „
फ़ख्र „
फगुनहट—स्त्री०
फ़जर „
फ़ज़ल—पु०
फ़जीहत—स्त्री०
फटकन „
फटकार „
फटफट „
फड़क „
फ़तह „
फ़न—पु०

फबन–स्त्री०	फाटक पु०	फेंट—स्त्री०	बख्शिश–स्त्री०
फरक ,,	फाड़न-स्त्री०	फेर—पु०	बगल ,,
फ़रक़–पु०	फ़ातिहा–पु०	फेहरिस्त-स्त्री०	बगावत ,,
फरमाइश स्त्री०	फ़ानूस ,,	फ़ैर ,,	बघार–पु०
फरमान ,,	फाल-स्त्री०	फ़ैशन–पु०	बचत—स्त्री०
फ़रागत ,,	फ़िक्र ,,	फोटो ,,	बजट ,,
फ़रियाद ,,	फिटन ,,	फोटोग्राफ़–पु०	बटन ,
फ़रेब—पु०	फ़ितूर—पु०	फ़ौज-स्त्री०	बटेर ,,
फ़रोख्त–स्त्री०	फ़िराक़ ,,	फ़ौलाद-पु०	बड़बड़ ,,
फर्ज़—पु०	फिसलन-स्त्री०	**ब**	बतख़ ,,
फ़र्द-स्त्री०	फ़ीस ,,	बंदनवार–पु०	बदान ,,
फ़र्श ,,	फुटनोट ,,	बंदरगाह ,,	बदौलत ,,
फ़सल ,,	फुटपाथ–पु०	बंदिश–स्त्री०	बनात ,,
फ़साद—पु०	फुनगी–स्त्री०	बंदूक़ ,,	बबूल–पु०
फ़स्द—स्त्री०	फुप्फुस–स्त्री०	बंधक—पु०	बम ,,
फ़हम ,,	फुफकार-पु०	बंधन ,,	बमचख़-स्त्री०
फहरान ,,	फ़ुर्सत–स्त्री०	बंधेज ,,	बयार ,,
फाँक ,,	फुलेल-पु०	बकलस ,,	बरकत ,,
फाँस ,,	फुहार—स्त्री०	बकवास स्त्री०	बरदाश्त ,,
फ़ाइल ,,	फुहारा—पु०	बकोट ,,	बर्नेत ,,
फ़ाख़्ता ,,	फूँक-स्त्री०	बखान–पु०	बरसाइत ,,
फाग—पु०	फूट ,,	बख्तर ,,	बरसात ,,

बरात—स्त्री०
बर्फ़ ,,
बलगम–पु०
बला–स्त्री०
बलैया ,,
बहस ,,
बहार ,,
बहुतायत ,,
बाँग ,,
बाँब ,,
बाँह ,,
बाइबिल ,,
बागडोर ,,
बाढ़ ,,
बात ,,
बान ,,
बाबत ,,
बायकाट–पु०
बायन ,,
बारात–स्त्री०
बारिश ,,
बारूद ,,

बालिश–स्त्री०
बालिश्त—पु०
बालू ,,
बास ,,
बिगाड़ ,,
बिगुल ,,
बिछावन ,,
बिछुड़न–स्त्री०
बिसात ,,
बिस्कुट पु०
बिस्तर ,,
बिहिश्त–स्त्री०
बीट ,,
बीन ,,
बुंद ,,
बुखार–पु०
बुढ़ापा ,,
बुनियाद–स्त्री०
बुलबुल ,,
बुलाक पु०
बूँद–स्त्री०
बू ,,

बूझ—स्त्री०
बूट—पु०
बेंच–स्त्री०
बेंट ,,
बेंत—पु०
बेग ,,
बेल(फल),,
बेल(लता)स्त्री०
बेलन–पु०
बेलपात ,,
बेला(फूल) ,,
बेसन ,,
बेहला ,,
बैठक–स्त्री०
बोझ–पु०
बोतल–स्त्री०
बोर–प०
बोड ,,
बोल ,,
बोलचाल–स्त्री०
बौछार ,,
बौर–पु०

ब्यालू—प०
ब्योंत–स्त्री०
ब्रश–प०

भ

भंडार–प०
भँवर ,,
भगंदर–स्त्री०
भगल–पु०
भचक–स्त्री०
भजन–पु०
भड़क—स्त्री०
भड़भड़ ,,
भड़सार ,,
भनक ,,
भभक ,,
भभूत ,,
भरमार ,,
भलमनसाहत ,,
भाँग ,,
भाँज ,,
भाँवर ,,
भात—पु०

भाप—स्त्री०
भायप—पु०
भार ,,
भिक्षाटन ,,
भिड़—स्त्री०
भीख ,,
भीड़ ,,
भीड़भाड़ ,,
भीत ,,
भुगत ,,
भुगतान—पु०
भुजबंद ,,
भुरकुस ,,
भूकंप ,,
भूख—स्त्री०
भूचाल—पु०
भूडोल ,,
भूल—स्त्री०
भेंट ,,
भेड़ ,,
भेड़िया—पु०
भेद ,,
भेषज—पु०
भोज ,,
भोर ,,
भौं—स्त्री०
भौंह ,,

म

मंच—पु०
मंजन ,,
मंडप ,,
मंदिर ,,
मंसब ,,
मंशा—स्त्री०
मक़दूर—पु०
मकोय—स्त्री०
मक्खन—पु०
मख़मल स्त्री०
मचल—स्त्री०
मचान ,,
मच्छड़ पु०
मज़मून ,,
मजलिस—स्त्री०
मज़ाक़—पु०
मजाल—स्त्री०
मजीठ ,,
मझधार ,,
मटक ,,
मटर—पु०
मटरगश्त—स्त्री०
मठ—पु०
मणि—स्त्री०
मतलब—पु०
मदक—स्त्री०
मदद ,,
मदिर ,,
मधु—पु०
मनकूला—स्त्री०
मनमुटाव—पु०
मनसा—स्त्री०
मनीआर्डर—पु०
मन्नत—स्त्री०
मरजाद ,,
मरम्मत ,,
मरहम—पु०
मरोड़ ,,
मलमल—स्त्री०
मलहम—पु०
मलामत—स्त्री०
मलाल—पु०
मलियामेट ,,
मवाद ,,
मवेशी ,,
मशक़्क़त—स्त्री०
मशाल ,,
मशीन ,,
मसक ,,
मसजिद ,,
मसनद ,,
मसल ,,
मसूर—पु०
मस्तूल ,,
महक—स्त्री०
महफ़िल ,,
महसूल पु०
महाल ,,
महावर ,,
माँग—स्त्री०

मोँड़—पु०
माँद—स्त्री०
मात ,,
मातम—पु०
माप—स्त्री०
मार ,,
मारकाट ,,
मारकीन ,,
मार्फ़त ,,
मालियत ,,
मालिश ,,
मिक़्दार ,,
मिठास ,,
मिन्नत ,,
मिर्च ,,
मिलान—पु०
मिलाप ,,
मिल्कियत-स्त्री०
मिल्लत ,,
मिसाल ,,
मिहनत ,,
मींड ,,
मीटिंग—स्त्री०
मीनार ,,
मील—पु०
मुँडेर—स्त्री०
मुगदर—पु०
मुठभेड़—स्त्री०
मुद्दत ,,
मुराद ,,
मुरौवत ,,
मुलाक़ात ,,
मुलायमियत ,,
मुश्किल ,,
मुस्कान ,,
मुसीबत ,,
मुहब्बत ,,
मुहर ,,
मुहलत ,,
मूँग ,,
मूँछ ,,
मूँज ,,
मूत—पु०
मूसल ,,
मृदंग—पु०
मेखल—स्त्री
मेज़ ,,
मेड़—पु०
मेल ,,
मेह ,,
मेहराब—स्त्री०
मैदान—पु०
मैल—स्त्री०
मोच ,,
मोट ,,
मोटर—पु०
मोड ,,
मोती पु०
मोम ,,
मोयन ,,
मोरछल ,,
मोल ,,
मोहर—स्त्री०
मौसिम-पु०
म्यान—पु०

य

यक़ीन—पु०
याद—स्त्री०
यादगार ,,
याददाश्त ,,
यूनिवर्सिटी ,,

र

रंगत—स्त्री०
रंजिश ,,
रक़म ,,
रकाब ,,
रग ,,
रगड़ ,,
रज(धूल) ,,
रजत ,,
रज़ा ,,
रट ,,
रफ़्तार ,,
रबड़—पु०
रबी—स्त्री०
रवाज ,,

रश्मि—पु०
रसद्-स्त्री०
रस्म ”
रहन ”
रहम—पु०
राख-स्त्री०
राज़—पु०
रात—स्त्री०
रान ”
रामायण-पु०
राय—स्त्री०
राल ”
रास ”
राह ”
रिंग ”
रिआयत ”
रिआया ”
रिपोर्ट ”
रिमझिम ”
रियासत ”
रिवाज़—पु०
रिश्वत-स्त्री०

रिस—स्त्री०
रीझ ”
रीढ़ ”
रीम ”
रुख़सत ”
रूमाल-पु०
रूह-स्त्री०
रेंड़-पु०
रेख-स्त्री०
रेट-पु०
रेणु-स्त्री०
रेत-स्त्री०
रेल ”
रेलठेल ”
रेलपेल ”
रेलवे ”
रेशम-पु०
रेह—स्त्री०
रोक ”
रोकटोक ”
रोब-पु०
रौंद-स्त्री०

रौनक़—स्त्री०

ल

लंक-स्त्री०
लंगर—पु०
लंगूर ”
लँगोट—पु०
लकीर-स्त्री०
लगन ”
लगान—पु०
लगाम-स्त्री०
लचक ”
लज्ज़त ”
लट ”
लटक-स्त्री०
लट्टू—पु०
लड़-स्त्री०
लत ”
लताड़ ”
लथाड़ ”
लपक ”
लपट ”
लपेट ”

ललक—स्त्री०
ललकार ”
लल्लोचप्पो ”
लल्लोपत्तो ”
लशकर—पु०
लहर—स्त्री०
लाइन ”
लाख ”
लाग ”
लागत—स्त्री०
लात ”
लानत ”
लालच-पु०
लालटेन-स्त्री०
लाश ”
लाह ”
लियाक़त ”
लीक ”
लुत्फ़—पु०
लूक—स्त्री०
लूट ”
लेज़म ”

लेनदेन-पु०
लेप ,,
लेबुल ,,
लेस—स्त्री०
लोथ ,,
लोबान-पु०
लौ—स्त्री०

व

वंदनवार-स्त्री
वकालत ,,
वजह ,,
वसंत-पु०
वसीयत-स्त्री०
वस्तु ,,
वात—पु०
वायु—स्त्री०
वारंट—पु०
वार ,,
वारदात-स्त्री०
वारुणी ,,
वाहु ,,
विंदु—पु०
विजय—स्त्री०
विदा—स्त्री०
विद्युत् ,,
विनय ,,
विपद् ,,
विरह—पु०
विलाप ,,
वेला—स्त्री०
वोट—पु०
व्यालू—स्त्री०
व्यूह—पु०

श

शक्कर—स्त्री०
शक्ल ,,
शगल पु०
शतरंज—पु०
शपथ—स्त्री०
शबनम ,,
शमशेर ,,
शरण ,,
शरत् ,,
शरबत—पु०
शराब—स्त्री०
शरारत ,,
शर्त्त ,,
शर्म ,,
शहद—पु०
शहादत—स्त्री०
शाख ,,
शान ,,
शान शौकत ,,
शामत ,,
शिकन ,,
शिकस्त ,,
शिकार—पु०
शिनाख्त स्त्री०
शिविर—पु
शोर ,,
शोरिश—स्त्री०
शोहरत ,,
शौक़—पु०

स

संगत—स्त्री०
संडास-पु०
संतान पु०स्त्री०
संपद्—स्त्री०
सँभाल ,,
सकूनत ,,
सज ,,
सजधज ,,
सज़ा ,,
सटक ,,
सटकार ,,
सड़क ,,
सनक ,,
सनद ,,
सनाय ,,
सफ़र—पु०
सबक़ ,,
सबूत ,,
सब्र ,,
समीर ,,
सम्मेलन ,,
सरकार-स्त्री०
सहूलियत ,,
साँग ,,

साँझ—स्त्री०
साँस ,,
साँसत ,,
साइत ,,
साख ,,
साजिश—स्त्री०
साध ,,
सानी(समान) पु०
सामर्थ्य-पु०स्त्री
सिगरेट—पु०
सिड़—स्त्री०
सितार—पु०
सिफ़त—स्त्री०
सिफ़ारिश ,,
सिरपेंच—पु०
सिल—स्त्री०
सिलवट ,,
सिवार ,,
सींक ,,
सींग—पु०
सीख—स्त्री०

सीढ़ स्त्री०
सोध ,,
सीप—पु०
सुगंध—स्त्री०
सुदी ,,
सुध ,,
सुबह ,,
सुरंग ,,
सुराग़—पु०
सुलह ,,
सुहाग—पु०
सूँड़—स्त्री०
सूजन ,,
सूझ ,,
सूत—पु०
सूद ,,
सूरत—स्त्री०
सेंक ,,
सेंत ,,
सेंध ,,
सेज ,,
सेब—पु०

सेम—स्त्री०
सेव—पु०
सेवार—स्त्री०
सेहत ,,
सैन ,,
सैर ,,
सोहबत ,,
सोहर—पु०
सौंफ—स्त्री०
सौगंद ,,
सौग़ात ,,
स्पीच ,,
स्प्रिंग ,,
स्लेट ,,

ह

हँकार—स्त्री०
हक़ीक़त ,,
हजामत ,,
हठ ,,
हड़ताल ,,
हड़बड़ ,,

हद—स्त्री०
हरकत ,,
हरताल ,,
हरिस ,,
हर्रें ,,
हलचल ,,
हवस ,,
हवास—पु०
हाँक—स्त्री०
हाजत ,,
हाट ,,
हाय ,,
हार ,,
हार(माला) पु०
हाल ,,
हाल (पहिये की)—स्त्री०
हालत—स्त्री०
हिकमत ,,
हिचक ,,

हिज्जे—पु०	हींग—स्त्री०	हूक—स्त्री०	हैसियत—स्त्री०
हिफ़ाजत ,,	हुंकार—पु०	हूल ,,	होड़ ,,
हिम्मत ,,	हुकूमत—स्त्री०	हेमंत—पु०	होश—पु०
हिरासत ,,	हुज्जत—स्त्री०	हैकल—स्त्री०	हौंस ,,
हिलोर—पु०	हुलिया—पु०	हैरत ,,	हौज़—पु०

नोट—हिन्दी में स्त्रीलिंग-पुंलिंग संबंधी अपवाद रहित नियम बहुत थोड़े हैं। इस तरह के कुछ नियम यथास्थान दिये जा चुके हैं। उनके अतिरिक्त कुछ नियम ये हैं:—

(१) साधारणतः तकारान्त संज्ञाएँ (विशेषतः अरबी फ़ारसी की) स्त्रीलिंग होती हैं; जैसे, लात, रात, इत्यादि। अपवाद—मात, गात आदि।

(२) वे भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अन्त में 'ना' जोड़ कर क्रिया बनाई जा सकती है, साधारणतः स्त्रीलिंग होती हैं; जैसे, ठनक, बहक, इत्यादि।